<u>**प्रेस विज्ञप्ति**</u>

मुगल काल में हिंदी ने सर्वाधिक तरक्की की थी- प्रो. विजय बहादुर सिंह

सांची विश्वविद्यालय में हिंदी दिवस पखवाड़ा

- अमीर खुसरो के कारण ही हिंदी को बढ़ोतरी मिली- प्रो. सिंह
- 'हिंदी को पाली, संस्कृत और अन्य भारतीय भाषाओं के साथ मिलाकर पढ़ा जाए'
- उपनिषदों और भारतीय धार्मिक ग्रंथों के अनुवाद दाराशिकोह ने कराए थे- प्रो. सिंह

सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में भी हिंदी दिवस पखवाड़ा मनाया गया। रायसेन स्थित बारला अकादमिक परिसर में हिंदी दिवस के मौके पर हिंदी के विद्वान, साहित्यकार और लेखक प्रो. विजय बहादुर सिंह ने कहा कि मुगलों के दौर में ही हिंदी ने सर्वाधिक तरक्की की थी। उनका कहना था कि अमीर खुसरो ने खड़ी बोली के माध्यम से ही हमें हिंदी से वाकिफ कराया था।

'**हिंदी और उसकी प्रासंगिकता**' विषय पर प्रो. विजय बहादुर सिंह ने कहा कि हिंदी भाषा के स्तर को उठाना है तो हिंदी को पाली, संस्कृत और अन्य भारतीय भाषाओं के साथ मिलकर पढ़ाया जाना चाहिए। उनका कहना था कि स्कूलों और कॉलेजों में अन्य भाषाओं के साथ हिंदी को नहीं पढ़ाया जा रहा है इसलिए इसकी सुंदरता भी समाप्त होती जा रही है।

सांची विश्वविद्यालय के छात्रों को संबोधित करते हुए प्रो. सिंह ने कहा कि शोध के दृष्टिकोण से हिंदी को बचाने के लिए इसके साथ-साथ विभिन्न बोलियों को साथ मिलकर इन पर शोध करने की ज़रूरत है। उनका कहना था कि कार्यालयों, घरों टीवी-फिल्मों और साहित्य में उपयोग की जाने वाली भाषा को ही संयुक्त रूप से हिंदी कहा जा सकता है।

विश्वविद्यालय के डीन डॉ नवीन मेहता ने कहा कि जिस तरह के रोमन अंग्रेज़ी के अनुवादों के माध्यम से अंग्रेज़ी का भारतीयकरण किया गया उसी प्रकार से अन्य भारतीय भाषाओं के साथ मिलकर हिंदी का भी भारतीयकरण किया जा सकता है। विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के सहायक प्राध्यापक डॉ राहुल सिद्धार्थ ने कहा कि साहित्य की आत्मा ही भाषा है और भाषा से ही साहित्य की उत्पत्ति है...अगर हिंदी भाषा को नहीं बचाया जा सका तो 50 साल बाद हिंदी साहित्य भी विलुप्त हो जाएगा।

विश्वविद्यालय में 12-14 सितंबर तक आयोजित किए गए तीन दिवसीय कार्यक्रम के दौरान हिंदी भाषा से जुड़ी विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। इन प्रतियोगिताओं में छात्रों के अलावा कर्मचारी भी सम्मिलित हुए। इनमें स्वरचयित कविता, निबंध, पोस्टर और भाषण प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं, जिनमें 51 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया।

शनिवार, 15 सितंबर, 2018 Weekend पत्रिका रायसेन 12

सांची विश्वविद्यालय में हिंदी दिवस पखवाड़ा

मुगल काल में हिंदी ने सर्वाधिक तरक्की की थी : प्रो. विजय बहादुर

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
patrika.com

सांची. सांची बौद्ध एवं भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में भी हिंदी दिवस पखवाड़ा मनाया गया। रायसेन स्थित बारला अकादमिक परिसर में हिंदी दिवस के मौके पर हिंदी के विद्वान, साहित्यकार और लेखक प्रो. विजय बहादुर सिंह ने कहा कि मुगलों के दौर में ही हिंदी ने सर्वाधिक तरक्की की थी। उनका कहना था कि अमीर खुसरो ने खड़ी बोली के माध्यम से ही हमें हिंदी से वाकिफ कराया था।

हिंदी और उसकी प्रासंगिकता विषय पर उन्होंने कहा कि हिंदी भाषा के स्तर को उठाना है तो हिंदी को पाली, संस्कृत और अन्य भारतीय भाषाओं के साथ मिलकर पढ़ाया जाना चाहिए। उनका कहना था कि स्कूलों और कॉलेजों में अन्य भाषाओं के साथ हिंदी को नहीं पढ़ाया जा रहा है इसलिए इसकी सुंदरता भी समाप्त होती जा रही है।

विश्वविद्यालय के छात्रों को संबोधित करते हुए सिंह ने कहा कि शोध के दृष्टिकोण से हिंदी को बचाने के लिए इसके साथ-साथ विभिन्न बोलियों को साथ मिलकर इन पर शोध करने की ज़रूरत है। उनका

रायसेन. परिसर में लगाई प्रदर्शनी।

कहना था कि कार्यालयों, घरों टीवी, फिल्मों और साहित्य में उपयोग की जाने वाली भाषा को ही संयुक्त रूप से हिंदी कहा जा सकता है। डीन डॉ नवीन मेहता ने कहा जिस तरह के रोमन अंग्रेज़ी के अनुवादों के माध्यम से अंग्रेज़ी का भारतीयकरण किया गया, उसी प्रकार से अन्य भारतीय भाषाओं के साथ मिलकर हिंदी का भी भारतीयकरण किया जा सकता है। विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के सहायक प्राध्यापक डॉ राहुल सिद्धार्थ ने कहा कि साहित्य की आत्मा ही भाषा है और भाषा से ही साहित्य की उत्पत्ति है। अगर हिंदी भाषा को नहीं बचाया जा सका तो 50 साल बाद हिंदी साहित्य भी विलुप्त हो जाएगा। तीन दिवसीय कार्यक्रम के दौरान हिंदी भाषा से जुड़ी विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। इन प्रतियोगिताओं में छात्रों के अलावा कर्मचारी भी सम्मिलित हुए। इनमें स्वरचयित कविता, निबंध, पोस्टर और भाषण प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। जिनमें 51 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया।

नवोदय में भी मना हिंदी पखवाड़ा

बाड़ी. जवाहर नवोदय विधालय की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई द्वारा एक सितंबर से 15 सितंबर तक हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया जा रहा है। जिसमें भजन प्रतियोगिता में प्रथम वरुण व्यास, द्वितीय अनिकेत तिवारी एवं तृतीय स्थान दीपेश बरकरे ने प्राप्त किया। देश भक्ति गीत में प्रथम एवं तृतीय स्थान शिवालिक, उदयगिरी एवं नीलगिरी सदन के छात्रों ने प्राप्त किया। कहानी लेखन में समीक्षा, दीप्ति, कुमकुम ने प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त किया। विधालय प्राचार्य गीतिका शर्मा ने बताया हिंदी केवल भाषा मात्र नहीं अपितु 125 करोड़ भारतीयों की मातृभाषा है। इस अवसर पर रासेयो कार्यक्रम अधिकारी चन्द्रशेखर तिवारी, पुष्कर सूद, एपी मिश्रा, राजा मालवीय सहित समस्त शिक्षक एवं विधार्थी उपस्थित थे।

रायसेन जिला हरिभूमि 14

भोपाल, शनिवार 15 सितंबर 2018

सांची विश्वविद्यालय में मनाया हिंदी दिवस पखवाड़ा

मुगलकाल में हिंदी ने तरक्की की थी: प्रो. विजय

हरिभूमि न्यूज ⏭ रायसेन

सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में हिंदी दिवस पखवाड़ा मनाया गया। रायसेन स्थित बारला अकादमिक परिसर में हिंदी दिवस के मौके पर हिंदी के विद्वान, साहित्यकार और लेखक प्रो. विजय बहादुर सिंह ने कहा कि मुगलों के दौर में ही हिंदी ने सर्वाधिक तरक्की की थी। उनका कहना था कि अमीर खुसरो ने खड़ी बोली के माध्यम से ही हमें हिंदी से वाकिफ कराया था। सांची विश्वविद्यालय के छात्रों को संबोधित करते हुए प्रो. सिंह ने कहाकि शोध के दृष्टिकोण से हिंदी को बचाने के लिए इसके साथ-साथ विभिन्न

हिन्दी भाषा के विद्वान प्रो . विजय बहादुर सिंह ने बताया हिन्दी भाषा का महत्व।

बोलियों को साथ मिलकर इन पर शोध करने की जरूरत है। उनका कहना था कि कार्यालयों, घरों टीवी-फिल्मों और साहित्य में उपयोग की जाने वाली भाषा को ही संयुक्त रूप से हिंदी कहा जा सकता है।

विश्वविद्यालय के डीन डॉ. नवीन मेहता ने कहा कि जिस तरह के रोमन अंग्रेजी के अनुवादों के माध्यम से अंग्रेजी का भारतीयकरण किया गया उसी प्रकार से अन्य भारतीय भाषाओं के साथ मिलकर हिंदी का भी भारतीयकरण किया जा सकता है। विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के सहायक प्राध्यापक डॉ राहुल सिद्धार्थ ने कहा कि साहित्य की आत्मा ही भाषा है और भाषा से ही साहित्य की उत्पत्ति है। अगर हिंदी भाषा को नहीं बचाया जा सका तो 50 साल बाद हिंदी साहित्य भी विलुप्त हो जाएगा।

विश्वविद्यालय में 12-14 सितंबर तक आयोजित किए गए तीन दिवसीय कार्यक्रम के दौरान हिंदी भाषा से जुड़ी विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। इन प्रतियोगिताओं में छात्रों के अलावा कर्मचारी भी सम्मिलित हुए। इनमें स्वरचयित कविता, निबंध, पोस्टर और भाषण प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं, जिनमें 51 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया।

हिंदी पखवाड़ा के तहत प्रतियोगिताओं का आयोजन

बाड़ी। जवाहर नवोदय विद्यालय बाड़ी की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई द्वारा 1 सितंबर से 15 सितंबर तक हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया जा रहा है। जिसमें भजन प्रतियोगिता में प्रथम स्थान वरुण व्यास, द्वितीय स्थान अनिकेत तिवारी एवं तृतीय स्थान दीपेश बरकरे ने हासिल कर पुरस्कार प्राप्त किए। कहानी लेखन में समीक्षा, दीप्ति, कुमकुम ने प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त किया।

abhitak.news

STATE

सांची विश्वविद्यालय में हिंदी दिवस पखवाड़ा

Posted on September 14, 2018 by Virendra Sinha

दीपक कांकर

रायसेन 14 सितंबर ,अभीतक सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में भी हिंदी दिवस पखवाड़ा मनाया गया। रायसेन स्थित बारला अकादमिक परिसर में हिंदी दिवस के मौके पर हिंदी के विद्वान, साहित्यकार और लेखक प्रो. विजय बहादुर सिंह ने कहा कि मुगलों के दौर में ही हिंदी ने सर्वाधिक तरक्की की थी। उनका कहना था कि अमीर खुसरो ने खड़ी बोली के माध्यम से ही हमें हिंदी से वाकिफ कराया था।

'हिंदी और उसकी प्रासंगिकता' विषय पर प्रो. विजय बहादुर सिंह ने कहा कि हिंदी भाषा के स्तर को उठाना है तो हिंदी को पाली, संस्कृत और अन्य भारतीय भाषाओं के साथ मिलकर पढ़ाया जाना चाहिए। उनका कहना था कि स्कूलों और कॉलेजों में अन्य भाषाओं के साथ हिंदी को नहीं पढ़ाया जा रहा है इसलिए इसकी सुंदरता भी समाप्त होती जा रही है।

सांची विश्वविद्यालय के छात्रों को संबोधित करते हुए प्रो. सिंह ने कहा कि शोध के दृष्टिकोण से हिंदी को बचाने के लिए इसके साथ-साथ विभिन्न बोलियों को साथ मिलकर इन पर शोध करने की ज़रूरत है। उनका कहना था कि कार्यालयों, घरों टीवी-फिल्मों और साहित्य में उपयोग की जाने वाली भाषा को ही संयुक्त रूप से हिंदी कहा जा सकता है।

विश्वविद्यालय के डीन डॉ नवीन मेहता ने कहा कि जिस तरह के रोमन अंग्रेज़ी के अनुवादों के माध्यम से अंग्रेज़ी का भारतीयकरण किया गया उसी प्रकार से अन्य भारतीय भाषाओं के साथ मिलकर हिंदी का भी भारतीयकरण किया जा सकता है। विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के सहायक प्राध्यापक डॉ राहुल सिद्धार्थ ने कहा कि साहित्य की आत्मा ही भाषा है और भाषा से ही साहित्य की उत्पत्ति है....अगर हिंदी भाषा को नहीं बचाया जा सका तो 50 साल बाद हिंदी साहित्य भी विलुप्त हो जाएगा।

विश्वविद्यालय में 12-14 सितंबर तक आयोजित किए गए तीन दिवसीय कार्यक्रम के दौरान हिंदी भाषा से जुड़ी विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। इन प्रतियोगिताओं में छात्रों के अलावा कर्मचारी भी सम्मिलित हुए। इनमें स्वरचयित कविता, निबंध, पोस्टर और भाषण प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं, जिनमें 51 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया।

सांची विश्वविद्यालय में हिंदी दिवस पखवाड़ा

<u>प्रेस-विज्ञप्ति</u>

"आधुनिक परिप्रेक्ष्य में भारतीय दर्शन का लेखन" कार्यशाला

25 से 29 सितम्बर, 2018

साँची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विष्वविद्यालय के भारतीय दर्शन विभाग द्वारा "आधुनिक परिप्रेक्ष्य में भारतीय दर्शन का लेखन'' विषय पर दिनांक 25 सितम्बर से 29 सितम्बर तक एक पाँच दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया जा रहा है। यह कार्यशाला विष्वविद्यालय के अकादमिक परिसर, ग्राम बारला, जि. रायसेन में आयेजित की जा रही है। इस कार्यशाला का मुख्य उद्देष्य आधुनिक परिप्रेक्ष्य में उपयोगी एवं रचनात्मक दृष्टि से युक्त भारतीय दर्शन की नवीन अध्ययन-अध्यापन की सामग्री के निर्माण के लिए सुझाव एकत्रित करके इसकी भावी योजना तैयार करना है। ऐसा किया जाना इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि उपनिवेषवादी षासनकाल के दौरान लिखे भारतीय दर्शन के इतिहास-ग्रंथों में पष्चिमी मापदंडों के अनुरूप लेखन की षैली रही है। इनमें स्वतंत्र एवं रचनात्मक लेखन का अभाव रहा है।

इसके साथ ही पुरातत्व, इतिहास एवं मौलिक शास्त्रों के अनुशीलन आदि से प्राप्त नवीन शोधों पर आधारित नवीन ग्रंथों की आवष्यकता है। विज्ञान की अन्वेषणात्मक पद्धतियों के दर्शन में विनियोग से चिकित्सा, अधिगम और प्रबंधन के क्षेत्र में उपयोगी परिणाम प्राप्त किये जा सकते हैं। दर्शन में इस प्रकार के नवाचारी अभिक्रमयुक्त लेखन की आवष्यकता है। इस कार्य हेतु कार्यशाला के दौरान भारत भर से दर्शनशास्त्र के प्रतिष्ठित विद्वानों को व्याख्यान हेतु आमंत्रित किया गया है। इसमें विद्वानों एवं प्रतिभागियों सहित कुल 80 व्यक्ति शामिल होंगे। कार्यशाला का शुभारंभ 25 सितम्बर को किया जाएगा। भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद् नई दिल्ली के अध्यक्ष प्रो. सिद्धेश्वर भट्ट उद्घाटन समारोह के मुख्य वक्ता होंगे।

कार्यक्रम की अध्यक्षता विष्णुमोहन फॉउण्डेषन, चेन्नई के संस्थापक श्री हरिमोहन स्वामीजी करेंगे। भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद् नई दिल्ली के अध्यक्ष प्रो. अरविंद जम्खेडकर कार्यक्रम के मुख्य अतिथि रहेंगे। पाँच दिवसीय कार्यशाला के दौरान प्रतिदिन विभिन्न विषयों पर व्याख्यान एवं चर्चा आयोजित की जाएगी। कार्यशाला में सम्पन्न विमर्श के उपरांत निष्कर्ष रेखांकित करके आगामी कार्य की रूपरेखा हेतु संपादक मंडल की रचना की जाएगी। कार्यशाला का समापन समारोह दिनांक 29 सितम्बर को होगा। इसकी अध्यक्षता महामहिम राज्यपाल महोदया श्रीमती आनंदीबेन पटेल जी करेंगी। उनके द्वारा ही विश्वविद्यालय की इस विषय से सम्बंधित शोध-परियोजना का शुभारंभ किया जाएगा। प्रो. रजनीश कुमार शुक्ला, पदेन सचिव, भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद् नई दिल्ली समापन भाषण देंगे।

पत्रिका PLUS
25/09/2018

सांची बौद्ध भारतीय ज्ञान अध्ययन विवि

आधुनिक परिप्रेक्ष्य में भारतीय दर्शन पर करेंगे मंथन

भोपाल ◆ सांची बौद्ध भारतीय ज्ञान अध्ययन विवि के भारतीय दर्शन विभाग द्वारा आधुनिक परिप्रेक्ष्य में भारतीय दर्शन का लेखन विषय पर 25 से 29 सितंबर तक पांच दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया जा रहा है। यह कार्यशाला विवि के अकादमिक परिसर ग्राम बारला(रायसेन) में आयोजित की जा रही है। इस कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य आधुनिक परिप्रेक्ष्य में उपयोगी एवं रचनात्मक दृष्टि से युक्त भारतीय दर्शन की नवीन अध्ययन अध्यापन की सामग्री के निर्माण के लिए सुझाव एकत्रित करके इसकी भावी योजना तैयार करना है। ऐसा किया जाना इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि उपनिवेशवादी शासनकाल के दौरान लिखे भारतीय दर्शन के इतिहास ग्रंथों में पश्चिमी मापदंडों के अनुरूप लेखन की शैली रही है। इनमें स्वतंत्र एवं रचनात्मक लेखन का अभाव रहा है। कार्यशाला में दर्शनशास्त्र के प्रतिष्ठित विद्वानों को व्याख्यान के लिए आमंत्रित किया गया है। इसमें विद्वानों एवं प्रतिभागियों सहित कुल 80 व्यक्ति शामिल होंगे। भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद् नई दिल्ली के अध्यक्ष प्रो. सिद्धेश्वर भट्ट उद्घाटन समारोह के मुख्य वक्ता होंगे। कायक्रम की अध्यक्षता विष्णुमोहन फाउंडेशन चेन्नई के संस्थापक हरिमोहन स्वामी करेंगे। भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद् नई दिल्ली के अध्यक्ष प्रो. अरविंद जम्खेडकर कार्यक्रम के मुख्य अतिथि रहेंगे। कार्यशाला का समापन समारोह 29 सितंबर को होगा। इसकी अध्यक्षता राज्यपाल आनंदीबेन पटेल करेंगी।

दैनिक जागरण 25 सितम्बर, 2018

'आधुनिक परिप्रेक्ष्य में भारतीय दर्शन का लेखन' कार्यशाला आज से

• लेक सिटी रिपोर्टर •

सांची बौद्ध भारतीय ज्ञान अध्ययन विवि के भारतीय दर्शन विभाग द्वारा 'आधुनिक परिप्रेक्ष्य में भारतीय दर्शन का लेखन' विषय पर आज 25 सितम्बर से 29 सितम्बर तक एक पांच दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया जा रहा है। इस कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य आधुनिक परिप्रेक्ष्य में उपयोगी एवं रचनात्मक दृष्टि से युक्त भारतीय दर्शन की नवीन अध्ययन-अध्यापन की सामग्री के निर्माण के लिए सुझाव एकत्रित करके इसकी भावी योजना तैयार करना है। ऐसा किया जाना इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि उपनिवेशवादी शासन काल के दौरान लिखे भारतीय दर्शन के इतिहास-ग्रंथों में पश्चिमी मापदंडों के अनुरूप लेखन की शैली रही है। इनमें स्वतंत्र एवं रचनात्मक लेखन का अभाव रहा है।

विभिन्न विषयों पर व्याख्यान व चर्चा : कार्यशाला में शुभारंभ 25 सितम्बर को किया जाएगा। भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद् नई दिल्ली के अध्यक्ष प्रो. सिद्धेश्वर भट्ट उद्घाटन समारोह के मुख्य वक्ता होंगे। कार्यक्रम की अध्यक्षता विष्णुमोहन फाउडेशन, चैन्नई के संस्थापक हरिमोहन स्वामीजी करेंगे। भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद् नई दिल्ली के अध्यक्ष प्रो. अरविंद जम्खेडकर कार्यक्रम के मुख्य अतिथि रहेंगे। पांच दिवसीय कार्यशाला के दौरान प्रतिदिन विभिन्न विषयों पर व्याख्यान एवं चर्चा आयोजित की जाएगी। कार्यशाला में सम्पन्न विमर्श के उपरांत निष्कर्ष रेखांकित करके आगामी कार्य की रूपरेखा हेतु संपादक मंडल की रचना की जाएगी। कार्यशाला का समापन समारोह 29 सितम्बर को होगा। इसकी अध्यक्षता राज्यपाल आनंदीबेन पटेल करेंगी। उनके द्वारा ही विवि की इस विषय से संबंधित शोध-परियोजना का शुभारंभ किया जाएगा। प्रो. रजनीश कुमार शुक्ला, पदेन सचिव, भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद् नई दिल्ली समापन भाषण देंगे।

BHOPAL, TUESDAY, 25/09/2018

city भास्कर

भारतीय दर्शन विषय पर कार्यशाला आज से

सिटी रिपोर्टर | सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन यूनिवर्सिटी के भारतीय दर्शन विभाग की ओर से आधुनिक परिप्रेक्ष्य में भारतीय दर्शन का लेखन विषय पर पांच दिवसीय कार्यशाला का आयोजन 25 सितंबर से होने जा रहा है। 29 सितंबर तक चलने वाली इस कार्यशाला में भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद नई दिल्ली के अध्यक्ष प्रो. सिद्धेश्वर भट्ट, विष्णु मोहन फॉउंडेशन चेन्नई के संस्थापक हरिमोहन स्वामी, प्रो. अरविंद जम्खेडकर आदि भी शामिल होंगे।

नवदुनिया

भोपाल, मंगलवार 25 सितंबर 2018

सांची विवि में भारतीय दर्शन पर कार्यशाला आज से

भोपाल। नवदुनिया रिपोर्टर

सांची बौद्ध भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय के भारतीय दर्शन विभाग विशेष कार्यशाला का आयोजन कर रहा है। 25 सितंबर से 'आधुनिक परिप्रेक्ष्य में भारतीय दर्शन का लेखन' विषय पर होने वाली कार्यशाला 29 सितंबर तक चलेगी। यह विवि के अकादमिक परिसर, ग्राम बारला, जि. रायसेन में आयोजित की जा रही है। कार्यशाला के दौरान भारत भर से दर्शनशास्त्र के प्रतिष्ठित विद्वान व्याख्यान के लिए शामिल हो रहे हैं। इसमें विद्वानों एवं प्रतिभागियों सहित कुल 80 व्यक्ति शामिल होंगे। भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद् नई दिल्ली के अध्यक्ष प्रो.सिद्धेश्वर भट्ट समारोह में पहले सत्र के मुख्य वक्ता होंगे।कार्यक्रम की अध्यक्षता विष्णुमोहन फॉउंडेशन, चेन्नई के संस्थापक हरिमोहन स्वामीजी करेंगे। भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद् नई दिल्ली के अध्यक्ष प्रो. अरविंद जम्खेडकर कार्यक्रम के मुख्य अतिथि रहेंगे। कार्यशाला का समापन समारोह दिनांक 29 सितम्बर को होगा। इसकी अध्यक्षता राज्यपाल आनंदीबेन पटेल करेंगी। उनके द्वारा ही विवि की इस विषय से सम्बंधित शोध-परियोजना का शुभारंभ किया जाएगा।

प्रो.सिद्धेश्वर भट्ट।

<u>प्रेस-विज्ञप्ति</u>

क्वांटम फिजिक्स और अनिश्चित्ता के सिद्धांत पर सांची विश्वविद्यालय में चर्चा

- सांची विश्वविद्यालय में 5 दिवसीय कार्यशाला का शुभारंभ
- यूरोपीय वैज्ञानिकों को मजबूर होकर पढ़ने पड़े थे वेदांत- प्रो. रामनाथ झा
- एक मंच पर इक्ठ्ठा हुए देश के विभिन्न दार्शिक और विद्वान
- चेतना, दर्शन और न्यूटन के यांत्रिकवाद पर गहन चर्चा
- भारतीय दर्शन में सूक्ष्मता और वैचारिक स्वतंत्रता है

सांची बौद्ध भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय के बारला अकादमिक परिसर में पांच दिवसीय कार्यशाला Writing Indian Philosophy in Modern Perspective (आधुनिक परिप्रेक्ष्य में भारतयीय दर्शन का लेखन) का शुभारंभ हो गया। उद्घाटन सत्र के उपरांत प्रारंभ हुए सत्र में **"वेदांत और भौतिकी"** विषय पर चर्चा की गई।

क्वान्टम फिज़िक्स(Quantum Physics)पर दिल्ली के जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग के प्रो. रामनाथ झा ने वेदांत के सिद्धांतों और भौतिकी के प्रतिपादित सिद्धांतों के बीच तुलना कर बताया कि यूरोप और अमेरिका के बड़े-बड़े वैज्ञानिकों को मजबूर होकर वेदांतों का अध्य़यन करना पड़ा। उनका कहना था कि जब वेदांतों के अनुवाद मैक्स म्यूलर और अन्य दार्शनिकों के माध्यम से यूरोप पहुंचे तो **नील बोहर, श्रोडिंगर, हाइज़िनबर्ग और व्हीलर जैसे भौतिक विज्ञानियों को उपनिषद के अनुवाद पढ़ने पड़े।**

इन वैज्ञानिकों के मन-मष्तिष्क में उठ रहे सवालों का जवाब उन्हें उपनिषदों के अनुवाद से मिला और उन्होंने और अधिक इन वेदांतों का अध्ययन किया। हाइज़िनबर्ग ने 'Theory of Uncertainty (अनिश्चित्ता का सिद्धांत)' दिया था और इस सिद्धांत को लेकर उनकी अलबर्ट आइंसटीन से काफी बहस भी हुआ करती थी। अनिश्चित्ता के सिद्धांत को वेदांत दर्शन में प्राथमिकता से उल्लेखित किया गया है

प्रथम सत्र के दूसरे वक्ता के रूप में प्रो. एम के श्रीधर ने **"भारतीय दर्शन में चेतना और आधुनिक विज्ञान"** विषय पर चर्चा की। उन्होंने बताया कि यूरोप के वैज्ञानिकों ने हमेशा से ही चेतना(आत्मा) को नकारा है। आइंसटीन ने हमेशा न्यूटन के सिद्धांतों का समर्थन किया और हाइज़िनबर्ग और नील बोहर के साथ उनके वैचारिक मतभेद रहे। प्रो. श्रीधर का कहना था कि भारतीय दर्शन में प्रारंभ

से ही चेतना को स्थान दिया गया था और बहुत से ऐसे सवाल हैं जिनका जवाब आज भी वैज्ञानिक नहीं दे पा रहे हैं। प्रो. श्रीधर का कहना था कि यूरोपीय वैज्ञानिक श्रोडिंगर ने भारतीय दर्शन का गहन अध्ययन करने के बाद कहा था कि भारतीय दर्शन में बेहद सूक्ष्मता और विचित्रता है यानि इसमें स्वतंत्र चिंतन मौजूद है।

कार्यशाला के प्रथम दिवस के दूसरे सत्र में धर्मशास्त्र के मीमांसा और पुरुषार्थ में आचार-विचार पर चर्चा की गई। कोलकाता विश्वविद्यालय के प्रो. दिलीप कुमार मोहंता ने महाभारत में नैतिकता एवं स्थितिक सत्यता पर चर्चा की। उन्होंने महाभारत में वर्णित छोटी-छोटी कहानियों के माध्यम से बताया कि कैसे एक समय में धर्म कही जाने वाली स्थिति को दूसरे समय अपधर्म कहा जा सकता है।

पुरुषार्थ एवं काव्यात्मक विकास के विषय पर प्रो. अनंत गीरि ने अपने विचार रखे। सांची विश्वविद्यालय में आयोजित कार्यशाला के दूसरे दिन प्रथम सत्र में पुणे विश्वविद्यालय की प्रो. शुभ्दा जोशी **"चाणक्य के अर्थशास्त्र"** और दूसरे सत्र में डॉ अरूण मिश्र **"संशय सूत्र की व्याख्या"** पर गहन चर्चा करेंगे। कल दोपहर बाद आयोजित होने वाले सत्रों में विश्व भारती शांतिनिकेतन के प्रो. सिराजुल इस्लाम **"सूफी मत और वेदांत"** तथा प्रो. रघुनाथ घोष **"वेदांत का समकालीन महत्व"** विषय पर अपने शोध पत्र प्रस्तुत करेंगे।

कार्यशाला के दौरान प्रत्येक सत्र के उपरांत एक प्रश्न उत्तर सत्र भी रखा जाता है जिसमें सभी सम्मिलित व्यक्ति विषय से संबंधित प्रश्नों को व्याख्याताओं से कर सकते हैं। कार्यशाला के उद्‌घाटन सत्र में आज भारतीय दर्शन अनुसंधान परिषद के अध्यक्ष प्रो. एस.आर भट्ट और भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद के पूर्व अध्यक्ष डॉ जमखेड़कर ने भी आपने व्याख्यान दिए। सांची विश्वविद्यालय के कुलपति आचार्य डॉ प्रो. यज्ञेश्वर एस. शास्त्री ने बताया कि Writing Indian Philosophy in Modern Perspective (आधुनिक परिप्रेक्ष्य में भारतयीय दर्शन का लेखन) का कार्य अगले 10 वर्षों में कई परियोजनाओं के माध्यम से किया जाना है। उद्‌घाटन सत्र में वि.वि के कुलसचिव श्री अदिति कुमार त्रिपाठी भी मौजूद थे।

BHOPAL, WEDNESDAY, 26/09/2018 . 18 city भास्कर

सांची बौद्ध भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में 'आधुनिक परिप्रेक्ष्य में भारतीय दर्शन का लेखन' विषय पर पांच दिवसीय कार्यशाला का पहला दिन

वेदांत के ज्ञान की ही पुष्टि अब कर रहा विज्ञान : प्रो. झा

सिटी रिपोर्टर | भोपाल

वेदांत में जीवन, सृष्टि और कॉस्मोलॉजी से जुड़ी जो बातें अनुभवों के आधार पर कही गई हैं, वे ही बातें 20वीं शताब्दी में आइंस्टीन की खोजों के बाद हमने सिद्ध पाईं। यह सारा ज्ञान हमारे पास वेदांत के माध्यम से पहले से ही था, साइंस के जरिए आज हम सिर्फ इसे आसान और समझ सकने वाली भाषा में दुनिया के सामने ला रहे हैं। यही वजह है कि 20वीं शताब्दी के बाद दुनियाभर के वैज्ञानिकों का रुझान उपनिषदों में बढ़ा है। सांची बौद्ध भारतीय ज्ञान अध्ययन विवि सांची में आधुनिक परिप्रेक्ष्य में भारतीय दर्शन का लेखन विषय पर मंगलवार से शुरू हुई पांच दिवसीय कार्यशाला में यह बात जेएनयू के प्रो. रामनाथ झा ने कही। वे वेदांत और फिजिक्स पर बोल रहे थे।

सांची बौद्ध भारतीय ज्ञान अध्ययन विवि में आयोजित इस कार्यशाला में शहर के फ्री लांस आर्टिस्ट सतीश ढोके हमारे साथ गए। उन्होंने यहां बताए गए वेदांत के ज्ञान को विज्ञान से रिलेट करते हुए इस तरह इमैजिन किया।

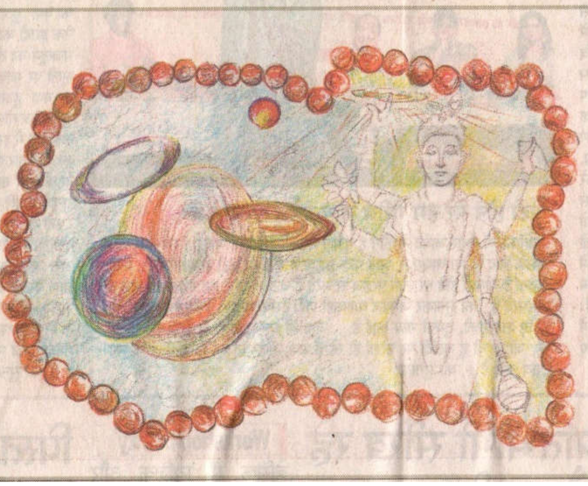

विज्ञान कहता है-
अलग-अलग गैलेक्सीज हैं, लेकिन इन गैलेक्सीज के पार्टिकल दूसरी गैलेक्सी के पार्टिकल को पहचानते हैं, वे आपस में जुड़े हुए हैं।

और गीता में यह
इसी बात को गीता में कृष्ण ने *ईशावास्यमिदम सर्वम्...* में कहा है। सृष्टि में सब कुछ एक माला के मोतियों की तरह भिन्न-भिन्न नजर आता है, लेकिन इसको जोड़ने वाला वही एक रूप ईश्वर है, जो हम सभी में है, लेकिन नजर नहीं आता।

महाभारत और रामायण आज भी सीख देने वाले ग्रंथ

प्रो. झा ने पर्यावरण के रिफ्रेंस में कहा- आज हम कहते हैं nature is nothing but my extention, जबकि कृष्ण ने गीता में यह बात कही है कि एवं प्रवर्तितं चक्रं नानुवर्तयतीह यः अघायुरिन्द्रियारामो मोघं पार्थ स जीवति...। प्रो. रामनाथ झा ने नील्स बोर, हिग्स बोसोन यानी गॉड पार्टिकल और वर्नर हैजनबर्ग के शोधों के उदाहरण से बताया कि कैसे वेदांत इन बातों को लाखों साल पहले से कहता आया है।

वेदांत में जो कहा गया, वही कुरान में भी लिखा है

शांतिनिकेतन से आए डॉ. मोहम्मद सिराजुल इस्लाम ने कहा- ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या जीवो ब्रह्मैव नापरः में हमारे वेदांत कह रहे हैं कि एक ही ब्रह्म है। वहीं कुरान में दूसरी भाषा में ला इलाहा इल्लल्लाह... के जरिए अल्लाह के एक ही होने की बात कही गई है। ईश्वर एक है और हम सब उसी ईश्वर के अंश हैं, यह बात वेदों के समय से ही व्याख्यायित है। कुरान, वेदांत और ईसाई सभी धर्मों में माना गया है कि दुनिया में इंसानों की शुरुआत आदम से हुई।

दैनिक जागरण
भोपाल, 26 सितम्बर 2018

यूरोपीय वैज्ञानिकों को मजबूर होकर पढ़ने पड़े थे वेदांत

क्वांटम फिजिक्स और अनिश्चिता के सिद्धांत पर सांची विश्वविद्यालय में चर्चा, एक मंच पर एकत्र हुए देश के विभिन्न दार्शनिक और विद्वान

● जागरण रिपोर्टर ●

सांची बौद्ध भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय के बारला अकादमिक परिसर में पांच दिवसीय कार्यशाला 'आधुनिक परिप्रेक्ष्य में भारतीय दर्शन का लेखन' का शुभारंभ मंगलवार को किया गया, जिसमें 'वेदांत और भौतिकी' विषय पर चर्चा की गई। क्वांटम फिजिक्स पर दिल्ली के जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग के प्रो. रामनाथ झा ने वेदांत के सिद्धांतों और भौतिकी के प्रतिपादित सिद्धांतों के बीच तुलना कर बताया कि यूरोप और अमेरिका के बड़े-बड़े वैज्ञानिकों को मजबूर होकर वेदांतों का अध्ययन करना पड़ा। उनका कहना था कि जब वेदांतों के अनुवाद मैक्स म्यूलर और अन्य दार्शनिकों के माध्यम से यूरोप पहुंचे तो नील बोहर, श्रोडिंगर, हाइजिनबर्ग और व्हीलर जैसे भौतिक विज्ञानियों को उपनिषद के अनुवाद पढ़ने पड़े। इन वैज्ञानिकों के मन-मस्तिष्क में उठ रहे सवालों का जवाब उन्हें उपनिषदों के अनुवाद से मिला और उन्होंने और अधिक इन वेदांतों का अध्ययन किया। हाइज़िनबर्ग ने 'Theory of Uncertainty (अनिश्चित्ता का सिद्धांत)' दिया था और इस सिद्धांत को लेकर उनकी अलबर्ट आइंसटीन से काफी बहस भी हुआ करती थी। अनिश्चित्ता के सिद्धांत को वेदांत दर्शन में प्राथमिकता से उल्लेखित किया गया है।

यूरोप के वैज्ञानिकों ने हमेशा से ही चेतना को नकारा

प्रथम सत्र के दूसरे वक्ता के रूप में प्रो. एम के श्रीधर ने 'भारतीय दर्शन में चेतना और आधुनिक विज्ञान' विषय पर चर्चा की। उन्होंने बताया कि यूरोप के वैज्ञानिकों ने हमेशा से ही चेतना(आत्मा) को नकारा है। आइंस्टीन ने हमेशा न्यूटन के सिद्धांतों का समर्थन किया और हाइजिनबर्ग और नील बोहर के साथ उनके वैचारिक मतभेद रहे।

प्रो. श्रीधर ने कहा कि भारतीय दर्शन में प्रारंभ से ही चेतना को स्थान दिया गया था और बहुत से ऐसे सवाल हैं जिनका जवाब आज भी वैज्ञानिक नहीं दे पा रहे हैं।

महाभारत में नैतिकता एवं स्थितिक सत्यता पर चर्चा

कार्यशाला के प्रथम दिवस के दूसरे सत्र में धर्मशास्त्र के मीमांसा और पुरुषार्थ में आचार-विचार पर चर्चा की गई। जिसमें कोलकाता विश्वविद्यालय के प्रो. दिलीप कुमार मोहंता ने महाभारत में नैतिकता एवं स्थितिक सत्यता पर चर्चा की। उन्होंने महाभारत में वर्णित छोटी-छोटी कहानियों के माध्यम से बताया कि कैसे एक समय में धर्म कही जाने वाली स्थिति को दूसरे समय अपधर्म कहा जा सकता है। पुरुषार्थ एवं काव्यात्मक विकास के विषय पर प्रो. अनंत गीरि ने अपने विचार रखे। सांची विश्वविद्यालय के कुलपति आचार्य डॉ प्रो. यज्ञेश्वर एस. शास्त्री ने बताया कि Writing Indian Philosophy in Modern Perspective (आधुनिक परिप्रेक्ष्य में भारतयीय दर्शन का लेखन) का कार्य अगले 10 वर्षों में कई परियोजनाओं के माध्यम से किया जाना है।

पत्रिका PLUS

ANCHOR सांची विश्वविद्यालय में 5 दिवसीय कार्यशाला शुरू

यूरोपियंस को मजबूर होकर पढ़ना पड़ा था वेदांत

पत्रिका PLUS रिपोर्टर

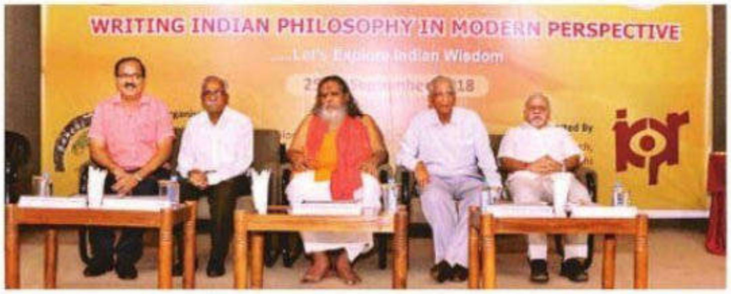

भोपाल ◆ सांची बौद्ध भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय के बारला अकादमिक परिसर में पांच दिवसीय कार्यशाला मंगलवार से शुरू हुई। इसमें आधुनिक परिप्रेक्ष्य में भारतीय दर्शन का लेखन और वेदांत और भौतिकी विषय पर चर्चा की गई। क्वांटम फिजिक्स पर दिल्ली के जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग के प्रो. रामनाथ झा ने वेदांत के सिद्धांतों और भौतिकी के प्रतिपादित सिद्धांतों के बीच तुलना कर बताया कि यूरोप और अमेरिका के बड़े-बड़े वैज्ञानिकों को मजबूर होकर वेदांतों का अध्ययन करना पड़ा। उनका कहना था कि जब वेदांतों के अनुवाद मैक्स म्यूलर और अन्य दार्शनिकों के माध्यम से यूरोप पहुंचे तो नील बोहर, श्रोडिंगर, हाइजनिबर्ग और व्हीलर जैसे भौतिक विज्ञानियों को उपनिषद के अनुवाद पढ़ने पड़े। इन वैज्ञानिकों के मन-मष्तिष्क में उठ रहे सवालों का जवाब उन्हें उपनिषदों के अनुवाद से मिला और उन्होंने और अधिक इन वेदांतों का अध्ययन किया। हाइजनिबर्ग ने अनिश्चित्ता का सिद्धांत दिया था और इस सिद्धांत को लेकर उनकी अलबर्ट आइंसटीन से काफी बहस भी हुआ करती थी। अनिश्चित्ता के सिद्धांत को वेदांत दर्शन में प्राथमिकता से उल्लेखित किया गया है।

भारतीय दर्शन में चेतना को स्थान

प्रथम सत्र के दूसरे वक्ता के रूप में प्रो. एमके श्रीधर ने भारतीय दर्शन में चेतना और आधुनिक विज्ञान विषय पर चर्चा की। उन्होंने बताया कि यूरोप के वैज्ञानिकों ने हमेशा से ही चेतना(आत्मा) को नकारा है। आइंसटीन ने हमेशा न्यूटन के सिद्धांतों का समर्थन किया और हाइजनिबर्ग और नील बोहर के साथ उनके वैचारिक मतभेद रहे। प्रो. श्रीधर का कहना था कि भारतीय दर्शन में प्रारंभ से ही चेतना को स्थान दिया गया था और बहुत से ऐसे सवाल हैं जिनका जवाब आज भी वैज्ञानिक नहीं दे पा रहे हैं।

पत्रिका Wed, 26 September 2018
epaper.patrika.com/c/32543520

DBPOST
26 SEPTEMBER | 2018

First session of 5-day-long workshop on Indian Philosophy begins at Sanchi University

'Vedanta read in US to know Quantum Physics'

Inaugural session was devoted to importance of Physics and Vedanta

Manish Chandra Mishra @dbpostnews

Bhopal: A 5-day-long workshop 'Writing Indian Philosophy in Modern Perspective' kick-started at Sanchi University of Buddhist-Indic Studies campus on Tuesday.

Philosophers and scholars gathered at the campus to discuss the relevance of Indian philosophy in the modern era. The inaugural session of the workshop was devoted to Physics and Vedanta.

In this session, experts across India emphasised the richness of Vedanta and its importance for modern science. Prof. Ramnath Jha from Sanskrit department of Jawahar Lal Nehru University, Delhi, said in his speech that Vedanta and Upanishadas are very relevant for modern science.

He claimed that physicists also had to read the concept of Vedanta to know more about quantum physics.

Vedanta has the answers

The Vedanta has all answers to complex theories of Quantum Physics, emphasised Jha. He added that Max Muller and other philosophers had translated the Vedanta and after that scientists like Niels Bohr, Erwin Schrödinger, Heisenberg, John Archibald Wheeler read the books to have an understanding of complex Quantum Physics.

"They found answers of many questions in our Upanishads. Heisenberg, who gave the theory of uncertainty, had argued with Albert Einstein over this theory and has mentioned the philosophy of Vedanta in his book." Jha added.

Theory of consciousness

Prof. MK Shridhar said that the western scientists have always denied the presence of consciousness (Atma) in any object of a living being. Albert Einstein had supported the concept of Newton and for that, he has ideological differences with Heisenberg and Niels Bohr. Indian philosophy has always believed in consciousness (Atma). Only Vedanta can answer these questions, he said.

Today's attraction

- **The second** day of the workshop will be devoted to the economic theories given by Chanakya. Prof. Shubda Jodhi of Pune university will conduct this session.
- **Prof Sirajul** Islam will be talking about the Sufism and Vedanta in his address on Wednesday

नवदुनिया भोपाल

सांची बौद्ध विश्वविद्यालय में 'आधुनिक परिप्रेक्ष्य में भारतीय दर्शन का लेखन' कार्यशाला शुरू

'पौधे और धातु में भी है चेतना'

सांची विवि में व्याख्यान देते हुए जेएनयू के संस्कृत विभाग के प्रोफेसर रामनाथ झा।

भोपाल। नवदुनिया रिपोर्टर

वेदांत हमेशा से ही यह क्लेम करता है कि वो एक्सपीरियंस बेस्ड है। ऋषियों के जो वाक्य हैं, वे सभी अनुभव पर आधारित है। जीवन या सृष्टि के बारे में जो भी कहा है वह सब कुछ अनुभव पर आधारित है। शुरुआती दिनों में जरूर यह कहा जा सकता है कि यह 'माइथोलॉजी' है। 28 सेंचुरी में जब मॉडर्न साइंस आई तो वैज्ञानिकों का अचानक वेदांत व उपनिषदों में रुझान बढ़ गया। ऐसे सैकड़ों वैज्ञानिक रहे, जिन्होंने उपनिषद को पढ़ना शुरू कर दिया। 1920 ईसवी के आसपास क्वांटम फिजिक्स का विकास हुआ। इस दौरान जो प्रयोग हुए और जो रिजल्ट्स मिले, वे सभी वेदांत में हजारों साल से उपलब्ध है। यह कहना है जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग के प्रो. रामनाथ झा का। वे सांची बौद्ध भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में मंगलवार से 'आधुनिक परिप्रेक्ष्य में भारतीय दर्शन का लेखन' कार्यशाला में 'वेदांत और भौतिकी' विषय पर बोल रहे थे।

तमस गुण है 'गॉड पार्टीकल'

सांकेतिक फोटो

सत्व, तमस और रजस यह तीन गुण माने जाते हैं। सत्व से नॉलेज, तमस फॉर्म क्रिएट करता है। रजस गुण, उन दोनों गुणों को एक्टिवेट करता है। अब एनर्जी का ऐसा कौन सा प्वाइंट आता है कि मासलेस से मास तैयार हो गया। वे तमस पार्टीकल के माध्यम से होता है, जिसे गॉड पार्टीकल का नाम दिया गया है, जो कि सिद्ध हो गया। कृष्ण गीता में कहते है, इस सृष्टि में सब कुछ ऐसा है जैसे मोती की माला। मोतियों के कारण माला का सूत्र दिखाई नहीं देता, लेकिन सभी मोती उसी सूत्र के जरिए जुड़े रहते है। चेतना सभी में है, जो सब को जोड़ कर रखता है।

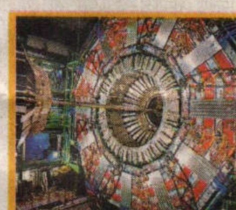

भारतीय दर्शन से सीखें 'दृष्टि'

कोलकाता विश्वविद्यालय के प्रो. दिलीप कुमार मोहंता ने महाभारत में नैतिकता एवं स्थितिक सत्यता पर चर्चा की। उन्होंने महाभारत में वर्णित छोटी-छोटी कहानियों के माध्यम से बताया कि कैसे एक समय में धर्म कही जाने वाली स्थिति को दूसरे समय अपधर्म कहा जा सकता है। उन्होंने कहा कि, हम अपने भारतीय दर्शन से 'दृष्टि' सीख सकते है। यदि हमारे पॉलिटीशियंस दृष्टिकोण में परिवर्तन कर लें तो कई समस्याओं का समाधान हो सकता है। जैसे चूहा और बिल्ली किसी एक समस्या के समय एक-दूसरे से मित्र की तरह व्यवहार कर लें, लेकिन समय गुजरने के बाद वे अपनी पुरानी दुश्मनी नहीं भूलते। बस हमारे साथ भी यही समस्या है। यह दर्शन भी है।

यूरोपीय वैज्ञानिकों ने नकारी है आत्मा

व्याख्यान में प्रो. एमके श्रीधर ने 'भारतीय दर्शन में चेतना और आधुनिक विज्ञान' विषय पर चर्चा की। उन्होंने बताया कि यूरोप के वैज्ञानिकों ने हमेशा से ही चेतना(आत्मा) को नकारा है। आइंसटीन ने हमेशा न्यूटन के सिद्धांतों का समर्थन किया और हाइजनबर्ग और नील बोर के साथ उनके वैचारिक मतभेद रहे। उन्होंने कहा कि भारतीय दर्शन में प्रारंभ से ही चेतना को स्थान दिया गया था। बहुत से ऐसे सवाल हैं जिनका जवाब आज भी वैज्ञानिक नहीं दे पा रहे हैं। प्रो. श्रीधर का कहना था कि यूरोपीय वैज्ञानिक श्रोडिंगर ने भारतीय दर्शन का गहन अध्ययन करने के बाद कहा था कि भारतीय दर्शन में बेहद सूक्ष्मता और विचित्रता है यानि इसमें स्वतंत्र चिंतन मौजूद है। पुरुषार्थ एवं काव्यात्मक विकास के विषय पर प्रो. अनंत गीरि ने अपने विचार रखे। भारतीय दर्शन अनुसंधान परिषद के अध्यक्ष प्रो. एसआर भट्ट और भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद के पूर्व अध्यक्ष डॉ. जमखेडकर ने भी आपने व्याख्यान दिए।

नई नहीं है न्यूक्लियर एनर्जी, उपनिषद की परंपरा में हजारों वर्ष पहले से चल रही है

उन्होंने कहा कि वर्नर हाइजनबर्ग जिनको कि क्वांटम फिजिक्स का पिता कहा जाता है, वे रवींद्रनाथ टैगोर के पास आए और उपनिषद को पढ़ा। इसके बाद उन्होंने कहा कि मेरी कई समस्याओं का समाधान मुझे उपनिषद में मिल गया। नोबल रॉबर्ट ओपेनहाइमर हमेशा अपनी जेब में गीता रखते थे। वे परमाणु बम के जनक रूप में विख्यात है। वे कहते हैं न्यूक्लियर एनर्जी की बात कोई नई बात नहीं है। उपनिषद की परंपरा में हजारों वर्ष पहले से चल रही है। हम सिर्फ इसे एग्जामप्लिफाइ कर रहे है। प्रोफेसर जॉन ए. व्हीलर कहते थे, मेरे मेंटॉर नील्स बोर (क्वांटम का एटॉमिक स्ट्रक्चर के लिए जाने जाते है) वे वेदांत-उपनिषद से गहरे तक जुड़े हुए थे। गॉड पार्टीकल (हिग्स बोसोन) पीटर हिग्स और सत्येंद्रनाथ बोस का नाम है। सत्येंद्रनाथ बोस, जगदीश चंद्र बोस के छात्र थे। जगदीशचंद्र बोस ने शोध करके सिद्ध किया था कि मनुष्यों के अलावा पौधे और मेंटल में भी चेतना है। 10 मई 1901 को यह शोध हुआ था। वेस्ट के लोगों का मानना रहा है कि मनुष्यों के अलावा किसी में चेतना नहीं है, लेकिन वेदांत कहता है कि सब में चेतना है फर्क यह है कि मनुष्य सबसे ज्यादा प्रतिक्रिया देता है।

पीपुल्स समाचार

भोपाल, बुधवार 26 सितंबर 2018

सांची बौद्ध भारतीय ज्ञान अध्ययन विवि में कार्यशाला

क्वांटम फिजिक्स और अनिश्चित्ता के सिद्धांत पर हुई चर्चा

यंग रिपोर्टर • आईएम भोपाल
Mobile no. 9827080406

सांची बौद्ध भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय के बारला अकादमिक परिसर में पांच दिवसीय कार्यशाला आधुनिक परिप्रेक्ष्य में भारतीय दर्शन का लेखन का मंगलवार को शुभारंभ हुआ। सत्र में वेदांत और भौतिकी विषय पर चर्चा की गई। क्वांटम फिजिक्स पर दिल्ली के जवाहरलाल

नेहरू विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग के प्रो. रामनाथ झा ने वेदांत के सिद्धांतों और भौतिकी के प्रतिपादित सिद्धांतों के बीच तुलना कर बताया कि यूरोप और अमेरिका के बड़े-बड़े वैज्ञानिकों को मजबूर होकर वेदांतों का अध्ययन करना पड़ा।

आज का आयोजन: 26 सितंबर को पुणे विश्वविद्यालय की प्रो. शुभ्दा जोशी चाणक्य के अथर्शास्त्र पर चर्चा करेंगी।

आइंस्टीन ने न्यूटन के सिद्धांतों का समर्थन किया

प्रो. एमके श्रीधर ने भारतीय दर्शन में चेतना और आधुनिक विज्ञान विषय पर बताया कि यूरोप के वैज्ञानिकों ने हमेशा से ही चेतना(आत्मा) को नकारा है। आइंसटीन ने हमेशा न्यूटन के सिद्धांतों का समर्थन किया।

धर्मशास्त्र में मीमांसा और पुरुषार्थ पर चर्चा

धर्मशास्त्र के मीमांसा और पुरुषार्थ पर कोलकाता विवि के प्रो. दिलीप कुमार मोहंता ने महाभारत में नैतिकता एवं स्थितिक सत्यता पर चर्चा की। उन्होंने महाभारत में वर्णित छोटी-छोटी कहानियों से बताया कि कैसे एक समय में धर्म कही जाने वाली स्थिति को दूसरे समय अपधर्म कहा जा सकता है।

भोपाल, बुधवार, 26 सितंबर 2018
www.dabangdunia.co

सांची विवि में हुआ कार्यशाला का शुभारंभ

दबंग रिपोर्टर ■ भोपाल

सांची बौद्ध भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय के बारला अकादमिक परिसर में पांच दिवसीय कार्यशाला (आधुनिक परिप्रेक्ष्य में भारतीय दर्शन का लेखन) का शुभारंभ हो गया। क्वान्टम फिजिक्स पर दिल्ली के जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग के प्रो. रामनाथ झा ने वेदांत के सिद्धांतों और भौतिकी के प्रतिपादित सिद्धांतों के

बीच तुलना कर बताया कि यूरोप और अमेरिका के बड़े बड़े वैज्ञानिकों को मजबूर होकर वेदांतों का अध्ययन करना पड़ा। प्रथम सत्र के दूसरे वक्ता के रूप में प्रो. एम के श्रीधर ने भारतीय दर्शन में चेतना और आधुनिक विज्ञान विषय पर चर्चा की। उन्होंने बताया कि यूरोप के वैज्ञानिकों ने हमेशा से ही चेतना (आत्मा) को नकारा है। आइंसटीन ने हमेशा न्यूटन के सिद्धांतों का समर्थन किया और हाइज़िनबर्ग और नील बोहर के साथ उनके वैचारिक मतभेद रहे। प्रो. श्रीधर का कहना था कि भारतीय दर्शन में प्रारंभ से ही चेतना को स्थान दिया गया था और बहुत से ऐसे सवाल हैं जिनका जवाब आज भी वैज्ञानिक नहीं दे पा रहे हैं। प्रो. श्रीधर का कहना था कि यूरोपीय वैज्ञानिक श्रोडिंगर ने भारतीय दर्शन का गहन अध्ययन करने के बाद कहा था कि भारतीय दर्शन में बेहद सूक्ष्मता और विचित्रता है यानि इसमें स्वतंत्र चिंतन मौजूद है।

भोपाल, बुधवार 26 सितंबर 2018

haribhoomi

यूरोपीयन वैज्ञानिकों ने मजबूर होकर पढ़े वेदांतः प्रो. रामनाथ

सांची विवि में पांच दिवसीय कार्यशाला शुरू

हरिभूमि न्यूज ▸▸ भोपाल

सांची बौद्ध भारतीय ज्ञान अध्ययन विवि के बारला अकादमिक परिसर में पांच दिवसीय कार्यशाला 'आधुनिक परिप्रेक्ष्य में भारतीय दर्शन का लेखन' का शुभारंभ मंगलवार को हुआ। पहले सत्र में 'वेदांत और भौतिकी' विषय पर चर्चा की गई। क्वान्टम फिजि क्स पर जेएनयू के संस्कृत विभाग के प्रो. रामनाथ झा ने वेदांत के सिद्धांतों और भौतिकी के प्रतिपादित सिद्धांतों के बीच तुलना कर बताया कि यूरोप और अमेरिका के बड़े-बड़े वैज्ञानिकों को मजबूर होकर वेदांतों का अध्यन करना पड़ा। उनका कहना था कि जब वेदांतों के अनुवाद मैक्स म्यूलर और अन्य दार्शनिकों के माध्यम से यूरोप पहुंचे तो नील बोहर, श्रोडिंगर, हाइजिनबर्ग और व्हीलर जैसे भौतिक विज्ञानियों को उपनिषद के अनुवाद पढ़ने पड़े।

भारतीय दर्शन में स्वतंत्र चिंतन मौजूद

प्रथम सत्र के दूसरे वक्ता के रूप में प्रो. एसके श्रीधर ने 'भारतीय दर्शन में चेतना और आधुनिक विज्ञान' विषय पर चर्चा की। उन्होंने बताया कि यूरोप के वैज्ञानिकों ने हमेशा से ही चेतना (आत्मा) को नकारा है। आइंसटीन ने हमेशा न्यूटन के सिद्धांतों का समर्थन किया और हाइजिनबर्ग और नील बोहर के साथ उनके वैचारिक मतभेद रहे। प्रो. श्रीधर का कहना था कि भारतीय दर्शन में प्रारंभ से ही चेतना को स्थान दिया गया था और बहुत से ऐसे सवाल हैं जिनका जवाब आज भी वैज्ञानिक नहीं दे पा रहे हैं।

भारतीय दर्शन में बेहद सूक्ष्मता

उनका कहना था कि यूरोपीय वैज्ञानिक श्रोडिंगर ने भारतीय दर्शन का गहन अध्ययन करने के बाद कहा था कि भारतीय दर्शन में बेहद सूक्ष्मता और विचित्रता है यानि इसमें स्वतंत्र चिंतन मौजूद है।

महाभारत में नैतिकता एवं स्थितिक सत्यता

दूसरे सत्र में धर्मशास्त्र के मीमांसा और पुरुषार्थ में आचार-विचार पर चर्चा हुई। कोलकाता विवि के प्रो. दिलीप कुमार मोहंता ने महाभारत में नैतिकता एवं स्थितिक सत्यता पर चर्चा की। उन्होंने महाभारत में वर्णित छोटी-छोटी कहानियों से बताया कि कैसे एक समय में धर्म कही जाने वाली स्थिति को दूसरे समय अपधर्म कहा जा सकता है। पुरुषार्थ एवं काव्यात्मक विकास के विषय पर प्रो. अनंत गीरि ने अपने विचार रखे।

दैनिक भास्कर

26-Sep-2018
रायसेन Page 1

अनुभव • सांची बौद्ध भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में आधुनिक परिप्रेक्ष्य में भारतीय दर्शन का लेखन विषय पर पांच दिवसीय कार्यशाला का पहला दिन

वेदांत के ज्ञान की ही पुष्टि विज्ञान अब सरल शब्दों में कर रहा है : प्रो. झा

भास्कर संवाददाता | रायसेन/भोपाल

वेदांत में जीवन, सृष्टि और कॉस्मोलॉजी से जुड़ी जो बातें अनुभवों के आधार पर कही गई हैं, वे ही बातें 20वीं शताब्दी में आइंस्टीन की खोजों के बाद हमने सिद्ध पाई। यह सारा ज्ञान हमारे पास वेदांत के माध्यम से पहले से ही था, साइंस के जरिए आज हम सिर्फ इसे आसान और समझ सकने वाली भाषा में दुनिया के सामने ला रहे हैं।

सांची बौद्ध भारतीय ज्ञान अध्ययन विवि सांची में आधुनिक परिप्रेक्ष्य में भारतीय दर्शन का लेखन विषय पर मंगलवार से शुरू हुई पांच दिवसीय कार्यशाला में यह बात जेएनयू के प्रो. रामनाथ झा ने कही। वे वेदांत और फिजिक्स पर बोल रहे थे।

कार्यशाला में भोपाल के फ्री लांस आर्टिस्ट सतीश ढोके दैनिक भास्कर साथ गए। उन्होंने यहां बताए गए वेदांत के ज्ञान को विज्ञान से रिलेट करते हुए इस तरह इमैजिन किया।

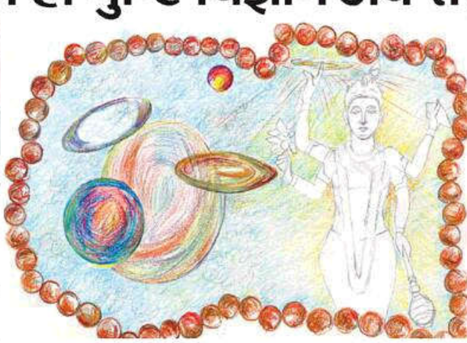

विज्ञान कहता है: अलग-अलग गैलेक्सीज हैं, पर इन गैलेक्सीज के पार्टिकल दूसरी गैलेक्सी के पार्टिकल को पहचानते हैं, वे आपस में जुड़े हुए हैं।

और गीता में यह :इसी बात को गीता में कृष्ण ने *ईशावास्यमिदम सर्वम्*... में कहा है। सृष्टि में सब कुछ एक माला के मोतियों की तरह भिन्न-भिन्न नजर आता है, लेकिन इसको जोड़ने वाला वही एक रूप ईश्वर है, जो हम सभी में है, लेकिन नजर नहीं आता।

महाभारत और रामायण आज भी सीख देने वाले ग्रंथ

प्रो. झा ने पर्यावरण के रिफ्रेंस में कहा- आज हम कहते हैं nature is nothing but my extention, जबकि कृष्ण ने गीता में यह बात कही है कि एवं प्रवर्तितं चक्रं नानुवर्तयतीह यः अघायुरिन्द्रियारामो मोघं पार्थ स जीवति...। प्रो. रामनाथ झा ने नील्स बोर, हिग्स बोसोन यानी गॉड पार्टिकल और वर्नर हैजनबर्ग के शोधों के उदाहरण से बताया कि कैसे वेदांत इन बातों को लाखों साल पहले से कहता आया है।

वेदांत में जो कहा गया, वहीं कुरान में भी लिखा है

शांतिनिकेतन से आए डॉ. मोहम्मद सिराजुल इस्लाम ने कहा- ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या जीवो ब्रह्मैव नापरः में हमारे वेदांत कह रहे हैं कि एक ही ब्रह्म है और उसके इतर दूसरा कोई नहीं। वहीं कुरान में दूसरी भाषा में ला इलाहा इल्लल्लाह... के जरिए अल्लाह के एक ही होने की बात कही गई है। इस्लाम धर्म के पहले प्रवर्तक पैगम्बर मोहम्मद के पिता का नाम अब्दुल्लाह था, जिसका अर्थ ही अल्लाह का सेवक है। ऐसे में यह कहना कि पैगम्बर मोहम्मद के बाद ही इस्लाम धर्म आया और लोग अल्लाह को मानने लगे यह गलत है। ईश्वर एक है और हम सब उसी ईश्वर के अंश हैं, यह वेदों के समय से ही व्याख्यायित है।

पञ्चदिवसीया कार्यशाला इतिहास दर्शनोपरि आश्रित्य उद्घाटिता जाता

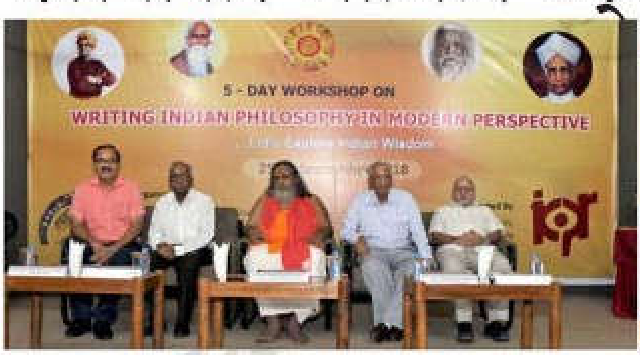

(विश्वस्य वृत्तान्तम्) रायसेन। साञ्ची बौद्ध-भारतीय ज्ञानाध्ययनविश्वविद्यालये पञ्चदिवसीया भारतीयदर्शन पुनर्लेखनकार्यशाला गते दिने उद्घाटिता बभूव। सार्धैदशवादने वि.वि. परिसरे मंगलदीपेन सह मांगलिक वैदिक प्रार्थनया कार्यक्रमः प्रारब्धः। भारतीय दार्शनिकानुसंधानपरिषदः अध्यक्षः प्रो. सिद्धेश्वर भट्टः कार्यशालायाः मुख्यातिथ्यं स्वीकृत्य स्वभाषणे एतत् निवेदितवान् यत् उपनिवेशवादीदर्शनेन भारतीयतायाः सत्यप्रयोगः सञ्जातः न वा इति परीक्षणस्य विषयः।

नास्तिकास्तिवादी दर्शनोपरि सर्वेषां ध्यानाकर्षणं कुर्वन् प्रो. भट्टः उक्तवान् यत् कौटिल्यस्य अर्थशास्त्रोपरि अद्यापि मिथ्याविश्वासः वर्तते। तस्य दूरीकरणं चावश्यकम्। चार्वाक् प्रणीतग्रन्थस्य चरकस्य नियमाः, योगादिनां मौलिकोद्देश्यमपि पुनः अनुशीलनीयम्। वास्तववादी दार्शनिकतत्त्वानां निरूपणकाले अयथा अपवादात्मकस्य निरूपणं च सर्वथा परित्यज्यं भवतु।

नास्तिकास्तिवादी दर्शनोपरि सर्वेषां ध्यानाकर्षणं कुर्वन् प्रो. भट्टः उक्तवान् यत् कौटिल्यस्य अर्थशास्त्रोपरि अद्यापि मिथ्याविश्वासः वर्तते। तस्य दूरीकरणं चावश्यकम्। चार्वाक् प्रणीतग्रन्थस्य चरकस्य नियमाः, योगादिनां मौलिकोद्देश्यमपि पुनः अनुशीलनीयम्। वास्तववादी दार्शनिकतत्त्वानां निरूपणकाले अयथा अपवादात्मकस्य निरूपणं च सर्वथा परित्यज्यं भवतु।

भारतीय इतिहासानुसंधान मण्डलस्य प्रमुखः प्रो. अरविन्द जाम्खेडकरः सम्मानितः मुख्यातिथिः रूपेण मञ्चासीनः आसीत्। प्रो. जाम्खेडकरः अकथयत् यत् वैदिक परम्परा वैदेशिकैः अपमिश्रिता, सेक्सपीयरेण सह कालिदासात् तुलना अपि निन्दनीया। चेन्नाईनगरस्य विष्णुमोहन संस्थानस्य संस्थापकः श्री हरिप्रसाद स्वामीजी उद्घाटनोत्सवे अध्यक्षतां कृतवान्। अस्मिन्नवसरे कुलपतिः आचार्यः प्रो. यज्ञेश्वर एस. शास्त्री, कुलसचिवः अजितकुमार त्रिपाठी अन्ये च महानुभावाः उपस्थिताः आसन्।

वेदान्त-पदार्थविज्ञानयोः मध्ये तुलनात्मकमध्ययनम्

(विश्वस्य वृत्तान्तम्) सांची। प्राचीने वैदिके साहित्ये वेदान्तस्य भूमिका अति महत्त्वपूर्णा यत्र आत्मनः परिचयादिविषये सविशेषं वर्णनं भवति।

तत्र आधुनिके पदार्थविज्ञाने अपि आत्मनः स्वरूपं न भिन्नः यत्र आणविकशक्त्याधारितायां महत्ता वर्णिता, वेदान्ते घट-पट-आत्मसु च चैतन्यात्मकता वर्णिता, जीवने आत्मतत्त्वोपरि सविशेषज्ञानाय प्राच्य-पाश्चात्य दर्शनयोः मध्ये तुलनात्मकमध्ययनं करणीयम्।

अस्मिन् विषये डॉ. रामनाथ झा सांची वि.वि. परिसरे पंचदिवसीय कार्यशालायां प्रथमसत्रे उक्तवान्। सः उक्तवान् यत् यदि सर्वमिदं खलु जगत् इति आप्तवाक्येन चिदात्मा, चैतन्यं वा एकाकारेण सार्वभौमिकं, सार्वकालिकं कथ्यते तत्र द्वैतवादस्य, अद्वैतवादस्य वा प्रश्नाः न स्युः।

राष्ट्रीय हिन्दी मेल

वर्ष-22 अंक- 333 www rashtriyahindimail.in भोपाल, बुधवार 26 सितंबर 2018 vijaydas@rashtriyahindimail.in पृष्ठ-12 मूल्य ₹ 3.50

यूरोपीय वैज्ञानिकों को मजबूर होकर पढ़ने पड़े थे वेदांत. प्रो. रामनाथ झा

क्वांटम फिजिक्स और अनिश्चितता के सिद्धांत पर सांची वि.वि में हुई चर्चा

रायसेन, 25 सितम्बर। मंगलवार को सांची बौद्ध भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय के बारला अकादमिक परिसर में पांच दिवसीय कार्यशाला आधुनिक परिप्रेक्ष्य में भारतयीय दर्शन का लेखन का शुभारंभ हो गया। उद्घाटन सत्र के उपरांत प्रारंभ हुए सत्र में श्वेदांत और भौतिकी विषय पर चर्चा की गई। क्वान्टम फिजिक्स दिल्ली के जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग के प्रो रामनाथ झा ने वेदांत के सिद्धांतों और भौतिकी के प्रतिपादित सिद्धांतों के बीच तुलना कर बताया कि यूरोप और अमेरिका के बड़े.बड़े वैज्ञानिकों को मजबूर होकर वेदांतों का अध्ययन करना पड़ा। उनका कहना था कि जब वेदांतों के अनुवाद मैक्स म्यूलर और अन्य दार्शनिकों के माध्यम से यूरोप पहुंचे तो नील बोहर, श्रोडिंगर, हाइजिनबर्ग और व्हीलर जैसे भौतिक विज्ञानियों को उपनिषद के अनुवाद पढ़ने पड़े।

इन वैज्ञानिकों के मन.मष्तिष्क में उठ रहे सवालों का जवाब उन्हें उपनिषदों के

अनुवाद से मिला और उन्होंने और अधिक इन वेदांतों का अध्ययन किया। प्रथम

सांची विश्वविद्यालय में 5 दिवसीय कार्यशाला का हुआ शुभारंभ

सत्र के दूसरे वक्ता के रूप में प्रो.एम के श्रीधर ने श्भारतीय दर्शन में चेतना और आधुनिक विज्ञान विषय पर चर्चा की। उन्होंने बताया कि यूरोप के वैज्ञानिकों ने हमेशा से ही चेतना आत्मा को नकारा है। आइंसटीन ने हमेशा न्यूटन के सिद्धांतों का समर्थन किया और हाइजिनबर्ग और नील बोहर के साथ उनके वैचारिक मतभेद रहे। प्रो.श्रीधर का कहना था कि भारतीय दर्शन में प्रारंभ से ही चेतना को स्थान दिया गया था और बहुत से ऐसे सवाल हैं जिनका जवाब आज भी वैज्ञानिक नहीं दे पा रहे हैं। कार्यशाला के दौरान प्रत्येक सत्र के उपरांत एक प्रश्न उत्तर सत्र भी रखा जाता है जिसमें सभी सम्मिलित व्यक्ति विषय से संबंधित प्रश्नों को व्याख्याताओं से कर सकते हैं। कार्यशाला के उद्घाटन सत्र में आज भारतीय दर्शन अनुसंधान परिषद के अध्यक्ष प्रो. एसआर भट्ट और भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद के अध्यक्ष डॉ अरविंद जमखेड़कर ने भी आपने व्याख्यान दिए। सांची विश्वविद्यालय के कुलपति आचार्य डॉ प्रो. यज्ञेश्वर एस.शास्त्री, कुलसचिव अदिति कुमार त्रिपाठी भी मौजूद थे।

<u>प्रेस-विज्ञप्ति</u>

वैश्विक स्तर पर आज भी प्रासंगिक है कौटिल्य और चाणक्य का अर्थशास्त्र दर्शन - प्रोफेसर शुभदा जोशी

- "कौटिल्य ने बुक कीपिंग, एकाउंट्स, ऑडिट और टैक्स पद्धति का भी वर्णन किया है"
- संशय से ही ज्ञान प्राप्त होता है- प्रोफेसर अरुण मिश्र
- चार्वाक और बौद्ध दर्शन में चेतना के विषय पर भी हुई चर्चा
- सूफी दर्शन और वेदान्त दर्शन की समानताओं पर भी की गई कार्यशाला

सांची बौद्ध भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में आधुनिक परिप्रेक्ष्य में भारतीय दर्शन का लेखन विषय पर आयोजित 5 दिवसीय कार्यशाला के दूसरे दिन चाणक्य और कौटिल्य के अर्थशास्त्र पर गहन चर्चा की गई। मुम्बई विश्वविद्यालय की प्रोफेसर शुभदा जोशी ने कहा कि आज के भारतीय और अन्तर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्यो में कौटिल्य और चाणक्य का अर्थशास्त्र पूरी तरह प्रासंगिक है। उनका कहना था कि कौटिल्य ने बुक कीपिंग(पंजी लेखन), एकाउंट्सका जिक्र किया गया है। (सम्परिक्षण)और ऑडिट (लेखा)

डॉक्टर जोशी का कहना था कि कौटिल्य का कहना है अगर राजा या शासक मात्र लोगों के तुष्टिकरण के लिए कार्य करने लगे जैसा की आज के राजनेता वोट के लिए करते हैं)), तो जनता को चाहिए कि ऐसे शासक को पद से हटा दे।

उनका कहना था कि कौटिल्य ने अपने अर्थशास्त्र में जंगल की संपत्ति से होने वाली आय, अधिकारियों की कार्यपध्दति, टैक्स सिस्टम, को बेहद स्पष्टता के साथ उल्लेखित किया है। डॉक्टर शुभदा जोशी का कहना था कि उस दौर का अर्थ शास्त्र व्यावहारिक दर्शन पर आधारित था।

कार्यशाला के दूसरे सत्र में संशय के विषय पर चर्चा की गई। भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद के पूर्व निदेशक डॉक्टर अरुण मिश्र ने कहा कि संशय से ही सही ज्ञान प्राप्त होता है और ये संशय ही जिज्ञासा को जन्म देता है। इसी सत्र में लखनऊ विश्वविद्यालय के प्रोफेसर के सी पांडेय ने चार्वाक दर्शन और बौद्ध दर्शन में चेतना (आत्मा) की अवधारण ा पर चर्चा की।

चार्वाक दर्शन के अनुसार शरीर में भौतिक परिस्तिथियों के कारण चेतना या ज्ञान निर्मित होती है और हमें जो भी अनुभव होते हैं वो आत्मा ही के अनुभव होते हैं। चार्वाक दर्शन कहता है कि आत्मा शरीर का ही गुण है और बौद्ध दर्शन ने इसका खंडन किया है। बौद्ध दर्शन का कहना है कि चेतना शरीर के बाहर से आती है।

विशाखापट्नम के अंदर विश्वविद्यालय के प्रोफेसर जॉर्ज विक्टर ने कहा कि भारतीय दर्शन में theology और दर्शन को अलग करना चाहिए तभी भारतीय दर्शन आगे बढ़ेगा और देश के दर्शन विषय के छात्रों को लाभ पहुंचेगा।

अंतिम सत्र में सूफी दर्शन और वेदान्त दर्शन के बीच भी चर्चा की गई। शांतिनिकेतन के प्रोफेसर सिराजुल इस्लाम ने कहा कि वेदान्त दर्शन के द्वैतवाद और अद्वैतवाद की सूफी दर्शन से समानता है।

इसी कड़ी में नाथ टैगौर के भारतीय दर्शन पर चर्चार को रवीन्द्रसितम्ब 27की जायेगी एवं आधुनिक भारतीय विचार पर भी गहन चिन्तन होगा। भोपाल के डॉ रहमान अली भारत में मन्दिरों के आर्किटेक्चर के विकास पर अपनी शोध प्रस्तुत करेंगे।

पत्रिका

कार्यशाला

वैश्विक स्तर पर आज भी प्रासंगिक है कौटिल्य और चाणक्य का अर्थशास्त्र दर्शन - प्रो. शुभदा

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
patrika.com

सांची. सांची बौद्ध भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में आधुनिक परिप्रेक्ष्य में भारतीय दर्शन का लेखन विषय पर आयोजित पांच दिवसीय कार्यशाला के दूसरे दिन चाणक्य और कौटिल्य के अर्थशास्त्र पर गहन चर्चा की गई। मुंबई विश्वविद्यालय की प्रोफेसर शुभदा जोशी ने कहा आज के भारतीय और अंतरराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्यो में कौटिल्य और चाणक्य का अर्थशास्त्र पूरी तरह प्रासंगिक है। उनका कहना था कि कौटिल्य ने बुक कीपिंग, एकाउंट्स और ऑडिट का जिक्र किया गया है।

डॉक्टर जोशी का कहना था कि कौटिल्य का कहना है अगर राजा या शासक मात्र लोगों के तुष्टिकरण के लिए कार्य करने लगे (जैसा की आज के राजनेता वोट के लिए करते हैं), तो जनता को चाहिए कि ऐसे शासक को पद से हटा दे। उनका कहना था कि कौटिल्य ने अपने अर्थशास्त्र में जंगल की संपत्ति से होने वाली आय, अधिकारियों की कार्यपध्दति, टैक्स सिस्टम, को बेहद स्पष्टता के साथ उल्लेखित किया है। डॉक्टर शुभदा जोशी का कहना था कि उस दौर का अर्थ शास्त्र व्यावहारिक दर्शन पर आधारित था।कार्यशाला के दूसरे सत्र में संशय के विषय पर चर्चा की गई। भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद के पूर्व निदेशक डॉक्टर अरुण मिश्र ने कहा कि संशय से ही सही ज्ञान प्राप्त होता है और ये संशय ही जिज्ञासा को जन्म देता है। लखनऊ विश्वविद्यालय के प्रोफेसर के सी पांडेय ने चार्वाक दर्शन और बौद्ध दर्शन में चेतना की अवधारणा पर चर्चा की।

दैनिक भास्कर | रायसेन Page 1

राष्ट्रीय कार्यशाला • सांची बौद्ध विश्वविद्यालय में विद्वानों ने कहा-अज्ञानता के कारण खत्म हो रही है हमारी संस्कृति

अच्छे संवाद से संशय की स्थिति को करें खत्मः अरुण मिश्र

रायसेन | किसी भी विषय पर संशय पैदा होना आम बात है, लेकिन उसका हल तभी संभव है जब हमें उसके बारे में मनोवैज्ञानिक तरीके का ज्ञान हो। अच्छे संवाद से संशय की स्थिति को खत्म किया जा सकता है। संशय के बाद ही सही ज्ञान की प्राप्ति होती है। और ये संशय ही जिज्ञासा को जन्म देता है। यह बात भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद के पूर्व निदेशक डॉक्टर अरुण मिश्र ने सांची बौद्ध भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में आधुनिक परिप्रेक्ष्य में भारतीय दर्शन का लेखन विषय पर आयोजित कार्यशाला के दूसरे दिन कही। उनका कहना था कि यदि किसी मामले में संशय की स्थिति बन जाए तो उससे निर्णय तक प्रभावित हो जाते हैं।

सांची बौद्ध विश्वविद्यालय में पांच दिवसीय आधुनिक परिपेक्ष्य में विद्धानों का हुआ सम्मान।

शासक तुष्टिकरण करने लगे तो उन्हें पद से हटा देना चाहिएः कार्यशाला में चाणक्य और कौटिल्य के अर्थशास्त्र पर गहन चर्चा हुई। इस विषय पर मुंबई विश्वविद्यालय की प्रोफेसर शुभद्रा जोशी ने कहा कि आज के भारतीय और विश्व परिप्रेक्ष्यों में कौटिल्य और चाणक्य का अर्थशास्त्र पूरी तरह प्रासंगिक है। उनका कहना था कि कौटिल्य ने बुक कीपिंग (पंजी लेखन) एकाउंट्स (लेखा) और ऑडिट (संप्रेक्षण)का जिक्र किया गया है। जोशी ने कहा कि अगर राजा या शासक मात्र लोगों के तुष्टिकरण के लिए कार्य करने लगे जैसा की आज के राजनेता वोट के लिए करते हैं, तो जनता को चाहिए कि ऐसे शासक को पद से हटा दें।

चार्वाक दर्शन कहता है कि आत्मा शरीर का ही गुणः लखनऊ विश्वविद्यालय के प्रोफेसर केसी पांडेय ने चार्वाक दर्शन और बौद्ध दर्शन में चेतना (आत्मा) की अवधारणा पर अपने विचार रखे। उनका कहना था कि चार्वाक दर्शन के अनुसार शरीर में भौतिक परिस्थितियों के कारण चेतना या ज्ञान निर्मित होती है।

सूफी दर्शन व वेदांत दर्शन पर भी हुई चर्चाः प्रोफेसर जॉर्ज विक्टर ने कहा कि भारतीय दर्शन में धर्म शास्त्र और दर्शन को अलग करना चाहिए तभी भारतीय दर्शन आगे बढ़ेगा और देश के दर्शन विषय के छात्रों को लाभ पहुंचेगा। अंतिम सत्र में सूफी दर्शन और वेदांत दर्शन के बीच भी चर्चा की गई। शांतिनिकेतन के प्रोफेसर सिराजुल इस्लाम ने कहा कि वेदांत दर्शन के द्वैतवाद और अद्वैतवाद की सूफी दर्शन से समानता है।

नवदुनिया

'आज भी प्रासंगिक है कौटिल्य अर्थशास्त्र दर्शन'

रायसेन। नवदुनिया प्रतिनिधि

सांची बौद्ध भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में आधुनिक परिप्रेक्ष्य में भारतीय दर्शन का लेखन विषय पर आयोजित पांच दिवसीय कार्यशाला के दूसरे दिन कौटिल्य अर्थशास्त्र पर गहन चर्चा की गई। मुंबई विश्वविद्यालय की प्रोफेसर शुभदा जोशी ने कहा कि आज के भारतीय और अन्तारराष्ट्रीय परिप्रेक्ष में कौटिल्य और चाणक्य का अर्थशास्त्र पूरी तरह प्रासंगिक है।

रायसेन। सूफी दर्शन और वेदाचत दर्शन की समानताओ पर भी की गई कार्यशाला।

उन्होंने कहा कि कौटिल्य ने बुक कीपिंग (पंजी लेखन), एकाउंट्स (लेखा) और ऑडिट (संपरिक्षण) का जिक्र किया गया है। डॉक्टर जोशी का कहना था कि कौटिल्य का कहना है अगर राजा या शासक मात्र लोगों के तुष्टिकरण के लिए कार्य करने लगे (जैसा की आज के राजनेता वोट के लिए करते है) तो जनता को चाहिए कि ऐसे शासक को पद से हटा दे। उनका कहना था कि कौटिल्य ने अपने अर्थशास्त्र में जंगल की संपत्ति से होने वाली आय, अधिकारियों की कार्यपध्दति, टैक्स सिस्टम को स्पष्ट उल्लेखित किया है। डॉक्टर शुभदा जोशी का कहना था कि उस दौर का अर्थ शास्त्र व्यावहारिक दर्शन पर आधारित था।

कार्यशाला के दूसरे सत्र में संशय के विषय पर चर्चा की गई। भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद के पूर्व निदेशक डॉक्टर अरुण मिश्र ने कहा कि संशय से ही सही ज्ञान प्राप्त होता है। ये संशय ही जिज्ञासा को जन्म देता है। इसी सत्र में लखनऊ विश्वविद्यालय के प्रोफेसर के सी पांडेय ने चार्वाक दर्शन और बौद्ध दर्शन में चेतना की अवधारणा पर चर्चा की। चार्वाक दर्शन के अनुसार शरीर में भौतिक परिस्तिथियों के कारण चेतना या ज्ञान निर्मित होती है। हमें जो भी अनुभव होते है वो आत्मा ही के अनुभव होते है। चार्वाक दर्शन कहता है कि आत्मा शरीर का ही गुण है और बौद्ध दर्शन ने इसका खंडन किया है। बौद्ध दर्शन का कहना है कि चेतना शरीर के बाहर से आती है। विशाखापट्नम के अंदर विवि के प्रोफेसर जॉर्ज विक्टर ने कहा कि भारतीय दर्शन को अलग करना चाहिए तभी भारतीय दर्शन आगे बढ़ेगा और देश के दर्शन विषय के छात्रों को लाभ पहुंचेगा। अंतिम सत्र में सूफी दर्शन और वेदान्त दर्शन के बीच भी चर्चा की गई। शांतिनिकेतन के प्रो. सिराजुल इस्लाम ने कहा कि वेदांत दर्शन के द्वैतवाद और अद्वैतवाद की सूफी दर्शन से समानता है। 27 सितंबर को रवीन्द्र नाथ टैगोर के भारतीय दर्शन पर चर्चा की जाएगी। आधुनिक भारतीय विचार पर भी गहन चिंतन होगा। भोपाल के डॉ. रहमान अली भारत में मंदिरों के आर्किटेक्चर के विकास पर अपनी शोध प्रस्तुत करेंगे।

हरिभूमि
भोपाल, गुरुवार 27 सितंबर 2018

वैश्विक स्तर पर कौटिल्य का अर्थशास्त्र व दर्शन आज भी प्रासंगिकः प्रो. जोशी

सांची विवि में 5 दिवसीय कार्यशाला का दूसरा दिन

भोपाल। आज के भारतीय और अंतरराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्यो में कौटिल्य और चाणक्य का अर्थशास्त्र पूरी तरह प्रासंगिक है, कौटिल्य द्वारा बुक कीपिंग (पंजी लेखन), अकाउंट्स (लेखा) और ऑडिट (संपरिक्षण) का जिक्र इसका प्रमाण है। ये कहना है मुंबई विवि की प्रोफेसर शुभदा जोशी का, जो सांची बौद्ध भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में आधुनिक परिप्रेक्ष्य में भारतीय दर्शन का लेखन विषय पर आयोजित 5 दिवसीय कार्यशाला के दूसरे दिन चाणक्य और कौटिल्य के अर्थशास्त्र पर बोल रहीं थीं।

संशय से ही प्राप्त होता है ज्ञानः दूसरे सत्र में संशय विषय पर चर्चा की गई। भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद के पूर्व निदेशक डॉक्टर अरुण मिश्र ने कहा कि संशय से ही सही ज्ञान प्राप्त होता है और ये संशय ही जिज्ञासा को जन्म देता है। इसी सत्र में लखनऊ विवि के प्रोफेसर केसी पांडेय ने कहा कि चार्वाक दर्शन के अनुसार शरीर में भौतिक परिस्तिथियों के कारण चेतना या ज्ञान निर्मित होती है और हमें जो भी अनुभव होते हैं वो आत्मा ही के अनुभव होते हैं। चार्वाक दर्शन कहता है कि आत्मा शरीर का ही गुण है और बौद्ध दर्शन ने इसका खंडन किया है। बौद्ध दर्शन का कहना है कि चेतना शरीर के बाहर से आती है।

पत्रिका BHOPAL THURSDAY 27/09/2018

ANCHOR **सांची विवि में चल रही कार्यशाला में प्रो. शुभदा जोशी ने कहा**

कौटिल्य का अर्थशास्त्र दर्शन आज भी प्रासंगिक

भोपाल ◆ सांची बौद्ध भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में आधुनिक परिप्रेक्ष्य में भारतीय दर्शन का लेखन विषय पर आयोजित 5 दिवसीय कार्यशाला के दूसरे दिन बुधवार को चाणक्य और कौटिल्य के अर्थशास्त्र पर गहन चर्चा की गई। मुंबई विश्वविद्यालय की प्रो. शुभदा जोशी ने कहा कि आज के भारतीय और अंतरराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्यो में कौटिल्य और चाणक्य का अर्थशास्त्र पूरी तरह प्रासंगिक है। उनका कहना था कि कौटिल्य ने बुक कीपिंग , एकाउंट्स और ऑडिट का जिक्र किया गया है।

उन्होंने कहा कि कौटिल्य का कहना है अगर राजा या शासक मात्र लोगों के तुष्टिकरण के लिए कार्य करने लगे (जैसा की आज के राजनेता वोट के लिए करते हैं), तो जनता को चाहिए कि ऐसे शासक को पद से हटा दे। कौटिल्य ने अपने अर्थशास्त्र में जंगल की संपत्ति से होने वाली आय, अधिकारियों की कार्यपद्धति, टैक्स सिस्टम, को बेहद स्पष्टता के साथ उल्लेखित किया है। उस दौर का अर्थ शास्त्र व्यावहारिक दर्शन पर आधारित था। दूसरे सत्र में संशय के विषय पर चर्चा की गई। भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद के पूर्व निदेशक डॉ. अरुण मिश्र ने कहा कि संशय से ही सही ज्ञान प्राप्त होता है और ये संशय ही जिज्ञासा को जन्म देता है। इसी सत्र में लखनऊ विश्वविद्यालय के प्रोफेसर के सी पांडेय ने चार्वाक दर्शन और बौद्ध दर्शन में चेतना की अवधारणा पर चर्चा की।

विश्वस्य वृत्तान्तं

भारतीयदर्शनशास्त्रे कौटिल्यस्यार्थशास्त्रस्य स्थानम्

> मुम्बई विश्वविद्यालयस्य वरिष्ठप्राध्यापिका जोषी महाभागा उवाच यत् यद्यपि उर्दू, सिंधी इति द्वयोः भाषयोः अस्य प्राचीनग्रन्थस्य व्याख्यात्मक कृतयः नोपलभ्यन्ते परं भारतीय भाषासु अस्य अनुदितप्रक्रिया सततं प्रवाहमाना वर्तते।

साञ्ची विश्वविद्यालये आयोजितायां पञ्चदिवसीय कार्यशालायां द्वितीय दिवसस्य वक्त्री प्रो. सुभद्रा जोषी भारतीयदर्शन विद्यायां कौटिल्यस्य अर्थशास्त्रस्य योगदानं, भूमिका, उपयोगितादि विषये सविशेषं विमर्शनं कृतवती। मुम्बई विश्व विद्यालयस्य वरिष्ठ प्राध्यापिका जोषी महाभागा उवाच यत् यद्यपि उर्दू, सिंधी इति द्वयोः भाषयोः अस्य प्राचीनग्रन्थस्य व्याख्यात्मक कृतयः नोपलभ्यन्ते परं भारतीय भाषासु अस्य अनुदित प्रक्रिया सततं प्रवाहमाना वर्तते। अर्थशास्त्रे पुरुषार्थरतः, विद्यासमुत्कर्षः तथा प्राक्-कौटिल्य भारतीय परम्परायाः विषये वर्णनं लभ्यते। लोकायत्त, सांख्यं, योगादि विषयेषु अर्थशास्त्रस्य केषुचित् स्थलेषु प्रमुखताः दीयन्ते। प्राचीनकालस्य राजकार्य व्यवस्थायां कृषि वाणिज्यं, गौसुरक्षा, गुप्तचर सञ्चालनं तथा प्रजासुखाय प्रजा-पालनादि च कौटिल्यस्य ग्रन्थे सुवर्णिताः। लोकायते प्रकरणे राजधर्मस्य उपयोगिता आधुनिककाले कथं भारतीयदर्शनशास्त्रे समावेशिता स्यात्? लाभालाभयोः जयाजययोः मध्ये पार्थक्यादिविषये सांख्यस्य प्रयोगः अपि जोषी महाभागया सुचारू रूपेण उपस्थापिता।

नवीन-कालिकानां शोधछात्राणां मनिषीणां कृते योगस्य भूमिका दर्शनशास्त्रे योगस्य उपादेयता च पठनीया, पाठनीया इति तथा निवेदिता।

नवदुनिया
भोपाल, गुरुवार 27 सितंबर 2018

लाइव एंकर

सांची बौद्ध विश्वविद्यालय में 'आधुनिक परिप्रेक्ष्य में भारतीय दर्शन का लेखन' कार्यशाला

शासक तुष्टिकरण के लिए काम करे तो उसे हटा दें

भोपाल। नवदुनिया रिपोर्टर

सांची बौद्ध भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में आधुनिक परिप्रेक्ष्य में भारतीय दर्शन का लेखन विषय पर जारी कार्यशाला में बुधवार को 'चाणक्य और कौटिल्य के अर्थशास्त्र' पर चर्चा हुई। मुंबई विश्वविद्यालय की प्रोफेसर शुभदा जोशी ने कहा कि आज के भारतीय और अंतरराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्यों में कौटिल्य और चाणक्य का अर्थशास्त्र पूरी तरह प्रासंगिक है। उनका कहना था कि कौटिल्य ने बुक कीपिंग(पंजी लेखन), एकाउंट्स(लेखा) और ऑडिट(सम्परिक्षण) का जिक्र किया गया है। डॉ. जोशी ने कहा, कौटिल्य का कहना है अगर राजा या शासक मात्र लोगों के तुष्टिकरण के लिए काम करने लगे (जैसा की आज के राजनेता वोट के लिए करते हैं), तो जनता को चाहिए कि ऐसे शासक को पद से हटा दे। उन्होंने कहा कि कौटिल्य ने अपने अर्थशास्त्र में जंगल की संपत्ति से होने वाली आय, अधिकारियों की कार्यपद्धति, टैक्स सिस्टम को बेहद स्पष्टता के साथ प्रस्तुत किया। अर्थ शास्त्र व्यावहारिक दर्शन पर आधारित था।

मुंबई विश्वविद्यालय की प्रोफेसर शुभदा जोशी को स्मृति चिह्न प्रदान करते हुए।

संशय से ही सही ज्ञान प्राप्त होता है, जिज्ञासा को जन्म देता है

कार्यशाला के दूसरे सत्र में संशय के विषय पर चर्चा की गई। भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद के पूर्व निदेशक डॉक्टर अरुण मिश्र ने कहा कि संशय से ही सही ज्ञान प्राप्त होता है और यह संशय ही जिज्ञासा को जन्म देता है। इसी सत्र में लखनऊ विश्वविद्यालय के प्रो. केसी पांडेय ने चार्वाक दर्शन और बौद्ध दर्शन में चेतना(आत्मा) की अवधारणा पर चर्चा की। चार्वाक दर्शन के अनुसार शरीर में भौतिक परिस्तिथियों के कारण चेतना या ज्ञान निर्मित होती है और हमें जो भी अनुभव होते हैं वो आत्मा ही के अनुभव होते हैं। चार्वाक दर्शन कहता है कि आत्मा शरीर का ही गुण है और बौद्ध दर्शन ने इसका खंडन किया है।

धर्मशास्त्र और दर्शन को अलग करें, तभी दर्शन बढ़ेगा

विशाखापट्नम के प्रो. जॉर्ज विक्टर ने कहा कि भारतीय दर्शन में धर्मशास्त्र और दर्शन को अलग करना चाहिए तभी भारतीय दर्शन आगे बढ़ेगा और देश के दर्शन विषय के छात्रों को लाभ पहुंचेगा। अंतिम सत्र में सूफी दर्शन और वेदांत दर्शन के बीच भी चर्चा की गई। शांतिनिकेतन के प्रोफेसर सिराजुल इस्लाम ने कहा कि वेदांत दर्शन के द्वैतवाद और अद्वैतवाद की सूफी दर्शन से समानता है। बौद्ध दर्शन का कहना है कि चेतना शरीर के बाहर से आती है।

भोपाल, 27 सितम्बर, 2018
दैनिक जागरण

कोई शासक तुष्टिकरण करने लगे तो ऐसे शासक को हटा दें

सांची विश्वविद्यालय में कार्यशाला

जागरण रिपोर्टर । सांची बौद्ध भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में आधुनिक परिप्रेक्ष्य में भारतीय दर्शन का लेखन विषय पर आयोजित 5 दिवसीय कार्यशाला के दूसरे दिन चाणक्य और कौटिल्य के अर्थशास्त्र पर गहन चर्चा की गई। मुम्बई विश्वविद्यालय की प्रोफेसर शुभदा जोशी ने कहा कि आज के भारतीय और अंतर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्यों में कौटिल्य और चाणक्य का अर्थशास्त्र पूरी तरह प्रासंगिक है। उन्होंने कहा कि कौटिल्य ने बुक कीपिंग (पंजी लेखन), एकाउंट्स (लेखा) और ऑडिट(संपरिक्षण) का जिक्र किया गया है। डॉक्टर जोशी ने कहा कि कौटिल्य का कहना है कि अगर राजा या शासक मात्र लोगों के तुष्टिकरण के लिए कार्य करने लकं (जैसा की आज के राजनेता वोट के लिए करते हैं), तो जनता को चाहिए कि ऐसे शासक को पद से हटा दें। उन्होंने बताया कि कौटिल्य ने अपने अर्थशास्त्र में जंगल की संपत्ति से होने वाली आय, अधिकारियों की कार्यपद्धति, टैक्स सिस्टम को बेहद स्पष्टता के साथ उल्लेखित किया है।

<u>प्रेस विज्ञप्ति</u>

वेदों में मंदिरों के आर्किटेक्ट का सटीक वर्णन है

- सांची बौद्ध विश्वविद्यालय में 5 दिवसीय कार्यशाला का तीसरा दिन
- वेद में मंदिर के स्तंभ, हॉल, वृत्तों की सटीक गणितीय गणना-इतिहासकार डॉ रहमान अली
- "रविंद्रनाथ टैगोर कवि के साथ-साथ दार्शनिक, संगीतज्ञ और चित्रकार भी थे"- डॉ आशा मुखर्जी
- "टैगोर मानतावाद के समर्थक थे"

सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में आयोजित 5 दिवसीय कार्यशाला "आधुनिक परिप्रेक्ष्य में भारतीय दर्शन का लेखन" विषय पर तीसरे दिन कई गहन विषयों पर चिंतन किया गया। इतिहासकार और भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद के सदस्य**डॉ रहमान अली** ने "भारतीय मंदिरों की वास्तुकला की उत्पत्ति और विकास" पर चर्चा करते हुए बताया कि वेदों में मंदिरों के प्लान, उनके एलिवेशन(क्षितिज) और उनकी सजावट(सौंदर्य) के बारे में संपूर्ण वर्णन किया गया है। उनका कहना था कि वेद में मंदिरों के स्तंभ,हॉल, वृत्तों के बारे में इतना सटीक ज़िक्र किया गया है कि मानों को दैवीय ज्ञान के आधार पर उस दौर के मनुष्यों को मंदिर निर्माण सिखा रहा है।

डॉ रहमान अली ने देश के 32 मंदिरों के चित्रों को प्रदर्शित कर बताया कि उनकी वास्तुकला और निर्माण में किस प्रकार की समानताएं थीं। डॉ अली ने बताया कि इनके आर्किटेक्ट में एक सटीक गणितीय हिसाब, ज्यामीति और तर्क दिखाई पड़ता है। उनका कहना था कि नींव से शिखर तक एक-एक इंच का नाप वर्णित किया गया है। ये सब विष्णु धर्मोत्तर पुराण में लिखा है। उन्होंने नागर शैली में निर्मित किए गए मंदिरों के चित्र प्रदर्शित कर बताया कि ऐसे भूमिष मंदिरों की सजावट के लिए चारों दिशाओं में शिव परिवार के सदस्यों के चित्र होते हैं। शिखर की तुलना कैलाश पर्वत के रूप में की जाती है।

कार्यशाला के तीसरे दिवस शांतिनिकेतन की डॉ आशा मुखर्जी ने नोबल पुरस्कार विजेता गुरु रविंद्रनाथ टैगोर की धर्म की अवधारणा को प्रस्तुत किया। डॉ मुखर्जी ने बताया कि टैगोर ने अपनी किताब Religion of Man में **मानवतावाद** के दर्शन को प्रस्तुत किया। उनके अनुसार टैगोर ने जिस **मानवतावाद** को अपनी इस पुस्तक के माध्यम से प्रस्तुत किया है वो अद्वैत वेदांत दर्शन के करीब है। टैगोर कहते थे- "जैसी ही मैं ईश्वर से अलग हुआ, मैं ईश्वर की आराधना के लिए स्वतंत्र हो गया"। डॉ आशा ने बताया कि यह स्वामी विवेकानंद भी टैगोर के इस कथन से प्रभावित थे। विवेकानंद ने भी इसी मानवतावाद के दर्शन को प्रस्तुत किया है। स्वामी विवेकानंद कहते थे कि- मैं उस प्रभु का सेवक हूं जिसे अज्ञानी लोग मनुष्य कहते हैं। डॉ आशा मुखर्जी के अनुसार सर्वप्रथम रविंद्रनाथ टैगोर ने ही"साधना" शब्द का प्रयोग किया था और वेदांत के माध्यम से तात्कालिक सामाजिक हल को प्रस्तुत किया था।

डॉ आशा मुखर्ज़ी के अनुसार लोग गुरु रविंद्रनाथ टैगोर को मात्र एक महान कवि ही मानते हैं जबकि वो एक कवि के साथ-साथ दार्शनिक थे, संगीतज्ञ थे और एक चित्रकार भी थे। टैगोर की अवधारणा थी कि भारत में भारतीय दर्शन परिषद नामक एक केंद्रीय संस्था हो जो कि समस्त भारतीय दर्शन के क्षेत्र में कार्य करे और उसे संकलित करने का कार्य करे। टैगोर के रहते तो यह संभव नहीं हो सका लेकिन बाद में इसी अवधारणा पर ICPR भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद का गठन किया गया। हालांकि रविंद्रनाथ टैगोर को Indian Philosophical Congress का पहला अध्यक्ष बनाया गया था। डॉ आशा मुखर्जी केअनुसार रविंद्रनाथ टैगोर ने दर्शन शास्त्र में प्रायोगिक प्रमाण पर कार्य किया था और वे मानती हैं कि उनका प्रयास सर्वकालिक और सार्वभौमिक है। टैगोर की सभी कृतियां कुरुक्षेत्र में कृष्ण और अर्जुन के संवाद पर आधारित थीं।

डॉ आशा मुखर्जी का कहना था कि देश के अंग्रेज़ी औपनिवेशवादी काल में संस्कृत भाषा पर भी विदेशी भाषाओं का दबाव रहा और मैक्स म्यूलर तथा कीथ जैसे यूरोपीय लेखकों ने अपनी भाषाओं में इनके अपने अर्थों में अनुवाद किए। उनका कहना था कि संस्कृत की समझ के बिना भारतीय दर्शन को नहीं समझा जा सकता।

इसी सत्र में प्रो. एस. पनीरसेलवम ने आधुनिक भारतीय विचार के विभिन्न आयामों को प्रस्तुत किया। उन्होंने 20वीं शताब्दी के समसामायिक भारतीय दर्शन को उल्लेखित किया। डॉ पनीरसेलवम ने महात्मा गांधी, के सच्चिदानंद मूर्ति, रविंद्रनाथ टैगोर, के.सी भट्टाचार्य, प्रो. दया कृष्णन, प्रो डी.पी चटोपाध्याय के द्वारा व्याख्यायित किए गए भारतीय दर्शन से लोगों को वाकिफ कराया। उन्होंने कहा कि समय बेहद तेज़ी से गति कर रहा है और इसी प्रकार से दर्शन भी प्रतिदिन बदल रहा है। उनका कहना था कि वर्तमान समय के अनुसार ही भारतीय दार्शिनों द्वारा प्रस्तुत किए गए दर्शनों को परखा जाना चाहिए।

तीसरे दिन दूसरे सत्र में प्रो. गोदावरेश मिश्र ने गौतम बुद्ध को लेकर शंकराचार्य के मतों को प्रस्तुत किया। प्रो. मिश्रा का कहना था कि बुद्ध ने यद्यपि वैदिक परंपरा से बहुत कुछ ग्रहण किया लेकिन इसे प्रदर्शित नहीं किया और यही उनके बाद आने वाले बौद्ध दार्शनिकों ने किया। इससे भारतीय दर्शन को स्वभाविक नुकसान हुआ।

इसी सत्र के दौरान डॉ मीनल कतरनिकर ने यथार्थ, ज्ञान तथा चेतना के विषय पर कहा कि भारतीय परंपरा में इसके तीन आयाम हैं। डॉ मीनल ने जैन दर्शन के अनेकांतवादी सिद्धांत और उसकी ज्ञान मीमांसा का अन्य भारतीय दर्शन जैसे न्याय तथा बौद्ध दर्शन के साथ तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया।

city भास्कर
BHOPAL, FRIDAY, 28/09/2018 . 22

सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में चल रही कार्यशाला में हुए व्याख्यान

पुराणों में मंदिर की नींव से शिखर तक के नाप की डिटेल : प्रो. रहमान

सिटी रिपोर्टर | भोपाल

वेदों में मंदिरों के स्तंभ, हॉल, वृत्तों के बारे में इतना सटीक जिक्र किया गया है कि मानो दैवीय ज्ञान के आधार पर उस दौर के लोगों को मंदिर निर्माण सिखाया जा रहा हो। विष्णु धर्मोत्तर पुराण में नींव से शिखर तक मंदिर संरचना के एक-एक इंच का नाप वर्णित है। वेदों में मंदिरों के प्लान, उनके एलिवेशन और उनकी सजावट के बारे में संपूर्ण वर्णन है। गुरुवार को प्रोफेसर डॉ. रहमान अली ने सांची यूनिवर्सिटी में आयोजित पांच दिवसीय कार्यशाला में देश के 32 मंदिरों के चित्रों को प्रदर्शित कर बताया कि उनकी वास्तुकला और निर्माण में किस प्रकार की समानताएं थीं। भारतीय मंदिरों की वास्तुकला की उत्पत्ति और विकास विषय पर डॉ. अली ने बताया, मंदिरों के आर्किटेक्चर में एक सटीक गणितीय हिसाब, ज्यामीति और तर्क दिखाई पड़ता है।

टैगोर सिर्फ कवि नहीं दार्शनिक, संगीतज्ञ भी

कार्यशाला के तीसरे दिन शांति निकेतन की डॉ. आशा मुखर्जी ने रवींद्रनाथ टैगोर की धर्म की अवधारणा को प्रस्तुत किया। डॉ. मुखर्जी ने बताया कि, लोग गुरु रवींद्रनाथ टैगोर को मात्र एक महान कवि ही मानते हैं, जबकि वो दार्शनिक, संगीतज्ञ और चित्रकार भी थे। टैगोर की अवधारणा थी कि भारत में भारतीय दर्शन परिषद नामक एक केंद्रीय संस्था हो जो भारतीय दर्शन के क्षेत्र में काम करे। टैगोर के रहते तो यह संभव नहीं हो सका लेकिन बाद में इसी अवधारणा पर भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद का गठन किया गया।

बुद्ध से लेकर शंकराचार्य के मतों को किया प्रस्तुत

प्रो. एस. पन्नीरसेलवम ने आधुनिक भारतीय विचार के विभिन्न आयामों को प्रस्तुत किया। उन्होंने महात्मा गांधी, के. सच्चिदानंद मूर्ति, रविंद्रनाथ टैगोर, केसी भट्टाचार्य, प्रो. दया कृष्णन, प्रो डी.पी. चटोपाध्याय द्वारा बताए गए भारतीय दर्शन से लोगों को वाकिफ कराया। दूसरे सत्र में प्रो. गोदावरेश मिश्र ने गौतम बुद्ध को लेकर शंकराचार्य के मतों को प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा, बुद्ध ने यद्यपि वैदिक परंपरा से बहुत कुछ ग्रहण किया, लेकिन इसे प्रदर्शित नहीं किया और यही उनके बाद आने वाले बौद्ध दार्शनिकों ने किया। डॉ. मीनल कतरनिकर ने तीन आयामों से परिचित कराया।

दैनिक जागरण | भोपाल, 28 सितम्बर 2018

सांची बौद्ध विश्वविद्यालय में 5 दिवसीय कार्यशाला का तीसरा दिन

वेदों में मंदिरों के आर्किटेक्ट का सटीक वर्णन है

● जागरण रिपोर्टर ●

सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विवि में आयोजित 5 दिवसीय कार्यशाला 'आधुनिक परिप्रेक्ष्य में भारतीय दर्शन का लेखन' विषय पर तीसरे दिन कई गहन विषयों पर चिंतन किया गया। इतिहासकार और भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद के सदस्य डॉ. रहमान अली ने 'भारतीय मंदिरों की वास्तुकला की उत्पत्ति और विकास' पर चर्चा करते हुए बताया कि वेदों में मंदिरों के प्लान, उनके एलिवेशन(क्षितिज) और उनकी सजावट(सौंदर्य) के बारे में संपूर्ण वर्णन किया गया है। उनका कहना था कि वेद में मंदिरों के स्तंभ, हॉल, वृत्तों के बारे में इतना सटीक जिक्र किया गया है कि मानों की दैवीय ज्ञान के आधार पर उस दौर के मनुष्यों को मंदिर निर्माण सिखा रहा है। डॉ. अली ने बताया कि इनके आर्किटेक्ट में एक सटीक गणितीय हिसाब, ज्यामीति और तर्क दिखाई पड़ता है। उन्होंने कहा कि नींव से शिखर तक एक-एक इंच का नाप वर्णित किया गया है।

जैसी ही मैं ईश्वर से अलग हुआ, मैं ईश्वर की आराधना के लिए स्वतंत्र हो गया: शांतिनिकेतन की डॉ. आशा मुखर्जी ने बताया कि टैगोर ने अपनी किताब 'रिलीजन ऑफ मेन' में मानवतावाद के दर्शन को प्रस्तुत किया। उनके अनुसार टैगोर ने जिस मानवतावाद को अपनी इस पुस्तक के माध्यम से प्रस्तुत किया है वो अद्वैत वेदांत दर्शन के करीब है। टैगोर कहते थे- 'जैसी ही मैं ईश्वर से अलग हुआ, मैं ईश्वर की आराधना के लिए स्वतंत्र हो गया'। डॉ. आशा ने बताया कि स्वामी विवेकानंद भी टैगोर के इस कथन से प्रभावित थे। विवेकानंद ने भी इसी मानवतावाद के दर्शन को प्रस्तुत किया है। इसी सत्र में प्रो. एस. पनीरसेलवम ने आधुनिक भारतीय विचार के विभिन्न आयामों को प्रस्तुत किया। उन्होंने 20वीं शताब्दी के समसामायिक भारतीय दर्शन को उल्लेखित किया। डॉ. पनीरसेलवम ने महात्मा गांधी, के सच्चिदानंद मूर्ति, रविंद्रनाथ टैगोर, के.सी भट्टाचार्य, प्रो. दया कृष्णन, प्रो डी.पी चटोपाध्याय के द्वारा व्याख्यायित किए गए भारतीय दर्शन से लोगों को वाकिफ कराया। उन्होंने कहा कि समय बेहद तेजी से गति कर रहा है और इसी प्रकार से दर्शन भी प्रतिदिन बदल रहा है।

नवदुनिया | भोपाल, शुक्रवार 28 सितंबर 2018

वेदों में है मंदिरों के प्लान व एलिवेशन की जानकारी

सांची बौद्ध भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में 'आधुनिक परिप्रेक्ष्य में भारतीय दर्शन का लेखन' कार्यशाला

भोपाल। नवदुनिया रिपोर्टर

सांची बौद्ध भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में जारी 'आधुनिक परिप्रेक्ष्य में भारतीय दर्शन का लेखन' कार्यशाला में गुरुवार को भी कई विषयों पर विचार विमर्श हुआ।

इतिहासकार और भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद के सदस्य डॉ.रहमान अली ने 'भारतीय मंदिरों की वास्तुकला की उत्पत्ति और विकास' पर चर्चा की। उन्होंने बताया कि वेदों में मंदिरों के प्लान, उनके एलिवेशन(क्षितिज) और उनकी सजावट(सौंदर्य) के बारे में संपूर्ण वर्णन किया गया है। उनका कहना था कि वेद में मंदिरों के स्तंभ, हॉल, वृत्तों के बारे में इतना सटीक जिक्र किया गया है कि मानवों को दैवीय ज्ञान के आधार पर उस दौर के मनुष्यों को मंदिर निर्माण सिखा रहा है। उन्होंने देश के 32 मंदिरों के चित्रों को प्रदर्शित कर बताया कि उनकी वास्तुकला और निर्माण में किस प्रकार की समानताएं थीं। इनके आर्किटेक्ट में एक सटीक गणितीय हिसाब, ज्यामीति और तर्क दिखाई पड़ता है। नींव से शिखर तक एक-एक इंच का नाप वर्णित किया गया है। ये सब विष्णु धर्मोत्तर पुराण में लिखा है। उन्होंने नागर शैली में निर्मित किए गए मंदिरों के चित्र प्रदर्शित कर बताया कि ऐसे भूमिष मंदिरों की सजावट के लिए चारों दिशाओं में शिव परिवार के सदस्यों के चित्र होते हैं। शिखर की तुलना कैलाश पर्वत के रूप में की जाती है। इस अवसर पर कार्यशाला में काफी तादाद में विशेषज्ञ और श्रोतागण मौजूद थे। इस आयोजन की सराहना हो रही है।

मैं ईश्वर की आराधना के लिए स्वतंत्र हो गया

शांतिनिकेतन से आई डॉ.आशा मुखर्जी ने नोबल पुरस्कार विजेता गुरु रविंद्रनाथ टैगोर की धर्म की अवधारणा को प्रस्तुत किया। डॉ.मुखर्जी ने बताया कि टैगोर ने अपनी किताब 'रिलीजन ऑफ मेन' में मानवतावाद के दर्शन को प्रस्तुत किया। उनके अनुसार टैगोर ने जिस मानवतावाद को अपनी इस पुस्तक के माध्यम से प्रस्तुत किया है वो अद्वैत वेदांत दर्शन केकरीब है। टैगोर कहते थे- 'जैसी ही मैं ईश्वर से अलग हुआ, मैं ईश्वर की आराधना के लिए स्वतंत्र हो गया'। स्वामी विवेकानंद भी टैगोर के इस कथन से प्रभावित थे। विवेकानंद ने भी इसी मानवतावाद के दर्शन को प्रस्तुत किया है। वे कहते थे कि- मैं उस प्रभु का सेवक हूं जिसे अज्ञानी लोग मनुष्य कहते हैं। सर्वप्रथम रविंद्रनाथ टैगोर ने ही 'साधना' शब्द का प्रयोग किया था।

वर्तमान समय के अनुसार भारतीय दार्शनिकों के तेजी से बदल रहे दर्शन को परखें

इसी सत्र में प्रो. एस. पनीरसेलवम ने आधुनिक भारतीय विचार के विभिन्न आयामों को प्रस्तुत किया। उन्होंने 20वीं शताब्दी के समसामायिक भारतीय दर्शन के बारे में बताया। डॉ.पनीरसेलवम ने महात्मा गांधी, के.सधिादानंद मूर्ति, रविंद्रनाथ टैगोर, केसी भट्टाचार्य, प्रो. दया कृष्णन, प्रो डीपी चटोपाध्याय के द्वारा बताए गए भारतीय दर्शन से लोगों को वाकिफ कराया। उन्होंने कहा कि समय बेहद तेजी से गति कर रहा है और इसी प्रकार से दर्शन भी प्रतिदिन बदल रहा है। उनका कहना था कि वर्तमान समय के अनुसार ही भारतीय दार्शनिकों द्वारा प्रस्तुत किए गए दर्शनों को परखा जाना चाहिए। दूसरे सत्र में प्रो. गोदावरेश मिश्र ने गौतम बुद्ध को लेकर शंकराचार्य के मतों को प्रस्तुत किया। प्रो. मिश्रा का कहना था कि बुद्ध ने यद्यपि वैदिक परंपरा से बहुत कुछ ग्रहण किया, लेकिन इसे प्रदर्शित नहीं किया।

राष्ट्रीय हिन्दी मेल भोपाल, शुक्रवार 28 सितंबर 2018

32 मंदिरों का किया अध्ययन, एक जैसी मिली वास्तुकला

इतिहासकार डॉ.रहमान अली बोले, दैवीय ज्ञान के आधार पर उस दौर के मनुष्यों ने मंदिर निर्माण सीखा हो

रायसेन, 27 सितम्बर। सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में आयोजित 5 दिवसीय कार्यशाला श्आधुनिक परिप्रेक्ष्य में भारतीय दर्शन का लेखनश् विषय पर तीसरे दिन कई गहन विषयों पर चिंतन किया गया। इतिहासकार और भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद के सदस्य डॉ.रहमान अली ने भारतीय मंदिरों की वास्तुकला की उत्पत्ति और विकास पर चर्चा करते हुए बताया कि वेदों में मंदिरों के प्लान, उनके एलिवेशन क्षितिज और उनकी सजावट (सौंदर्य) के बारे में संपूर्ण वर्णन किया गया है। उनका कहना था कि वेद में मंदिरों के स्तंभ, हॉल, वृत्तों के बारे में इत सटीक ज़िक्र किया गया है कि मानों को दैवीय ज्ञान के आधार पर उस दौर के मनुष्यों को मंदिर निर्माण सिखा रहा है। डॉ रहमान अली ने देश के 32 मंदिरों के चित्रों को प्रदर्शित कर बताया कि उनकी वास्तुकला और निर्माण में किस प्रकार की समानताएं

चित्रों को प्रदर्शित कर बताया कि उनकी वास्तुकला और निर्माण में किस प्रकार की समानताएं एक जैसी थी

थीं। डॉ अली ने बताया कि इनके आर्किटेक्ट में एक सटीक गणितीय हिसाब, ज्यामीति और तर्क दिखाई पड़ता है। उनका कहना था कि नींव से शिखर तक एक.एक इंच का नाप वर्णित किया गया है। ये सब विष्णु धर्मोत्तर पुराण में लिखा है। उन्होंने नागर शैली में निर्मित किए गए मंदिरों के चित्र प्रदर्शित कर बताया कि ऐसे भूमि मंदिरों की सज़ावट के लिए चारों दिशाओं में शिव परिवार के सदस्यों के चित्र होते हैं। शिखर की तुलना कैलाश पर्वत के रूप में की जाती है। कार्यशाला के तीसरे दिवस शांतिनिकेतन की डॉ आशा मुखर्जी ने नोबल पुरस्कार विजेता गुरु रविंद्रनाथ टैगोर की धर्म की अवधारणा को प्रस्तुत किया। डॉ मुखर्जी ने बताया कि टैगोर ने अपनी किताब मनुष्य का धर्म में मानवतावाद के दर्शन को प्रस्तुत किया। उनके अनुसार टैगोर ने जिस मानवतावाद को अपनी इस पुस्तक के माध्यम से प्रस्तुत किया है वो अद्वैत वेदांत दर्शन के करीब हैं। डॉ आशा ने बताया कि यह स्वामी विवेकानंद भी टैगोर के इस कथन से प्रभावित थे। विवेकानंद ने भी इसी मानवतावाद के दर्शन को प्रस्तुत किया है। उन्होने बताया कि टैगोर की अवधारणा थी कि भारत में भारतीय दर्शन परिषद नामक एक केंद्रीय संस्था हो जो कि समस्त भारतीय दर्शन के क्षेत्र में कार्य करे और उसे संकलित करने का कार्य करे। टैगोर के रहते तो यह संभव नहीं हो सका लेकिन बाद में इसी अवधारणा पर भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद का गठन किया गया। हालांकि रविंद्रनाथ टैगोर को भारतीय दार्शनिक कांग्रेस का पहला

संस्कृत की समझ के बिना भारतीय दर्शन को नहीं समझा जा सकता : डॉ. आशा मुखर्जी

अध्यक्ष बनाया गया था। डॉ आशा मुखर्जी केअनुसार रविंद्रनाथ टैगोर ने दर्शन शास्त्र में प्रायोगिक प्रमाण पर कार्य किया था और वे मानती हैं कि उनका प्रयास सर्वकालिक और सार्वभौमिक है। टैगोर की सभी कृतियां कुरुक्षेत्र में कृष्ण और अर्जुन के संवाद पर आधारित थीं।

डॉ आशा मुखर्जी कहना था कि देश के अंग्रेज़ी औपनिवेशवादी काल में संस्कृत भाषा पर भी विदेशी भाषाओं का दबाव रहा और मैक्स म्यूलर तथा कीथ जैसे यूरोपीय लेखकों ने अपनी भाषाओं में इनके अपने अर्थों में अनुवाद किए। संस्कृत की समझ के बिना भारतीय दर्शन को नहीं समझा जा सकता कार्यशाला में प्रो एस पनीरसेलवम ने आधुनिक भारतीय विचार के विभिन्न आयामों को प्रस्तुत किया। तीसरे दिन दूसरे सत्र में प्रो गोदावरेश मिश्र ने गौतम बुद्ध को लेकर शंकराचार्य के मतों को प्रस्तुत किया।

दैनिक भास्कर भोपाल, शुक्रवार 28 सितंबर, 2018 | 18

कार्यशाला • सांची बौद्ध विश्वविद्यालय में 5 दिवसीय कार्यशाला का तीसरा दिन, विद्वानों ने रखी अपनी-अपनी बातें

वेदों में है मंदिर के आर्किटेक का सटीक वर्णनः डॉ. अली

भास्कर संवाददाता | रायसेन

हजारों साल पहले से मंदिरों के निर्माण में आर्किटेक्ट का उपयोग हो रहा है। इतना ही नहीं आर्किटेक्ट में एक सटीक गणितीय हिसाब, ज्यामिति और तर्क का पूरा ध्यान रखा जाता था। नींव से शिखर तक एक-एक इंच का नाप को ध्यान में रखकर ही मंदिर बनाए जाते थे। ये सब विष्णु धर्मोतर पुराण में लिखा है। यही कारण है कि सालों पहले बने मंदिर आज भी पूरी तरह से सुरक्षित स्थिति में खड़े है। प्राचीन मंदिर निर्माण की वास्तुकला का वर्णन इतिहासकार और भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद के सदस्य

सांची बौद्ध विश्वविद्यालय में चल रही कार्यशाला में अपनी बात रखते विद्धान।

डॉ. रहमान अली ने पीपीटी प्रेजेंटेशन के माध्यम से लोगों को समझाने का प्रयास किया। इतिहासकार डॉ. अली ने बताया कि वेदों में मंदिरों के प्लान, उनके एलिवेशन (क्षितिज) और उनकी सजावट (सौंदर्य) के बारे में संपूर्ण वर्णन किया गया है। उनका कहना था कि वेद में मंदिरों के स्तंभ, हॉल, वृत्तों के बारे में इतना सटीक जिक्र किया गया है कि मानो को दैवीय ज्ञान के आधार पर उस दौर के मनुष्यों को मंदिर निर्माण सिखा रहा है।

नागर शैली में निर्मित किए गए मंदिरों के चित्र प्रदर्शित कर बताया कि ऐसे मंदिरों की सजावट के लिए चारों दिशाओं में शिव परिवार के सदस्यों के चित्र होते हैं। शिखर की तुलना कैलाश पर्वत के रूप में की जाती है।

टैगोर एक महान दार्शनिक भी थेः कार्यशाला के तीसरे दिवस शांतिनिकेतन की डॉ. आशा मुखर्जी ने नोबल पुरस्कार विजेता गुरु रविंद्रनाथ टैगोर की धर्म की अवधारणा को प्रस्तुत किया। डॉ. मुखर्जी ने बताया कि लोग गुरु रविंद्रनाथ टैगोर को मात्र एक महान कवि ही मानते हैं। जबकि वो एक कवि के साथ-साथ दार्शनिक थे, संगीतज्ञ थे और एक चित्रकार भी थे। टैगोर की अवधारणा थी कि भारत में भारतीय दर्शन परिषद नामक एक केंद्रीय संस्था हो, जो कि समस्त भारतीय दर्शन के क्षेत्र में कार्य करे और उसे संकलित करने का कार्य करे।

इन विद्वानों ने भी रखी अपनी बातः कार्यशाला में प्रो. एस पनीरसेलवम ने आधुनिक भारतीय विचार के विभिन्न आयामों को प्रस्तुत किया। उन्होंने 20वीं शताब्दी के समसामयिक भारतीय दर्शन को उल्लेखित किया।

दैनिक भास्कर

रायसेन Page 1

कार्यशाला • सांची बौद्ध विश्वविद्यालय में 5 दिवसीय कार्यशाला का तीसरा दिन, विद्वानों ने रखी अपनी-अपनी बात

वेदों में है मंदिर के आर्किटेक का सटीक वर्णन: डॉ. अली

भास्कर संवाददाता | रायसेन

हजारों साल पहले से मंदिरों के निर्माण में आर्किटेक्ट का उपयोग हो रहा है। इतना ही नहीं आर्किटेक्ट में एक सटीक ज्योमेट्रिक डिजाइन, सिमेट्री और नक्शे का पूरा ध्यान रखा जाता था। नींव से शिखर तक एक-एक इंच का नाप जो ध्यान में रखकर ही मंदिर बनाए जाते थे। ये सब विष्णु धर्मोत्तर पुराण में लिखा है। यही कारण है कि सालों पहले बने मंदिर आज भी पूरी तरह से सुरक्षित स्थिति में खड़े हैं। प्राचीन मंदिर निर्माण की वास्तुकला का वर्णन इतिहासकार और भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद के सदस्य डॉ. रहमान अली ने पॉवरपॉइंट प्रेजेंटेशन के माध्यम से लोगों को समझाने का प्रयास किया।

सांची बौद्ध विश्वविद्यालय में चल रही कार्यशाला में अपनी बात रखते विद्वान।

इतिहासकार डॉ. अली ने बताया कि वेदों में मंदिरों के नक्शा, उनके एलिवेशन (शिखर) और उनकी बनावट (शैली) के बारे में संपूर्ण वर्णन किया गया है। उनका कहना था कि वेद में मंदिरों के स्तंभ, शिखर, मूर्ति के बारे में इतना सटीक जिक्र किया गया है कि [illegible] वैदिक ज्ञान के आधार पर उस दौर के मजदूरों को मंदिर निर्माण सिखाया गया है। उन्होंने नागर शैली में निर्मित विभिन्न मंदिरों के चित्र दर्शाते हुए बताया कि ऐसे मंदिरों की बनावट के लिए [illegible] दिशाओं में स्थित [illegible] होती है। शिखर की तुलना [illegible] की जाती है।

टैगोर एक महान दार्शनिक भी थे: कार्यशाला के तीसरे दिवस अतिथि विद्वान प्रो. डॉ. आशा मुखर्जी ने नोबल पुरस्कार विजेता गुरु रविन्द्रनाथ टैगोर की भारतीय दर्शन को अवदान को प्रस्तुत किया। डॉ. मुखर्जी ने बताया कि लोग गुरु रविन्द्रनाथ टैगोर को मात्र एक महान कवि ही मानते हैं जबकि वो एक कवि के साथ-साथ दार्शनिक थे, संगीतज्ञ थे और एक चित्रकार भी थे। टैगोर की अवधारणा थी कि भारत में भारतीय दर्शन परिषद नामक एक केंद्रीय संस्था हो, जो कि समस्त भारतीय दर्शन के क्षेत्र में कार्य को और उसे संकलित करने का कार्य करे।

इन विद्वानों ने भी रखी अपनी बात: कार्यशाला में प्रो. एस पनीरसेल्वम ने आधुनिक भारतीय चिंतन के विभिन्न आयामों को प्रस्तुत किया। उन्होंने 20वीं शताब्दी के समसामयिक भारतीय दर्शन को उल्लेखित किया। इसके अलावा प्रो. गोडबोले, डॉ. पनीरसेल्वम, [illegible] प्रो. एस कृष्णन, प्रो. डीपी चट्टोपाध्याय ने भी अपना व्याख्यान दिया।

विश्वस्य वृत्तान्तं

आधुनिकभारतीयदर्शने रविन्द्रनाथस्य अवदानम्

भारते दार्शनिक परंपरा प्राचीना, विविधा च परं टागोरस्य पुस्तकेषु मानवीजीवने सर्वेषां दार्शनिकमार्गाणां समावेशनं दृश्यते। संस्कृतं विना, भाषायाः अवबोधनेन विना भारतीयधर्मस्य दर्शनस्य अवबोधनमपि न संभवम्।

रविन्द्रनाथः न केवलं नोबलपुरस्कारविजेता साहित्यिकासीत् अपितु महान् दार्शनिकः च। भारतीयदर्शन परिषदः प्रथमः अध्यक्षः रविन्द्रनाथः आधुनिकभारते प्राचीनदर्शन तत्त्वानां प्रायोगिकप्रमाणोपरि विशेषगुरुत्वं प्रदत्तवान्।

(विश्वस्य वृत्तान्तम्) रायसेन। साञ्ची विश्वविद्यालये कार्यशालायाः तृतीयदिवसे विशेष निबन्धोपस्थापनकाले प्रो. आशा मुखर्जी रविन्द्र नाथस्य दृष्टिकोणमाश्रित्य भारतीयदर्शने नवीनता विषये सविशेषं तथ्यं प्रदत्तवती। प्रो. आशा मुखर्जी उवाच यत् गीतायां कुरुक्षेत्रस्य युद्धकाले कृष्णार्जुनयोः मध्ये दार्शनिकतत्त्वानां भावानां च आदानप्रदाने भारतीय तार्किक कर्मज्ञानमपि प्रकाशित यस्योपरि रविन्द्रनाथ टागोरस्य कृतयः च आश्रिताः। रविन्द्रनाथः न केवलं नोबलपुरस्कारविजेता साहित्यिकासीत् अपितु महान् दार्शनिकः च। भारतीयदर्शन परिषदः प्रथमः अध्यक्षः रविन्द्र नाथः आधुनिकभारते प्राचीनदर्शनतत्त्वानां प्रायोगिकप्रमाणोपरि विशेषगुरुत्वं प्रदत्तवान्। डॉ. आशा मखर्जी उक्तवान् यत् भारते दार्शनिक परंपरा प्राचीना, विविधा च परं टागोरस्य पुस्तकेषु मानवीजीवने सर्वेषां दार्शनिकमार्गाणां समावेशनं दृश्यते।

संस्कृतं विना, भाषायाः अवबोधनेन विना भारतीयधर्मस्य दर्शनस्य अवबोधनमपि न संभवम्। डॉ. मुखर्जी एतत् अपि उक्तवती यत् हिन्दूधर्मे शाक्त-शैव-गाणपत्य वैष्णवप्रथाः, बौद्ध-जैन शिखधर्माणामभ्युदयेनापि सनातन परिचयः अद्यापि अक्षुण्णः विद्यते इति।

नवदुनिया

कार्यशाला सांची बौद्ध भारतीय ज्ञान अध्ययन विवि में पांच दिनी कार्यशाला में डॉ.रहमान अली ने कहा-

वेदों में है मंदिरों के आर्किटेक्ट का सटीक वर्णन

रायसेन। नवदुनिया प्रतिनिधि

सांची बौद्ध भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में आयोजित पांच दिवसीय कार्यशाला आधुनिक परिप्रेक्ष्य में भारतीय दर्शन का लेखन विषय पर तीसरे दिन कई गहन विषयों पर चिंतन किया गया। इतिहासकार और भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद के सदस्य डॉ.रहमान अली ने भारतीय मंदिरों की वास्तुकला की उत्पत्ति और विकास पर चर्चा करते हुए बताया कि वेदों में मंदिरों के प्लानए उनके एलिवेशन, क्षितिजद्ध और उनकी सजावट, सौंदर्यीद्ध के बारे में संपूर्ण वर्णन किया गया है। उनका कहना था कि वेद में मंदिरों के स्तंभ, हॉल, वृत्तों के बारे में इतना सटीक किया गया है। ऐसा प्रतीत होता है कि दैवीय ज्ञान के आधार पर उस दौर के मनुष्यों को मंदिर निर्माण सिखा रहा है। डॉ रहमान अली ने देश के 32 मंदिरों के चित्रों को प्रदर्शित कर बताया कि उनकी वास्तुकला और निर्माण में किस प्रकार की समानताएं थीं। डॉ अली ने बताया कि इनके आर्किटेक्ट में एक सटीक गणितीय हिसाब, ज्यामिती और तर्क दिखाई पड़ता है। उनका कहना था कि नींव से शिखर तक एक एक इंच का नाप वर्णित किया गया है। ये सब विष्णु धर्मोत्तर पुराण में लिखा है। उन्होंने बताया कि नागर शैली के मंदिरों की सजावट के लिए चारों दिशाओं में शिव परिवार के सदस्यों के चित्र होते हैं। शिखर की तुलना कैलाश पर्वत के रूप में की जाती है।

तीसरे दिवस शांतिनिकेतन की डॉ.आशा मुखर्जी ने नोबल पुरस्कार विजेता गुरु रविंद्रनाथ टैगोर की धर्म की अवधारणा को प्रस्तुत किया। डॉ मुखर्जी ने बताया कि टैगोर ने अपनी किताब में मानवतावाद के दर्शन को प्रस्तुत किया। उनके अनुसार टैगोर ने जिस मानवतावाद को अपनी पुस्तक से प्रस्तुत किया है वो अद्वैत वेदांत दर्शन के करीब है। टैगोर कहते थे, जैसी ही मैं ईश्वर से अलग हुआ, ईश्वर की आराधना के लिए स्वतंत्र हो गया। डॉ आशा ने बताया कि स्वामी विवेकानंद भी इससे प्रभावित थे।

रायसेन। सांची बौद्ध विश्वविद्यालय में पांच दिवसीय कार्यशाला का तीसरा दिन।

समय के साथ बदल रहा है दर्शन

इसी सत्र में प्रो. एस पनीरसेलवम ने आधुनिक भारतीय विचार के विभिन्न आयामों को प्रस्तुत किया। उन्होंने 20वीं शताब्दी के समसामायिक भारतीय दर्शन को उल्लेखित किया। डॉ पनीरसेलवम ने महात्मा गांधीए के सच्चिदानंद मूर्ति, रविंद्रनाथ टैगोर, के सी भट्टाचार्य, प्रो. दया कृष्णन, प्रो. डीपी चटोपाध्याय के द्वारा व्याख्यायित किए गए भारतीय दर्शन से लोगों को वाकिफ कराया। उन्होंने कहा कि समय बेहद तेजी से गति कर रहा है। इसी प्रकार से दर्शन भी प्रतिदिन बदल रहा है। उनका कहना था कि वर्तमान समय के अनुसार ही भारतीय दार्शिनों द्वारा प्रस्तुत किए गए दर्शनों को परखा जाना चाहिए। तीसरे दिन दूसरे सत्र में प्रो. गोदावरेश मिश्र ने गौतम बुद्ध को लेकर शंकराचार्य के मतों को प्रस्तुत किया। प्रो मिश्रा का कहना था कि बुद्ध ने यद्यपि वैदिक परंपरा से बहुत कुछ ग्रहण किया। लेकिन इसे प्रदर्शित नहीं किया और यही उनके बाद आने वाले बौद्ध दार्शनिकों ने किया। इससे भारतीय दर्शन को स्वभाविक नुकसान हुआ।

<u>प्रेस-विज्ञप्ति</u>

साहित्य के बगैर दर्शन को समझा ही नहीं जा सकता – प्रो. विजय बहादुर सिंह

- सांची विश्वविद्यालय में पांच दिवसीय कार्यशाला का चौथा दिवस
- "आज राज में नीति नहीं है धर्म में नीति नहीं है, सिर्फ राज ही राज बचा है"
- भारतीय दर्शन साहित्य के बगैर अधूरा है
- रामायण और महाभारत काल में दर्शन को साहित्य की मदद लेनी पड़ी थी
- मूल्यों को बचाने के लिए दर्शन को साहित्य की मदद लेनी पड़ती है
- डॉ रजनीश शुक्ल ने षड दर्शन पर प्रस्तुत किया चिंतन
- वर्तमान में भारतीय दर्शन में शास्त्रार्थ की परंपरा लुप्त होती जा रही है- डॉ शर्मा
- अंतिम दिवस मध्य प्रदेश की राज्यपाल होंगी कार्यक्रम की मुख्य अतिथि
- आधुनिक परिप्रेक्ष्य में भारतीय दर्शन का लेखन परियोजना का शुभारंभ करेंगी
- वन मंत्री श्री शेजवार और संस्कृति मंत्री श्री सुरेंद्र पटवा भी सम्मिलित होंगे

सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में आधुनिक परिप्रेक्ष्य में भारतीय दर्शन का लेखन विषय पर आयोजित पांच दिवसीय कार्यशाला के चौथे दिन हिंदी के जाने माने साहित्यकार और आलोचक प्रो. विजय बहादुर सिंह ने कहा कि साहित्य जब अपने शिखर पर पहुंचता है तो दर्शन हो जाता है। "साहित्य समीक्षा की आधार भूमियां " के विषय पर उन्होंने कहा कि मनुष्य चेतना से यंत्र की ओर जा रहा है। तुलसीदास, कबीरदास, सूरदास, जयशंकर प्रसाद, निराला और महादेवी वर्मा के नामों का वर्णन करते हुए उनका कहना था कि बगैर दर्शन के इन महान हस्तियों की कृतियों को समझा ही नहीं जा सकता।

प्रो. सिंह का कहना था कि दर्शन और जीवन का मूल्य ही गति है, गति ही सृष्टि है और सृष्टि की प्रकृति है निरंतर सृजित होना। वर्तमान दौर में चल रहे धर्म और राजनीति पर उन्होंने कहा कि आज के दौर में जिस धर्म की चर्चा की जा रही है वो धर्म नहीं बल्की राजनीति है। उनका कहना था कि अल्पकालीन राजनीति जब दीर्घकालीन जीवन का हिस्सा बन जाती है तो वो धर्म बन जाती है....इसी प्रकार से जब धर्म व्यवहार में आता है तो राजनीति बन जाता है। इस धर्म और राजनीति का उदाहरण उन्होंने महाकाव्य महाभारत से दिया। उनका कहना था कि आज राज में नीति नहीं है धर्म में नीति नहीं है, सिर्फ राज ही राज बचा है।

दर्शन और साहित्य के तालमेल के विषय में प्रो. विजय बहादुर सिंह का कहना था कि दर्शन को साहित्य की मदद लेनी पड़ती है और भारतीय दर्शन साहित्य के बगैर अधूरा है। महाकाव्यों रामायण और महाभारत के बारे में उन्होंने कहा कि उस काल में मूल्यों को बचाने के लिए दर्शन को साहित्य की मदद लेनी पड़ी जो कि दोनों ही महाकाव्यों के अध्ययन से स्पष्ट होता है यानी दर्शन के मूल्यों को बचाने के लिए साहित्य का सहारा लेना पड़ता है और साहित्य कभी भी हिंसा नहीं सिखाता।

धर्म के विषय पर उन्होंने आगे कहा कि धर्म की सर्वाधिक चिंता मनुष्य को है जो कि व्यर्थ है, जबकि जानवर और पक्षी और अन्य रचनाएं भी इसी सृष्टि का हिस्सा हैं लेकिन उन्हें धर्म की चिंता नहीं है। साहित्य समीक्षा पर उनका कहना था कि कलाकृति के उतपन्न होने के बाद ही आलोचक या समीक्षक पैदा होता है। किसी भी रचना या

कला के विषय में उनका कहना था कि रचनाकार दरअसल सृष्टा है। भारतीय दर्शन के विषय पर उन्होंने कहा कि जिज्ञासा और प्रश्न ही भारतीयता की बुनियादी पहचान हैं।

दूसरे सत्र में भारतीय दर्शन अनुसंधान परिषद के सदस्य सचिव डॉ रजनीश कुमार शुक्ला ने भी भारतीय दर्शन के षड दर्शन विषय पर गहन चिंतन प्रस्तुत किया। उनका कहना था कि औपनिवेशिक काल के पूर्व के लेखक भी आस्तिक-नास्तिक के विषय में एकमत नहीं थे।

तीसरे सत्र में प्रो. वेनीमाधव शास्त्री ने "अद्वैतिक विचारों के आधुनिक उदाहरण" विषय पर अपने विचार प्रकट किए। उनका कहना था कि मोक्ष की प्राप्ति के लिए कुछ साधन होते हैं। ब्रह्म, जीव, जगत और मोक्ष के विषय में उन्होंने विस्तार से बताया। उन्होंने बताया कि आध्यात्मिक मुक्ति के लिए किस प्रकार के साधन की आवश्यकता होगी। सागर केंद्रीय विश्वविद्यालय के डॉ. ए.डी शर्मा ने "मानवतावादी ज्ञान- विनिर्माण का अद्वैतमूलक पद्धतिशास्त्र" ने अपनी शोध को प्रस्तुत किया। उनका कहना था कि वर्तमान में भारतीय दर्शन में शास्त्रार्थ की परंपरा लुप्त होती जा रही है जिससे भारतीय दर्शन को बहुत नुकसान हो रहा है।

प्रो. शर्मा का कहना था कि कोई भी ज्ञान बुद्धि का सम्यक उद्यान नहीं है तो वह आधुनिकता का नहीं है। उनका कहना था कि आधुनिक मापदंडों को कैस भारतीय दर्शन पर लागू किया जाए यही सांची विवि द्वारा आयोजित की गई कार्यशाला का उद्देश्य है। उनके अनुसार आने वाले 200 वर्षों बाद दर्शन की धारा युक्तिगत विकास में होगी। चौथे दिवस अंतिम सत्र में प्रो. आर. सी सिन्हा और डॉ नितिन व्यास ने भी अपने शोध प्रस्तुत किए।

इस पांच दिवसीय कार्यशाला के अंतिम दिन समापन कार्यक्रम में मध्य प्रदेश की राज्यपाल श्रीमती आनंदीबेन पटेल सम्मिलित होंगी। वे इस कार्यक्रम की मुख्य अतिथि होंगी और "आधुनिक परिप्रेक्ष्य में भारतीय दर्शन का लेखन" पर आधारित परियोजना का शुभारंभ भई करेंगी। इस कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि मध्य प्रदेश के वन मंत्री श्री गौरीशंकर शेजवार और संस्कृति मंत्री श्री सुरेंद्र पटवा होंगे।

दैनिक भास्कर

भोपाल, शनिवार 29 सितंबर, 2018 | 20

कार्यशाला • सांची विश्वविद्यालय में पांच दिवसीय कार्यशाला का चौथा दिवस, विद्वानों ने रखी अपनी-अपनी बातें

साहित्य के बगैर दर्शन को समझा नहीं जा सकता : प्रो. सिंह

भास्कर संवाददाता | रायसेन

सांची बौद्ध भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में आयोजित राष्ट्रीय कार्यशाला में साहित्यकार और आलोचक प्रो. विजय बहादुर सिंह ने कहा कि दर्शन और जीवन का मूल्य ही गति है। गति ही सृष्टि है और सृष्टि की प्रकृति है निरंतर सृजित होना। आज के दौर में जिस धर्म की चर्चा की जा रही है वो धर्म नहीं बल्कि राजनीति है। उनका कहना था कि अल्पकालीन राजनीति जब दीर्घकालीन जीवन का हिस्सा बन जाती है तो वो धर्म बन जाती है। इसी प्रकार से जब धर्म व्यवहार में आता है तो राजनीति बन जाता है। इस धर्म और राजनीति का उदाहरण उन्होंने महाकाव्य महाभारत से

सांची बौद्ध विश्वविद्यालय में चल रही कार्यशाला में अपनी बात रखते प्रो. विजय बहादुर सिंह

दिया। उनका कहना था कि आज राज में नीति नहीं है धर्म में नीति नहीं है, सिर्फ राज ही राज बचा है।

सिंह ने कहा कि साहित्य जब अपने शिखर पर पहुंचता है तो दर्शन हो जाता है। उन्होंने कहा कि मनुष्य चेतना से यंत्र की ओर जा रहा है। तुलसीदास, कबीरदास, सूरदास, जयशंकर प्रसाद, निराला और महादेवी वर्मा के नामों का वर्णन करते हुए उनका कहना था कि बगैर दर्शन के इन महान हस्तियों की कृतियों को समझा ही नहीं जा सकता।

लुप्त हो रही है शास्त्रार्थ की परंपरा: कार्यशाला में प्रो. वेणीमाधव शास्त्री ने अद्वैतिक विचारों के आधुनिक उदाहरण विषय पर अपने विचार प्रकट किए। उनका कहना था कि मोक्ष की प्राप्ति के लिए कुछ साधन होते हैं। ब्रह्म, जीव, जगत और मोक्ष के विषय में उन्होंने विस्तार से बताया।

आज आएंगी राज्यपाल आनंदीबेन

कार्यशाला के अंतिम दिन शनिवार को समापन कार्यक्रम में प्रदेश की राज्यपाल आनंदीबेन पटेल सम्मिलित होंगी। वे इस कार्यक्रम की मुख्य अतिथि होंगी। आधुनिक परिप्रेक्ष्य में भारतीय दर्शन का लेखन पर आधारित परियोजना का शुभारंभ करेंगी। इस कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि प्रदेश के वन मंत्री गौरीशंकर शेजवार और संस्कृति मंत्री सुरेंद्र पटवा होंगे।

उन्होंने बताया कि आध्यात्मिक मुक्ति के लिए किस प्रकार के साधन की आवश्यकता होगी।

राष्ट्रीय हिन्दी मेल

भोपाल, शनिवार 29 सितंबर 2018

वर्तमान में धर्म पर चर्चा नहीं बल्कि राजनीति की जा रही है : प्रो. विजय बहादुर

रायसेन, 29 सितम्बर। शुक्रवार को सांची बौद्ध.भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में आधुनिक परिप्रेक्ष्य में भारतीय दर्शन का लेखन विषय पर आयोजित पांच दिवसीय कार्यशाला के चौथे दिन हिंदी के जाने माने साहित्यकार और आलोचक प्रो विजय बहादुर सिंह ने कहा कि साहित्य जब अपने शिखर पर पहुंचता है तो दर्शन हो जाता है। साहित्य समीक्षा की आधार भूमियां के विषय पर उन्होंने कहा कि मनुष्य चेतना से यंत्र की ओर जा रहा है। तुलसीदास, कबीरदास, सूरदास, जयशंकर प्रसाद, निराला और महादेवी वर्मा के नामों का वर्णन करते हुए उनका कहना था कि बगैर दर्शन के इन महान हस्तियों की कृतियों को समझा ही नहीं जा सकता। प्रो. सिंह का कहना था कि दर्शन और जीवन का मूल्य ही गति है, गति ही सृष्टि है और सृष्टि की प्रकृति है निरंतर सृजित होना। वर्तमान दौर में चल रहे धर्म और राजनीति पर उन्होंने कहा कि आज के दौर में जिस धर्म की चर्चा की जा रही है वो धर्म नहीं बल्की राजनीति है। उनका कहना था कि अल्पकालीन राजनीति जब दीर्घकालीन जीवन का हिस्सा बन जाती है तो वो धर्म बन जाती है। इसी प्रकार से जब धर्म व्यवहार में आता है तो राजनीति बन जाता है। इस धर्म और राजनीति का उदाहरण उन्होंने महाकाव्य महाभारत से दिया। उनका कहना था कि आज राज में नीति नहीं है धर्म में नीति नहीं है, सिर्फ राज ही राज बचा है। दूसरे सत्र में भारतीय दर्शन अनुसंधान परिषद के सदस्य सचिव डॉ रजनीश कुमार शुक्ला ने भी भारतीय दर्शन के षड दर्शन विषय पर गहन चिंतन प्रस्तुत किया। उनका कहना था कि औपनिवेशिक काल के पूर्व के लेखक भी आस्तिक.नास्तिक के विषय में एकमत नहीं थे। तीसरे सत्र में प्रो. वेनीमाधव शास्त्री ने अद्वैतिक विचारों के आधुनिक उदाहरण विषय पर अपने विचार प्रकट किए। उनका कहना था कि मोक्ष की प्राप्ति के लिए कुछ साधन होते हैं। ब्रह्मए जीव, जगत और मोक्ष के विषय में उन्होंने विस्तार से बताया। सागर केंद्रीय विश्वविद्यालय के डॉ ए डी शर्मा ने श्मानवतावादी ज्ञान. विनिर्माण का अद्वैतमूलक पद्धतिशास्त्र ने अपनी शोध को प्रस्तुत किया। अंतिम सत्र में प्रो आर सी सिन्हा और डॉ नितिन व्यास ने भी अपने शोध प्रस्तुत किए। आज कार्यशाला के अंतिम दिन समापन कार्यक्रम में मध्य प्रदेश की राज्यपाल श्रीमति आनंदीबेन पटेल मुख्य अतिथि के रूप में शामिल होंगी एवं कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में वन मंत्री डॉ.गौरीशंकर शेजवार और संस्कृति मंत्री सुरेंद्र पटवा होंगे।

नवदुनिया
भोपाल, शनिवार 29 सितंबर 2018

सांची बौद्ध अध्ययन विश्वविद्यालय में साहित्य समालोचक प्रो. विजय बहादुर सिंह का व्याख्यान

दर्शन समझने को साहित्य जरूरी

पांच दिवसीय कार्यशाला का चौथा दिवस

भोपाल। नवदुनिया रिपोर्टर

सांची बौद्ध भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में आधुनिक परिप्रेक्ष्य में भारतीय दर्शन का लेखन विषय पर आयोजित पांच दिवसीय कार्यशाला के चौथे दिन हिंदी के जाने माने साहित्यकार और आलोचक प्रो. विजय बहादुर सिंह ने कहा कि साहित्य जब अपने शिखर पर पहुंचता है तो दर्शन हो जाता है। 'साहित्य समीक्षा की आधार भूमियां' के विषय पर उन्होंने कहा कि मनुष्य चेतना से यंत्र की ओर जा रहा है। तुलसीदास, कबीरदास, सूरदास, जयशंकर प्रसाद, निराला और महादेवी वर्मा के नामों का वर्णन करते हुए उनका कहना था कि बगैर दर्शन के इन महान हस्तियों की कृतियों को समझा ही नहीं जा सकता।

प्रो. सिंह का कहना था कि दर्शन और जीवन का मूल्य ही गति है, गति ही सृष्टि है और सृष्टि की प्रकृति है निरंतर सृजित होना। वर्तमान दौर में चल रहे धर्म और राजनीति पर उन्होंने कहा कि आज के दौर में जिस धर्म की चर्चा की जा रही है वो धर्म नहीं बल्की राजनीति है। उनका कहना था कि अल्पकालीन राजनीति जब दीर्घकालीन जीवन का हिस्सा बन जाती है तो वो धर्म बन जाती है....इसी प्रकार से जब धर्म व्यवहार में आता है तो राजनीति बन जाता है। इस धर्म और राजनीति का उदाहरण उन्होंने महाकाव्य महाभारत से दिया। उनका कहना था कि आज राज में नीति नहीं है धर्म में नीति नहीं है, सिर्फ राज ही राज बचा है।

बौद्ध विवि में गुरुवार को व्याख्यान देते हुए प्रो.विजय बहादुर सिंह। स्वामी आत्मानंद को स्मृति चिह्न प्रदान करते हुए कुलपति।

दर्शन और साहित्य के तालमेल के विषय में प्रो. विजय बहादुर सिंह का कहना था कि दर्शन को साहित्य की मदद लेनी पड़ती है और भारतीय दर्शन साहित्य के बगैर अधूरा है। महाकाव्यों रामायण और महाभारत के बारे में उन्होंने कहा कि उस काल में मूल्यों को बचाने के लिए दर्शन को साहित्य की मदद लेनी पड़ी जो कि दोनों ही महाकाव्यों के अध्ययन से स्पष्ट होता है यानी दर्शन के मूल्यों को बचाने के लिए साहित्य का सहारा लेना पड़ता है और साहित्य कभी भी हिंसा नहीं सिखाता।

मोक्ष प्राप्ति के लिए कुछ साधन होते है, मुक्ति के लिए जरूरत

दूसरे सत्र में भारतीय दर्शन अनुसंधान परिषद के सदस्य सचिव डॉ. रजनीश कुमार शुक्ला ने भी भारतीय दर्शन के षड दर्शन विषय पर गहन चिंतन प्रस्तुत किया। उनका कहना था कि औपनिवेशिक काल के पूर्व के लेखक भी आस्तिक-नास्तिक के विषय में एकमत नहीं थे। तीसरे सत्र में प्रो. वेनीमाधव शास्त्री ने अद्वैतिक विचारों के आधुनिक उदाहरण विषय पर अपने विचार प्रकट किए। उनका कहना था कि मोक्ष की प्राप्ति के लिए कुछ साधन होते हैं। ब्रह्म, जीव, जगत और मोक्ष के विषय में उन्होंने विस्तार से बताया। उन्होंने बताया कि आध्यात्मिक मुक्ति के लिए किस प्रकार के साधन की आवश्यकता होगी। सागर केंद्रीय विश्वविद्यालय के डॉ. ए.डी शर्मा ने मानवतावादी ज्ञान- विनिर्माण का अद्वैतमूलक पद्धतिशास्त्र ने अपनी शोध को प्रस्तुत किया। उनका कहना था कि वर्तमान में भारतीय दर्शन में शास्त्रार्थ की परंपरा लुप्त होती जा रही है, जिससे भारतीय दर्शन को बहुत नुकसान हो रहा है।

धर्म के विषय पर उन्होंने आगे कहा कि धर्म की सर्वाधिक चिंता मनुष्य को है जो कि व्यर्थ है, जबकि जानवर और पक्षी और अन्य रचनाएं भी इसी सृष्टि का हिस्सा हैं लेकिन उन्हें धर्म की चिंता नहीं है। साहित्य समीक्षा पर उनका कहना था कि कलाकृति के उत्पन्न होने के बाद ही आलोचक या समीक्षक पैदा होता है। उनका कहना था कि रचनाकार दरअसल सृष्टा है।

राज्यपाल आज जाएंगी

इस पांच दिवसीय कार्यशाला के अंतिम दिन समापन कार्यक्रम में मध्य प्रदेश की राज्यपाल श्रीमती आनंदीबेन पटेल सम्मिलित होंगी। वे इस कार्यक्रम की मुख्य अतिथि होंगी और आधुनिक परिप्रेक्ष्य में भारतीय दर्शन का लेखन पर आधारित परियोजना का शुभारंभ भी करेंगी। इस कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि मध्य प्रदेश के वन मंत्री गौरीशंकर शेजवार और संस्कृति मंत्री सुरेंद्र पटवा होंगे। इसके पूर्व प्रो. शर्मा का कहना था कि कोई भी ज्ञान बुद्धि का सम्यक उद्यान नहीं है तो वह आधुनिकता का नहीं है। उनका कहना था कि आधुनिक मापदंडों को कैसे भारतीय दर्शन पर लागू किया जाए यही सांची विवि द्वारा आयोजित की गई कार्यशाला का उद्देश्य है। उनके अनुसार आने वाले 200 वर्षों बाद दर्शन की धारा युक्तिगत विकास में होगी। अंतिम सत्र में प्रो. आरसी सिन्हा और डॉ. नितिन व्यास ने भी अपने शोध प्रस्तुत किए।

पीपुल्स समाचार
भोपाल, शनिवार 29 सितंबर 2018 16

साहित्य के बगैर दर्शन को समझा ही नहीं जा सकता : प्रो. विजय बहादुर सिंह

यंग रिपोर्टर • आईएम भोपाल
iambhopalofficial@gmail.com

सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में आधुनिक परिप्रेक्ष्य में भारतीय दर्शन का लेखन विषय पर आयोजित पांच दिवसीय कार्यशाला के चौथे दिन हिंदी के जाने माने साहित्यकार और आलोचक प्रो. विजय बहादुर सिंह ने कहा कि साहित्य जब अपने शिखर पर पहुंचता है तो दर्शन हो जाता है। 'साहित्य समीक्षा की आधार भूमियां' के विषय पर उन्होंने कहा कि मनुष्य चेतना से यंत्र की ओर जा रहा है। तुलसीदास, कबीरदास,

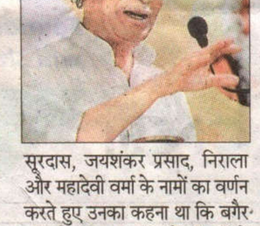

सूरदास, जयशंकर प्रसाद, निराला और महादेवी वर्मा के नामों का वर्णन करते हुए उनका कहना था कि बगैर दर्शन के इन महान हस्तियों की कृतियों को समझा ही नहीं जा सकता। दूसरे सत्र में भारतीय दर्शन अनुसंधान परिषद के सदस्य सचिव डॉ. रजनीश कुमार शुक्ला ने भी भारतीय दर्शन विषय पर गहन चिंतन प्रस्तुत किया। उनका कहना था कि औपनिवेशिक काल के पूर्व के लेखक भी आस्तिक-नास्तिक के विषय में एकमत नहीं थे। वहीं तीसरे सत्र में प्रो. वेनीमाधव शास्त्री ने 'अद्वैतिक विचारों के आधुनिक उदाहरण' विषय पर अपने विचार प्रकट किए। उनका कहना था कि मोक्ष की प्राप्ति के लिए कुछ साधन होते हैं। ब्रह्म, जीव, जगत और मोक्ष के विषय में उन्होंने विस्तार से बताया।

पत्रिका PLUS

साहित्य के बगैर दर्शन को समझा ही नहीं जा सकता

भोपाल ◆ सांची विश्वविद्यालय में भारतीय दर्शन का लेखन विषय पर आयोजित पांच दिवसीय कार्यशाला में शुक्रवार को साहित्यकार और आलोचक प्रो. विजय बहादुर सिंह ने कहा कि साहित्य जब अपने शिखर पर पहुंचता है तो दर्शन हो जाता है। 'साहित्य समीक्षा की आधार

भूमियां' के विषय पर उन्होंने कहा कि मनुष्य चेतना से यंत्र की ओर जा रहा है। तुलसीदास, कबीरदास, सूरदास, जयशंकर प्रसाद, निराला और महादेवी वर्मा के नामों का वर्णन करते हुए उनका कहना था कि बगैर दर्शन के इन महान हस्तियों की कृतियों को समझा ही नहीं जा सकता। सिंह ने कहा कि दर्शन और जीवन का मूल्य ही गति है, गति ही सृष्टि है और सृष्टि की प्रकृति है निरंतर सृजित होना।

दैनिक भास्कर रायसेन Page

कार्यशाला • सांची विश्वविद्यालय में पांच दिवसीय कार्यशाला का चौथा दिवस, विद्वानों ने रखी अपनी-अपनी बातें

साहित्य के बगैर दर्शन को समझा नहीं जा सकता: प्रो. सिंह

भास्कर संवाददाता | रायसेन

सांची बौद्ध भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में आयोजित राष्ट्रीय कार्यशाला में साहित्यकार और आलोचक प्रो. विजय बहादुर सिंह ने कहा कि दर्शन और जीवन का मूल्य ही गति है। गति ही सृष्टि है और सृष्टि की प्रकृति है निरंतर सृजित होना। आज के दौर में जिस धर्म की चर्चा की जा रही है वो धर्म नहीं बल्कि राजनीति है। उनका कहना था कि अल्पकालीन राजनीति जब दीर्घकालीन जीवन का हिस्सा बन जाती है तो वो धर्म बन जाती है। इसी प्रकार से जब धर्म व्यवहार में आता है तो राजनीति बन जाता है। इस धर्म और राजनीति का उदाहरण उन्होंने महाकाव्य महाभारत से दिया। उनका कहना था कि आज राज में नीति नहीं है धर्म में नीति नहीं है, सिर्फ राज ही राज बचा है।

सांची बौद्ध विश्वविद्यालय में चल रही कार्यशाला में अपनी बात रखते प्रो. विजय बहादुर सिंह

सिंह ने कहा कि साहित्य जब अपने शिखर पर पहुंचता है तो दर्शन हो जाता है। उन्होंने कहा कि मनुष्य चेतना से यंत्र की ओर जा रहा है। तुलसीदास, कबीरदास, सूरदास, जयशंकर प्रसाद, निराला और महादेवी वर्मा के नामों का वर्णन करते हुए उनका कहना था कि बगैर दर्शन के इन महान हस्तियों की कृतियों को समझा ही नहीं जा सकता।

लुप्त हो रही है शास्त्रार्थ की परंपरा: कार्यशाला में प्रो. वेणीमाधव शास्त्री ने अद्वैतिक विचारों के आधुनिक उदाहरण विषय पर अपने विचार प्रकट किए। उनका कहना था कि मोक्ष की प्राप्ति के लिए कुछ साधन होते हैं। ब्रह्म, जीव, जगत और मोक्ष के विषय में उन्होंने विस्तार से बताया। उन्होंने बताया कि आध्यात्मिक मुक्ति के लिए किस प्रकार के साधन की आवश्यकता होगी। सागर केंद्रीय विश्वविद्यालय के डॉ. एडी शर्मा ने मानवतावादी ज्ञान-विनिर्माण का अद्वेत मूलक पद्धति शास्त्र ने अपनी शोध को प्रस्तुत किया। उनका कहना था कि वर्तमान में भारतीय दर्शन में शास्त्रार्थ की परंपरा लुप्त होती जा रही है। जिससे भारतीय दर्शन को बहुत नुकसान हो रहा है। उनके अनुसार आने वाले 200 वर्षों के बाद दर्शन की धारा युक्तिगत विकास में होगी।

आज आएंगी राज्यपाल आनंदीबेन

कार्यशाला के अंतिम दिन शनिवार को समापन कार्यक्रम में प्रदेश की राज्यपाल आनंदीबेन पटेल सम्मिलित होंगी। वे इस कार्यक्रम की मुख्य अतिथि होंगी। आधुनिक परिप्रेक्ष्य में भारतीय दर्शन का लेखन पर आधारित परियोजना का शुभारंभ करेंगी। इस कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि प्रदेश के वन मंत्री गौरीशंकर शेजवार और संस्कृति मंत्री सुरेंद्र पटवा होंगे।

साहित्य के बगैर दर्शन को समझा ही नहीं जा सकता : प्रो. सिंह

सांची विश्वविद्यालय में पांच दिवसीय कार्यशाला का चौथा दिवस

जागरण, रायसेन

सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में आधुनिक परिप्रेक्ष्य में भारतीय दर्शन का लेखन विषय पर आयोजित पांच दिवसीय कार्यशाला के चौथे दिन हिंदी के जाने माने साहित्यकार और आलोचक प्रो. विजय बहादुर सिंह ने कहा कि साहित्य जब अपने शिखर पर पहुंचता है तो दर्शन हो जाता है। साहित्य समीक्षा की आधार भूमियां के विषय पर उन्होंने कहा कि मनुष्य चेतना से यंत्र की ओर जा रहा है। तुलसीदास, कबीरदास, सूरदास, जयशंकर प्रसाद, निराला और महादेवी वर्मा के नामों का वर्णन करते हुए उनका कहना था कि बगैर दर्शन के इन महान हस्तियों की कृतियों को समझा ही नहीं जा सकता। दूसरे सत्र में भारतीय दर्शन अनुसंधान परिषद के सदस्य सचिव डॉ. रजनीश कुमार शुक्ला ने भी भारतीय दर्शन के षड दर्शन विषय पर गहन चिंतन प्रस्तुत किया। उनका कहना था कि औपनिवेशिक काल के पूर्व के लेखक भी आस्तिक-नास्तिक के विषय में एकमत नहीं थे। तीसरे सत्र में प्रो. वेनीमाधव शास्त्री ने अद्वैतिक विचारों के आधुनिक उदाहरण विषय पर अपने विचार प्रकट किए। डॉ.एडी शर्मा ने मानवतावादी ज्ञान. विनिर्माण का अद्वैतमूलक पद्धतिशास्त्र ने अपनी शोध को प्रस्तुत किया। प्रो. शर्मा का कहना था कि कोई भी ज्ञान बुद्धि का सम्यक उद्यान नहीं है तो वह आधुनिकता का नहीं है।

पत्रिका

साहित्य के बगैर दर्शन को समझा नहीं जा सकता : प्रो. विजय

आज राज में नीति नहीं है, धर्म में नीति नहीं है, सिर्फ राज ही राज बचा है

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
patrika.com

रायसेन. सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में आधुनिक परिप्रेक्ष्य में भारतीय दर्शन का लेखन विषय पर आयोजित पांच दिवसीय कार्यशाला के चौथे दिन हिंदी के जाने माने साहित्यकार और आलोचक प्रो. विजय बहादुर सिंह ने कहा साहित्य जब अपने शिखर पर पहुंचता है तो दर्शन हो जाता है। साहित्य समीक्षा की आधार भूमियां, विषय पर उन्होंने कहा मनुष्य चेतना से यंत्र की ओर जा रहा है। तुलसीदास, कबीरदास, सूरदास, जयशंकर प्रसाद, निराला और महादेवी वर्मा के नामों का वर्णन करते हुए कहा बगैर दर्शन के इन महान हस्तियों की कृतियों को समझा ही नहीं जा सकता।

वर्तमान दौर में चल रहे धर्म और राजनीति पर उन्होंने कहा कि आज के दौर में जिस धर्म की चर्चा की जा रही है वो धर्म नहीं बल्की राजनीति है। उनका कहना था कि अल्पकालीन राजनीति जब दीर्घकालीन जीवन का हिस्सा बन जाती है तो वो धर्म बन जाती है। इसी प्रकार से जब धर्म व्यवहार में आता है तो राजनीति बन जाता है। इस धर्म और राजनीति का उदाहरण उन्होंने महाकाव्य महाभारत से दिया। उनका कहना था कि आज राज में नीति नहीं है, धर्म में नीति नहीं है, सिर्फ राज ही राज बचा है।

दर्शन और साहित्य के तालमेल के विषय में प्रो. विजय बहादुर सिंह का कहना था कि दर्शन को साहित्य की मदद लेनी पड़ती है और भारतीय दर्शन साहित्य के बगैर अधूरा है। धर्म के विषय पर उन्होंने कहा कि धर्म की सर्वाधिक चिंता मनुष्य को है जो कि व्यर्थ है, जबकि जानवर और पक्षी और अन्य रचनाएं भी इसी सृष्टि का हिस्सा हैं लेकिन उन्हें धर्म की चिंता नहीं है।

भारतीय दर्शन अनुसंधान परिषद के सदस्य सचिव डॉ रजनीश कुमार शुक्ला ने कहा कि औपनिवेशिक काल के पूर्व के लेखक भी आस्तिक-नास्तिक के विषय में एकमत नहीं थे। प्रो. वेनीमाधव शास्त्री ने अद्वैतिक विचारों के आधुनिक उदाहरण विषय पर विचार प्रकट किए। उनका कहना था मोक्ष की प्राप्ति के लिए कुछ साधन होते हैं। ब्रह्म, जीव, जगत और मोक्ष के विषय में उन्होंने विस्तार से बताया। प्रो. आरसी सिन्हा और डॉ नितिन व्यास ने भी अपने शोध प्रस्तुत किए।

आज राज्यपाल करेंगी समापन

पांच दिवसीय कार्यशाला के अंतिम दिन आज समापन कार्यक्रम में मध्य प्रदेश की राज्यपाल आनंदीबेन पटेल शामिल होंगी। वे इस कार्यक्रम की मुख्य अतिथि होंगी और आधुनिक परिप्रेक्ष्य में भारतीय दर्शन का लेखन पर आधारित परियोजना का शुभारंभ भी करेंगी। कार्यर म के विशिष्ट अतिथि वन मंत्री गौरीशंकर शेजवार और संस्कृति मंत्री श्री सुरेंद्र पटवा होंगे।

विश्वस्य वृत्तान्तं

वैराग्यम्, जिज्ञासा, विषादा: गीतायां भेदत्रयम्

सांची विश्वविद्यालये पंचदिवसीया कार्यशाला गतदिवसे योगशास्त्रस्य, गीतायाः दार्शनिक तत्वोपरि सविशेषं वर्णनं कृत्वा प्रवक्तारः एतत् प्रमाणयितुं सूचितवान् यत वैराग्येण साधू-रुपता, जिज्ञासाया सांसारिकश्रुतयः एवं विषादत्वात् मरणमिति योगशास्त्रात्मकी गीता वर्णयति। योगः आत्मदर्शनस्य मात्रं साधनम्।

(विश्वस्य वृत्तान्तम्) रायसेनम्। योगेन मूलावस्थाप्राप्तिः संभाव्यते। योगेन स्वाधिकारस्य प्रतिष्ठा न क्रियते। गीतायां कृष्णार्जुनयोः मध्ये विषादयोगाध्याये शारीरिकसुखतिरिच्य सात्विक भावनया आत्मसमर्पणं प्रति मार्गः प्रदत्तः।

सांची विश्वविद्यालये पंचदिवसीया कार्यशाला गतदिवसे योगशास्त्रस्य, गीतायाः दार्शनिक तत्वोपरि सविशेषं वर्णनं कृत्वा प्रवक्तारः एतत् प्रमाणयितुं सूचितवान् यत् वैराग्येण साधूरुपता, जिज्ञासाया सांसारिकश्रुतयः एवं विषादत्वात् मरणमिति योगशास्त्रात्मकी गीता वर्णयति। योगः आत्मदर्शनस्य मात्रं साधनम्। विषाद ग्रस्ताः मानवाः संसारात् मुक्तिं नेच्छन्ति। अपि तु संसारस्यानुभवं प्रति अज्ञानतां प्रकटयन्ति।

कार्यशालायां प्रो. विजय बहादूर सिंहः उक्तवान् यत् आधुनिककाले साहित्यस्य परिपक्वता हि दर्शनमुच्यते, दर्शनस्य लौकिकता एवं साहित्यिककला। ज्ञानेन साहित्यं, विवेकेन तु दर्शनं निगद्यते। चेतनातः यंत्रं प्रति, सूक्ष्मात् स्थूलं प्रति, दर्शनात् साहित्यं प्रति अनुगमनाय सांप्रतिक कालस्य विचारधारायां चापि परिवर्तनस्य महती आवश्यकता विद्यते। कार्ल मार्कस प्रणीत मुक्तिवाददर्शनमपि षड्दर्शनोपरि सनातनीयतत्वस्य अन्वेषणाय छात्रेषु सुयोगः निर्मापयितव्यः।

गीतायाः अध्ययनं योगशास्त्रम् आधारीकृत्यं सरलं – समीचीनं च – स्वामी श्री आत्मानन्दः

(विश्वस्य वृत्तान्तम्) रायसेन। भारतीयवेदान्त परम्परायां पाश्चात्यदर्शनस्य अभिन्नता अतिप्राचीना, महाभारतस्य अंशभूता श्रीमन् भगवद्गीता न केवलं कृष्णार्जुनसंवादे सीमिता अपि तु योगशास्त्रस्य, कर्म–भक्ति–ज्ञानादिकानां सम्मिश्रणात्मकस्य शास्त्रस्य परिचायिका। प्राच्य–पाश्चात्यवर्गयोः मध्ये योगस्य वेदान्तस्य प्रखर प्रचाराय कार्यशालायाः चतुर्थे दिवसे स्वामी सत्यानन्दस्य वक्तव्यं नूनं सांची वि.वि. परिसरं पावयति स्म।

गीतायां (योगशास्त्रे च) कर्मज्ञानयोगयोः पार्थक्यविषये यद्यपि विशदीक्रियते तत्र ब्रह्मविद्यायाः प्राधान्यमपि सर्वविदितम्। स्वामीजी उक्तवान् यत् आधुनिकीकरणं न मात्रं प्राचीनतत्वानां दूरीकरणम् अपि तु प्राचीनप्रचलिततत्वेषु भिन्नमार्गेषु नव्यता दर्शनम्। अतः भारतीयदर्शनं यत्र अतिप्राचीन, संपूर्णे जम्बूद्वीपे भारतीय सनातनधर्मस्य प्रतिस्थापनं संजातं तत्र पाश्चात्य दार्शनिकानां मतानि अपि भारतीय दर्शनाधारितानि इति स्वीकृतानि। वैदिक ग्रन्थेषु सनातनधर्मस्य मानकतत्वानां पुनरनुशीलनाय प्रयोगः वर्तते। जीवात्मा–परमात्म इत्यनयोः मध्ये सांसारिक सम्मोहस्य निवारणमपि योगशास्त्रेण साध्यम् इति स्वामीजी स्पष्टं कृतवान्। स्वामीनः मते ज्ञानेन विवेकस्य अभ्युदयः भवति। विवेकी एव योगेन, गीताया चित्तवृत्तिनिरोधनं च भविष्यति।

<u>प्रेस-विज्ञप्ति</u>

जातिवाद को शिक्षा के माध्यम से ही मिटाया जा सकता है- राज्यपाल आनंदीबेन पटेल

- सांची विश्वविद्यालय में आयोजित कार्यशाला का समापन
- विश्वविद्यालय के शिक्षकों एवं छात्रों को गांवों में जाकर बच्चों को पढ़ाना चाहिए- पटेल
- 8वीं से 10वीं तक के बच्चों को विश्वविद्यालयों और कारखानों का भ्रमण कराया जाए-पटेल
- देश को सव्यसाची अर्जुन अर्थात 'ऑलराउंडर' की ज़रूरत - आनंदीबेन पटेल
- राज्यपाल महोदया ने ग्राम बिलारा के बच्चों को बांटे फल
- सांची विश्वविद्यालय ने गोद लिया है ग्राम बिलारा
- आधुनिक परिप्रेक्ष्य में भारतीय दर्शन का लेखन विषय पर आयोजित थी कार्यशाला
- मध्य प्रदेश शासन ने उपलब्ध कराए हैं 10 करोड़ रुपए
- 10 वर्षों तक सतत् चलेगी यह परियोजना

सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में आधुनिक परिप्रेक्ष्य में भारतीय दर्शन का लेखन विषय पर आयोजित 5 दिवसीय कार्यशाला के अंतिम दिन समापन समारोह के मौके पर मध्य प्रदेश की राज्यपाल माननीया श्रीमति आनंदीबेन पटेल ने कहा कि देश में फैले जातिवाद और क्षेत्रवाद को मात्र शिक्षा के माध्यम से ही दूर किया जा सकता है। उनका कहना था कि विश्वविद्यालय और कॉलेज के शिक्षकों और छात्रों को चाहिए कि वो गांवों में जाएं और स्कूली बच्चों को पढ़ाएं, उन्हें शिक्षित करें।

राज्यपाल महोदया का कहना था कि मध्य प्रदेश के सभी स्कूलों के 8वीं से लेकर 10वीं तक के बच्चों को भी विश्वविद्यालयों और कारखानों का भ्रमण कराना चाहिए ताकि वे इससे प्रभावित हों और यहां तक पहुंचने को अपना लक्ष्य बना सकें। उनका कहना था कि छोटे बच्चों में नींव डालने के माध्यम से ही नई पीढ़ियों को सिखाया जा सकता है।

समापन समारोह में आज सांची विश्वविद्यालय द्वारा गोद लिए गए ग्राम बिलारा के बच्चों ने भी शिरकत की। राज्यपाल महोदया ने इन बच्चों को फल भेंट किए। राज्यपाल महोदया ने अपने उदबोधन के दौरान महाभारत के अभिमन्यु के कथन का भी ज़िक्र किया। उनका कहना था कि जिस प्रकार अभिमन्यु ने मां के पेट में ही युद्ध की कला सीखी थी, उस पर बाद के दौर में कई विदेशी वैज्ञानिकों ने शोध किए। इस को आधार मानते हुए हमारे देश में क्यों शोध नहीं की जाती। महाभारत के ही पात्र अर्जुन का वर्णन करते हुए राज्यपाल महोदया ने कहा कि जिस तरह दोनों हाथों से धनुष चलाने की कला जानने वाले अर्जुन को सव्यसाची कहा जाता है उसी प्रकार के सव्यसाची की आज ज़रूरत है।

सांची विश्वविद्यालय के कुलपति आचार्य डॉ यज्ञेश्वर एस. शास्त्री ने इस कार्यशाला के उद्देश्य के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि आधुनिक परिप्रेक्ष्य में भारतीय दर्शन के लेखन को सांची विश्वविद्यालय ने एक चुनौती के रूप में लिया है और यह 10 साल लंबा प्रोजेक्ट है। मध्य प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री ने इस कार्य के लिए सांची विश्वविद्यालय को 10 करोड़ रुपए की राशि प्रदान की है। इस प्रोजेक्ट को छोटे-छोटे मॉड्यूल (परियोजनाओं) के माध्यम से पूर्ण किया जाएगा।

आधुनिक दौर में जिस तरह की चुनौतियां भारतीय बल्कि वैश्विक समाज झेल रहा है। उसका हल किस प्रकार से भारतीय दर्शन में मौजूद है उससे दार्शनिकों के माध्यम से लोगों तक पहुंचाया जाएगा। कुलपति महोदय का कहना था कि इस कार्यशाला के दौरान प्रस्तुत सभी शोधों को संकलित कर प्रकाशित किया जाएगा और इसके लिए एक संपादकीय मंडल का गठन भी किया जाएगा।

समापन समारोह के अंत में विश्वविद्यालय के कुलसचिव श्री अदिति कुमार त्रिपाठी ने सभी अतिथियों और उपस्थित जनों सहित मीडियाकर्मियों को धन्यवाद ज्ञापित किया। समापन समारोह के मौके पर रायसेन के अपर कलेक्टर श्री अमनवीर सिंह वैश्य, डिप्टी कलेक्टर श्रीमति मोहिनी शर्मा और रायसेन के पुलिस अधीक्षक श्री जे.एस. राजपूत उपस्थित थे। समापन समारोह के पहले प्रात: 10 बजे आयोजित किए गए सत्रों में डॉ उमराव सिंह बिष्ट ने **"स्वधर्म की अवधारणा"** को प्रस्तुत किया। डॉ बिष्ट का कहना था कि स्वधर्म से ही व्यक्ति स्वयं अनुशासित हो सकता है। भारतीय दर्शन में मौजूद विभिन्न उदाहरणों से उन्होंने अपने तर्कों को प्रस्तुत किया। दूसरे सत्र में डॉ. सुशिम दुबे ने **"पुरुषार्थ के अंतर्गत धर्मशास्त्र और अर्थशास्त्र"** की अवधारणा को प्रस्तुत किया।

DB POST | 30 SEPTEMBER | 2018

Sanchi University workshop on writing Indian philosophy from modern perspective

'Temple design a product of religion, philosophy'

Many Rigveda hymns had mirrored the advancement of architecture in India

Antriksh Kar Singh @dbpostnews

THE PLANS

- **According to** the architectural plan of the buildings, the pillars, called skambhas, were the main support.
- **The building** was measured out on dhammane and supported on pillars.
- **Three-pillar** foundation gives the idea of a valuated, or conical, roof.

VASTU PURUSH MANDALA

- **Temple architecture** was also discussed by Stella Kramrish, based on the theory of Vastu Purush Mandala, which is the basic concept of all architectural forms of Hindus.
- **The site** plan, the ground plan, the horizontal and vertical sections are regulated by its norms.

Bhopal: "Indian temple architecture is a product of religion and philosophy," said Professor Rahman Ali, member of the Indian Council of Historical Research (ICHR) during a paper presentation two days ago.

The presentation was held during a workshop at Sanchi University of Buddhist-Indic Studies on writing Indian philosophy from a modern perspective. The temple structure of sharira (body), its inner life and being and its heart and soul are based on Sanskrit texts belonging to two disciplines, Slipa Shastra (Science of Shilpa) and Agam Tantra (theological treatise and practical manuals of divine worship).

Many references to temple architecture can be found in Hindu texts, such as Vedic literature. Several hymns of Rigveda mirrored the advancement of architecture in society.

Vashista's desire to have three-storey dwellings is seen in Tri Dhatusaranam. Atharvaveda has sukta, indicating the foundations of a temple. Later, in smritis, the number of forts increased, but Manu enumerated only six types of durgas (forts), along with their merits and demerits. All the forts were constructed following norms laid down by texts.

Interestingly, Sir John Marshall (prominent archaeologist) had also categorised structures revealed by excavations at Mohenjodaro and Harappa into six heads, in which the public bath of religion, or secular characters and temples, were noticed.

पत्रिका PLUS भोपाल, रविवार 30 सितंबर 2018

सांची विश्वविद्यालय में आयोजित पांच दिवसीय कार्यशाला का समापन

विश्वविद्यालयों और कारखानों की विजिट कर स्कूल स्टूडेंट्स सेट करें अपने टारगेट: राज्यपाल

भोपाल ● सांची बौद्ध भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में आधुनिक परिप्रेक्ष्य में भारतीय दर्शन का लेखन विषय पर आयोजित पांच दिवसीय कार्यशाला के अंतिम दिन समापन समारोह के मौके पर मध्य प्रदेश की राज्यपाल आनंदीबेन पटेल ने कहा कि देश में फैले जातिवाद और क्षेत्रवाद को मात्र शिक्षा के माध्यम से ही दूर किया जा सकता है। उनका कहना था कि विश्वविद्यालय और कॉलेज के शिक्षकों और छात्रों को चाहिए कि वो गांवों में जाएं और स्कूली बच्चों को पढ़ाएं, उन्हें शिक्षित करें। उन्होंने कहा कि प्रदेश के सभी स्कूलों के 8वीं से लेकर 10वीं तक के बच्चों को भी विश्वविद्यालयों और कारखानों का भ्रमण कराना चाहिए ताकि वे इससे प्रभावित हों और यहां तक पहुंचने को अपना लक्ष्य बना सकें। उनका कहना था कि छोटे बच्चों में नींव डालने के माध्यम से ही नई पीढ़ियों को सिखाया जा सकता है।

उन्होंने कहा कि जिस प्रकार अभिमन्यु ने मां के पेट में ही युद्ध की कला सीखी थी, उस पर बाद के दौर में कई विदेशी वैज्ञानिकों ने शोध किए। इस को आधार मानते हुए हमारे देश में क्यों शोध नहीं की जाती। महाभारत के ही पात्र अर्जुन का वर्णन करते हुए कहा कि जिस तरह दोनों हाथों से धनुष चलाने की कला जानने वाले अर्जुन को सव्यसाची कहा जाता है उसी प्रकार के सव्यसाची की आज जरूरत है।

संपादकीय मंडल का होगा गठन

उन्होंने कहा कि आधुनिक दौर में जिस तरह की चुनौतियां भारतीय बल्कि वैश्विक समाज झेल रहा है। उसका हल किस प्रकार से भारतीय दर्शन में मौजूद है उससे दार्शनिकों के माध्यम से लोगों तक पहुंचाया जाएगा। इस कार्यशाला के दौरान प्रस्तुत सभी शोधों को संकलित कर प्रकाशित किया जाएगा और इसके लिए एक संपादकीय मंडल का गठन भी किया जाएगा। समारोह के पहले सत्र में डॉ. उमराव सिंह बिष्ट ने स्वधर्म की अवधारणा को प्रस्तुत किया।

www.freepressjournal.in FREE PRESS
BHOPAL | SUNDAY | SEPTEMBER 30, 2018

Casteism can be eradicated through education: Governor

OUR STAFF REPORTER
BHOPAL

Governor Anandiben Patel has said that casteism and regionalism that is rampant in the country could be encountered only with help of education.

Teachers and students of universities and colleges should go to the villages and educate children. Governor was addressing the closing ceremony of a workshop organized on 'Writings of Indian philosophy in modern perspective', at the University of Buddhist-Indian Knowledge Studies in Sanchi on Saturday.

Children studying in Class 8th to 10th of all schools should be taken on a tour of universities and factories, so that they get inspired and aspire to reach there. The Vice-Chancellor of Sanchi University Dr Yagyeshwar Shastri explained about the objectives of the workshop. He said that the Sanchi University has taken up the challenge of Writings of Indian Philosophy in the modern perspective. This is a 10-year project. The Chief Minister has presented an amount of Rs 10 crores to the University for this work. This project will be completed through small modules (projects). The Vice-Chancellor told that all research presented in the workshop will be compiled and published for which an editorial team will be constituted.

The Hitavada September 30 ■ 2018

'Teachers, students should help underprivileged'

■ Staff Reporter

GOVERNOR Anandiben Patel has said that teachers and students of universities and colleges should visit to different villages and teach children. Children studying in class VIIIth to Xth of all schools should be taken on a tour of universities and factories, so that they get inspired and aspire to reach there. Governor was addressing the closing ceremony of a workshop organised on 'Writings of Indian Philosophy in Modern Perspective', at the University of Buddhist-Indian Knowledge Studies in Sanchi on Saturday.

Vice Chancellor of Sanchi University Acharya Dr Yagyeshwar S Shastri told about the objectives of the workshop. He said that the Sanchi University has taken up the challenge of Writings of Indian Philosophy in the modern perspective. This is a 10-year project. Chief Minister has presented an amount of Rs 10 crore to the University for this work. This project will be completed through small modules (projects). The Vice Chancellor told that all research presented in the workshop will be compiled and published for which an editorial team will be constituted.

Governor Anandiben Patel addressing closing ceremony of a workshop organised on 'Writings of Indian Philosophy in Modern Perspective', at the University of Buddhist-Indian Knowledge Studies in Sanchi on Saturday.

नवदुनिया
भोपाल, रविवार 30 सितंबर 2018

सांची बौद्ध विश्वविद्यालय के कार्यक्रम में राज्यपाल आनंदी बेन की सलाह

'स्कूली बच्चों को कराएं विवि और कारखानों का भ्रमण'

मप्र शासन ने उपलब्ध कराए 'भारतीय दर्शन के लेखन' प्रोजेक्ट को 10 करोड़ रुपए

Literature इवेंट

भोपाल। नवदुनिया रिपोर्टर

सांची बौद्ध भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में आधुनिक परिप्रेक्ष्य में 'भारतीय दर्शन का लेखन' कार्यशाला के अंतिम दिन शनिवार को मुख्य अतिथि के रूप में राज्यपाल आनंदीबेन पटेल ने कहा कि देश में फैले जातिवाद और क्षेत्रवाद को मात्र शिक्षा के माध्यम से ही दूर किया जा सकता है। उनका कहना था कि विश्वविद्यालय और कॉलेज के शिक्षकों और छात्रों को चाहिए कि वो गांवों में जाएं और स्कूली बच्चों को पढ़ाएं, उन्हें शिक्षित करें। मप्र के सभी स्कूलों के बच्चों को भी विश्वविद्यालयों और कारखानों का भ्रमण कराना चाहिए, ताकि वे इससे प्रभावित हों और यहां तक पहुंचने को लक्ष्य बना सकें।

सांची बौद्ध विवि में आयोजित दर्शन कार्यशाला के शनिवार को समापन के अवसर पर राज्यपाल आनंदी बेन पटेल बच्ची से बात करते हुए।

गोद लिए बिलारा गांव के बच्चे कार्यक्रम में हुए शामिल

समापन समारोह में शनिवार को सांची विश्वविद्यालय द्वारा गोद लिए गए ग्राम बिलारा के बच्चों ने भी शिरकत की। राज्यपाल ने इन बच्चों को फल भेंट किए। इस दौरान उन्होंने महाभारत के अभिमन्यु के कथन का भी जिक्र किया। अभिमन्यु ने मां के पेट में ही युद्ध की कला सीखी थी, उस पर बाद के दौर में कई विदेशी वैज्ञानिकों ने शोध किए। इस को आधार मानते हुए हमारे देश में क्यों शोध नहीं की जाती। महाभारत के ही पात्र अर्जुन का वर्णन करते हुए कहा कि जिस तरह दोनों हाथों से धनुष चलाने की कला जानने वाले अर्जुन को सव्यसाची कहा जाता है, उसी प्रकार के सव्यसाची की आज जरूरत है।

प्रोजेक्ट को पूरा करना चुनौती

विश्वविद्यालय के कुलपति आचार्य डॉ. यज्ञेश्वर एस. शास्त्री ने कहा कि आधुनिक परिप्रेक्ष्य में भारतीय दर्शन के लेखन को विश्वविद्यालय ने एक चुनौती के रूप में लिया है। यह 10 साल लंबा प्रोजेक्ट है। मप्र के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने इस कार्य के लिए सांची विश्वविद्यालय को 10 करोड़ रुपए की राशि प्रदान की है। इस प्रोजेक्ट को छोटे-छोटे मॉड्यूल (परियोजनाओं) के माध्यम से पूर्ण किया जाएगा। आधुनिक दौर में जिस तरह की चुनौतियां भारतीय, बल्कि वैश्विक समाज झेल रहा है। उसका हल किस प्रकार से भारतीय दर्शन में मौजूद है।

स्वधर्म से ही अनुशासन आएगा

समापन समारोह के सुबह के सत्रों में डॉ. उमराव सिंह बिष्ट ने 'स्वधर्म की अवधारणा' को प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा स्वधर्म से ही व्यक्ति स्वयं अनुशासित हो सकता है। भारतीय दर्शन में मौजूद विभिन्न उदाहरणों से उन्होंने अपने तर्कों को प्रस्तुत किया। दूसरे सत्र में डॉ. सुशिम दुबे ने 'पुरुषार्थ के अंतर्गत धर्मशास्त्र और अर्थशास्त्र' की अवधारणा को प्रस्तुत किया। समापन समारोह के अंत में विश्वविद्यालय के कुलसचिव अदिति कुमार त्रिपाठी, रायसेन के अपर कलेक्टर अमनवीर सिंह बैश्य, डिप्टी कलेक्टर मोहिनी शर्मा और एसपी जेएस राजपूत उपस्थित थे।

राष्ट्रीय हिन्दी मेल भोपाल, रविवार 30 सितंबर 2018

शिक्षा के क्षेत्र में बड़े सुधार की जरूरत

वसुधैव कुटुम्बकन होने के बाद भी समाज जातिगत बंट रहा है : राज्यपाल

सांची विश्वविद्यालय में आयोजित 5 दिवसीय कार्यशाला का समापन

देश को सव्यसाची अर्जुन अर्थात ऑलराउंडर की ज़रूरत

रायसेन, 29 सितम्बर। शनिवार को सांची बौद्ध.भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में आधुनिक परिप्रेक्ष्य में भारतीय दर्शन का लेखन विषय पर आयोजित 5 दिवसीय कार्यशाला का समापन हुआ। समापन अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में प्रदेश की राज्यपाल श्रीमति आनंदीबेन पटेल ने कहा कि वसुधैव कुटुम्बक की बात कहने में अच्छी लगती है लेकिन वर्तमान में जिस तरह जातिगत तरीके से समाज बंट रहा है। जातिवाद और क्षेत्रवाद को मात्र शिक्षा के माध्यम से ही खत्म किया जा सकता है। शिक्षा के क्षेत्र में बड़ा बदलाव करने की जरूरत है जो बड़े बड़े विद्वान है उनको आगे आना चाहिए और छोटे छोटे रूप में अपनी कविता सहित अन्य साहित्य को लिखना चाहिए। जिससे समाज में बड़ा बदलाव आ सके। उन्होंने वर्तमान में परिवार विघटन पर चिंता जाहिर करते हुए कहा कि शिक्षित समाज यह क्या हो रहा है कि संयुक्त परिवार नहीं रहे है और लगातार वृद्ध आश्रमों की संख्या बढ़ रही है। हम समाज को क्या देना चाहते है वृद्ध आश्रमों की बढ़ती संख्या या समाज सेवा करना चाहते है अगर समाज सेवा करना चाहते है तो सबसे पहले अपने माता पिता की सेवा करें इसके बाद समाज की सेवा करें। उन्होंने कहा कि शिक्षा के क्षेत्र में एक ही सिलेबस कब तक चलेगा सिलेबस में सभी विषयों को शामिल करने की जरूरत है और इसके लिए भी बड़ी कार्यशाला होना चाहिए। जिससे सिलेबस में बदलाव किया जा सके। वहीं उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय और कॉलेज के शिक्षकों और छात्रों को चाहिए कि वो गांवों में जाएं और स्कूली बच्चों को पढ़ाएं उन्हें शिक्षित करें। उन्होंने कहा कि प्रदेश के सभी स्कूलों के 8वीं से लेकर 10वीं तक के बच्चों को भी विश्वविद्यालयों और कारखानों सहित अन्य स्थानों का लगातार भ्रमण कराना चाहिए ताकि वे इससे प्रभावित हों और यहां तक पहुंचने क अपना लक्ष्य तय कर सके। छोटे बच्चों में नींव डालने के माध्यम से ही नई पीढ़ियों को सिखाया जा सकता है। उन्होंने कहा कि जिस प्रकार अभिमन्यु ने मां के पेट में ही चक्रव्यूह को भेदने की कला सीखी थी, उस पर बाद के दौर में कई विदेशी वैज्ञानिकों ने शोध किए। इस को आधार मानते हुए हमारे देश में क्यों शोध नहीं किए जाते है। उन्होने दोनों हाथों से धनुष चलाने की कला जानने वाले अर्जुन को सव्यसाची कहा जाता है उसी प्रकार के सव्यसाचीं की आज ज़रूरत है। सांची विवि के कुलपति आचार्य डॉ यज्ञेश्वर एस शास्त्री ने इस कार्यशाला के उद्देश्य के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि आधुनिक परिप्रेक्ष्य में भारतीय दर्शन के लेखन को सांची विश्वविद्यालय ने एक चुनौती के रूप में लिया है और यह 10 साल लंबा प्रोजेक्ट है। मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री ने इस कार्य के लिए सांची विश्वविद्यालय को 10 करोड़ रुपए की राशि प्रदान की है। इस प्रोजेक्ट को छोटे.छोटे मॉड्यूल परियोजनाओं के माध्यम से पूर्ण किया जाएगा। आधुनिक दौर में जिस तरह की चुनौतियां भारतीय बल्कि वैश्विक समाज झेल रहा है। उसका हल किस प्रकार से भारतीय दर्शन में मौजूद है उससे दार्शनिकों के माध्यम से लोगों तक पहुंचाया जाएगा एवं कार्यक्रम में भारतीय दर्शनिक अनुसंधान परिषद के सचिव डॉ.रजीनश कुमार शुक्ला ने भी सम्बोधित किया एवं आभार व्यक्त कुल सचिव अदिती कुमार त्रिपाठी ने किया। वहीं समापन कार्यक्रम से पूर्व कार्यशाला के सत्रों में डॉ उमराव सिंह बिष्ट ने स्वधर्म की अवधारणा को प्रस्तुत किया। दूसरे सत्र में डॉ सुशिम दुबे ने पुरुषार्थ के अंतर्गत धर्मशास्त्र और अर्थशास्त्र की अवधारणा को प्रस्तुत किया।

8वीं से 10वीं तक के बच्चों को विश्वविद्यालयों और कारखानों का भ्रमण कराया जाए

भारतीयदर्शनमेव विश्वे जातिवादस्य निवारकम्

ग्रामीणशालासु विश्वविद्यालयव्याख्यातॄणां शिक्षा दानेन छात्रेषु शोधकार्याय प्रेरणा वर्धिता स्यात्

अस्मिन्नवसरे कुलपतिः महोदयः यज्ञेश्वर एस.शास्त्री न्यवेदयत् यत् मध्यप्रदेश राज्यस्य सर्वकारेण भारतीयदर्शनेतिहासस्य नवसर्जनार्थे दश कोटि रुप्यकाणि प्रदत्तानि। आगामी दशसु वर्षेषु विशेष परियोजनासु एतत् कर्म संप्स्यते

(विश्वस्य वृत्तान्तम्) रायसेन। सांची ग्रामस्य विश्वविद्यालयस्य प्रत्यक्षनेतृत्वे आयोजितायाः पंचदिवसीयकार्यशालायाः उद्यापनीपर्वणि महामान्या राज्यपाल आनन्दीबेन पटेल उक्तवती यत् समाजे जातिवादस्य, क्षेत्रवादस्य वा यः कुचक्रान्तः प्रसरति, तस्य निवारणाय उन्नतशिक्षा एवं सोपानं भवतु। आधुनिके व्यस्तमये जीवनें बाल्यवयसि छात्रेषु समाजनिर्माणं प्रति प्रेरणाप्रदानाय उच्चशिक्षाकेन्द्राणां कर्त्तव्यबोधः अवजानान्तु। राज्यपालः सूचितवती यत् शालाविद्यार्थिनां कृते संयंत्रेषु, विश्वविद्यालयेषु, यंत्रागारेषु शैक्षणिक परिदर्शनाय प्रबन्धनं करणीयं यत् बाल्यात् एव एते कोमलमतयः छात्राः शोधकार्यां प्रति अनुप्रेरिताः भविष्यन्ति।

वि.वि.प्रशासनेन संपोषितस्य खिलारा ग्रामस्य छात्राणां कृते फलानि संप्रेष्य आनन्दीबेन पटेलः अकथयत् यत् सांप्रतिके युगे अर्जुनवत् पराक्रमी सर्वगुणसंपन्नाः नागरिकाः निर्मापयितव्या।

अस्मिन्नवसरे कुलपतिः महोदयः यज्ञेश्वर एस.शास्त्री न्यवेदयत् यत् मध्यप्रदेश राज्यस्य सर्वकारेण भारतीयदर्शनेतिहासस्य नवसर्जनार्थे दश कोटि रुप्यकाणि प्रदत्तानि। आगामी दशसु वर्षेषु विशेष परियोजनासु एतत् कर्म संप्स्यते। भारतीयदर्शनस्य पुनः नवनिर्माणाय राष्ट्रस्य दार्शनिकानां सहायता आवश्यकी। विश्ववासिनां समस्यानां निवारणाय भारतीयदर्शनग्रन्थेषु गूढरहस्यानि विवृत्तानि। तेषां पुनर्लेखनेन समाजे श्रृंखलितजीवनस्य उपायाः निर्धारिताः स्युः। परियोजनान्तर्गते सर्वाणि शोधपत्राणि पृथक्-पृथक् रुपेण पुस्तकरुपेण प्रकाशितानि च भविष्यन्ति इति शास्त्रीमहाभागः सूचितवान्। सः स्पष्टं कृतवान् यत् एतदर्थे स्वतंत्रं संपादनमंडलमपि भविष्यति।

कार्यक्रमे विश्वविद्यालयस्य कुलसचिवः डॉ. अदिति कुमार त्रिपाठी अपि धन्यवादार्पणं कुर्वन् छात्रेषु श्रृंखलितजीवनस्य महत्त्वोपरि आलोकपातं कृतवान्। पंचदिवसीये कार्यक्रमे वार्ताहराणां, सर्वासां च अतिथिनां धन्यवादार्पणं कृतवान्। अस्मिन् काले रायसेन जनपदस्य अतिरिक्ताधिकारी अमनवीरसिंह वैश्यः, श्रीमति मोहिनी शर्मा, पुलिसप्रमुखः जे.एस.राजपूतादयः उपस्थिताः आसन्।

प्रातः कालस्य अन्तिमे सत्रे प्रो. उमराव सिंह विष्टः स्वधर्मस्य विषये सरलभावेन मनोमुग्धकरं तथ्य मुपस्थापितवान्। भारतीय दार्शनिकानुसंधानपरिषदः सदस्य सचिवः प्रो. शुक्ला, दिल्लीजनपदस्य सुशिम दुबे च उद्बोधनं दत्तवन्तौ। पंचदिवसीया कार्यशालाया यद्यपि समापिता परं दशवर्षात्मकप्रकल्पस्य अयमारंभः च संजातः इति वि.वि.जनसंपर्काधिकारी उक्तवान्।

आधुनिके व्यस्तमये जीवनें बाल्यवयसि छात्रेषु समाज निर्माणं प्रति प्रेरणाप्रदानाय उच्चशिक्षाकेन्द्राणां कर्त्तव्यबोधः अवजानान्तु। राज्यपालः सूचितवती यत् शालाविद्यार्थिनां कृते संयंत्रेषु, विश्वविद्यालयेषु, यंत्रागारेषु शैक्षणिक परिदर्शनाय प्रबन्धनं करणीयं यत् बाल्यात् एव एते कोमलमतयः छात्राः शोधकार्यां प्रति अनुप्रेरिताः भविष्यन्ति

रायसेन पत्रिका SUNDAY पत्रिका रविवार, 30 सितंबर, 20

पांच दिवसीय कार्यशाला का समापन

बच्चों को लक्ष्य की ओर ले जाने वाली शिक्षा पद्धति हो : राज्यपाल

बच्चों का रुझान भारतीय दर्शन की ओर हो चाहिए

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
patrika.com

रायसेन. शिक्षा व्यवस्था और नीति के साथ सिलेबस ऐसा होना चाहिए, जो बच्चों को लक्ष्य की ओर ले जाने मे सफल हो। बच्चों का रुझान भारतीय दर्शन की ओर हो। ऐसे सेमिनार का आयोजन होना चाहिए, जिनमें हर कक्षा के विद्यार्थी को भारतीय दार्शनिकों के ज्ञान का अध्ययन करने का सिलेबस तैयार किया जाए। यह बात प्रदेश की राज्यपाल अनंदी बेन ने शनिवार को सांची युनिवर्सिटी में आयोजित कार्यक्रम में कही।

सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में आधुनिक परिप्रेक्ष्य में भारतीय दर्शन का लेखन विषय पर आयोजित 5 दिवसीय कार्यशाला के अंतिम दिन समापन समारोह के मौके पर राज्यपाल ने कहा कि देश में फैले जातिवाद और क्षेत्रवाद को मात्र शिक्षा के माध्यम से ही दूर किया जा सकता है। उनका कहना था कि विश्वविद्यालय और कॉलेज के शिक्षकों और छात्रों को चाहिए कि वो गांवों में जाएं और स्कूली बच्चों को पढ़ाएं, उन्हें शिक्षित करें।

भारतीय दर्शन और मान्यताओं को देश में ही नकारे जाने पर चिंता जाहिर करते हुए उन्होंने कहा कि हमारे शिक्षा सिलेबस में यह कहीं नहीं हैं कि गर्भ में भी शिशु की शिक्षा हो सकती है। जबकि महाभारत काल में अभिमन्यु की गर्भस्थ शिक्षा को लेकर विदेशों में रिसर्च हुई और इसे सच पाया गया। अर्जुन का वर्णन करते हुए कहा कि जिस तरह दोनों हाथों से धनुष चलाने की कला जानने वाले अर्जुन को सव्यसाची कहा जाता है उसी प्रकार के सव्यसाची की आज ज़रूरत हैं।

रायसेन. स्कूली बच्चों को बुलाया मंच पर।

दीप प्रज्ज्वलित कर किया शुभारंभ।

पांच गांव गोद लें

राज्यपाल ने सीख दी कि हर यूनिवर्सिटी को पांच-पांच गांव गोद लेना चाहिए और उन गांवों का अपने स्तर पर विकास के साथ बच्चों की शिक्षा पर विशेष काम करना चाहिए। स्कूल के बच्चों को उच्च शिक्षा संस्थान, यूनिवर्सिटी, कारखाना आदि का भ्रमण कराना चाहिए। गरीब बस्ती दिखाना चाहिए, ताकि वो अपने को ऊपर ले जाने के लिए प्रेरित हों व समाज की अच्छी बुरी बातों को जान सके। बच्चों को पीड़ितों के बीच ले जाना चाहिए, न्यायालय ले जाना चाहिए। ताकि वो पीड़ितों की पीड़ा और अपराधियों के अंजाम को भी समझ सकें। उन्होंने कहा कि दर्शन के जिस नए ग्रंथ को तैयार करने के लिए यह कार्यशाला आयोजित की गई, उसमें बच्चों की शिक्षा का दर्शन भी शामिल होना चाहिए।

बच्चों से की बात

विश्वविद्यालय द्वारा गोद लिए गए ग्राम बिलारा के बच्चों ने भी समापन समारोह में शिरकत की। राज्यपाल ने इन बच्चों को फल भेंट किए और बच्चों से बात की। उनके साथ फोटो खिचाए।

10 करोड़ से तैयार होगा प्रोजेक्ट

सांची विश्वविद्यालय के कुलपति आचार्य डॉ. यज्ञेश्वर एस शास्त्री ने इस कार्यशाला के उद्देश्य के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि आधुनिक परिप्रेक्ष्य में भारतीय दर्शन के लेखन को सांची विश्वविद्यालय ने एक चुनौती के रूप में लिया है और यह 10 साल लंबा प्रोजेक्ट है। मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री ने इस कार्य के लिए सांची विश्वविद्यालय को 10 करोड़ रुपए की राशि प्रदान की है। इस प्रोजेक्ट को छोटे-छोटे मॉड्यूल परियोजनाओं के माध्यम से पूर्ण किया जाएगा। उन्होंने बताया कि कार्यशाला के दौरान प्रस्तुत सभी शोधों को संकलित कर प्रकाशित किया जाएगा। इसके लिए एक संपादकीय मंडल का गठन भी किया जाएगा।

जागरण : विदिशा : गंजबासौदा : रायसेन भोपाल, 30 सितंबर 2018

www.jagranmp.com/epaper **04**

जातिवाद को शिक्षा के माध्यम से ही मिटाया जा सकता है : राज्यपाल

आधुनिक परिप्रेक्ष्य में भारतीय दर्शन का लेखन विषय पर आयोजित कार्यशाला का समापन

जागरण, रायसेन

सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में आधुनिक परिप्रेक्ष्य में भारतीय दर्शन का लेखन विषय पर आयोजित 5 दिवसीय कार्यशाला के अंतिम दिन समापन समारोह के मौके पर मध्य प्रदेश की राज्यपाल श्रीमति आनंदीबेन पटेल ने कहा कि देश में फैले जातिवाद और क्षेत्रवाद को मात्र शिक्षा के माध्यम से ही दूर किया जा सकता है।

उनका कहना था कि विश्वविद्यालय और कॉलेज के शिक्षकों और छात्रों को चाहिए कि वो गांवों में जाएं और स्कूली बच्चों को पढ़ाएं, उन्हें शिक्षित करें। राज्यपाल महोदया का कहना था कि मध्य प्रदेश के सभी स्कूलों के 8वीं से लेकर 10वीं तक के बच्चों को भी विश्वविद्यालयों और कारखानों का भ्रमण कराना चाहिए ताकि वे इससे प्रभावित हों और यहां तक पहुंचने को अपना लक्ष्य बना सकें। छोटे बच्चों में नींव डालने के माध्यम से ही नई पीढ़ियों को सिखाया जा सकता है। समापन समारोह में आज सांची विश्वविद्यालय द्वारा गोद लिए गए ग्राम बिलारा के बच्चों ने भी शिरकत की। राज्यपाल महोदया ने इन बच्चों को फल भेंट किए। राज्यपाल महोदया ने अपने उदबोधन के दौरान महाभारत के अभिमन्यु के कथन का भी जिक्र किया। उनका कहना था कि जिस प्रकार अभिमन्यु ने मां के पेट में ही युद्ध की कला सीखी थी, उस पर बाद के दौर में कई विदेशी वैज्ञानिकों ने शोध किए। इस को आधार मानते हुए हमारे देश में क्यों शोध नहीं की जाती। महाभारत के ही पात्र अर्जुन का वर्णन करते हुए राज्यपाल महोदया ने कहा कि जिस तरह दोनों हाथों से धनुष चलाने की कला जानने वाले अर्जुन को सव्यसाची कहा जाता है उसी प्रकार के सव्यसाची की आज ज़रूरत है। सांची विश्वविद्यालय के कुलपति आचार्य डॉ यज्ञेश्वर एस शास्त्री ने इस कार्यशाला के उद्देश्य के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि आधुनिक परिप्रेक्ष्य में भारतीय दर्शन के लेखन को सांची विश्वविद्यालय ने एक चुनौती के रूप में लिया है और यह 10 साल लंबा प्रोजेक्ट है। प्रदेश के मुख्यमंत्री ने इस कार्य के लिए सांची विश्वविद्यालय को 10 करोड़ रुपए की राशि प्रदान की है। इस प्रोजेक्ट को छोटे-छोटे मॉड्यूल के माध्यम से पूर्ण किया जाएगा।

कुल सचिव ने ज्ञापित किया धन्यवाद

समापन समारोह के अंत में विश्वविद्यालय के कुलसचिव श्री अदिति कुमार त्रिपाठी ने सभी अतिथियों और उपस्थित जनों सहित मीडियाकर्मियों को धन्यवाद ज्ञापित किया। समापन समारोह के मौके पर जिपं सीईओ अमनवीर सिंह वैश्य, डिप्टी कलेक्टर श्रीमति मोहिनी शर्मा और रायसेन के पुलिस अधीक्षक जेएस राजपूत उपस्थित थे। समापन समारोह के पहले प्रातः 10 बजे आयोजित किए गए सत्रों में डॉ उमराव सिंह बिष्ट ने स्वधर्म की अवधारणा को प्रस्तुत किया। डॉ बिष्ट का कहना था कि स्वधर्म से ही व्यक्ति स्वयं अनुशासित हो सकता है। भारतीय दर्शन में मौजूद विभिन्न उदाहरणों से उन्होंने अपने तर्कों को प्रस्तुत किया। दूसरे सत्र में डॉ सुशिम दुबे ने पुरुषार्थ के अंतर्गत धर्मशास्त्र और अर्थशास्त्र की अवधारणा को प्रस्तुत किया।

हरिभूमि भोपाल,

जातिवाद को शिक्षा के माध्यम से ही मिटाया जा सकता है: राज्यपाल

राज्यपाल ने शिक्षा के महत्व पर डाला प्रकाश

हरिभूमि न्यूज ▶▶ भोपाल

सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में आधुनिक परिप्रेक्ष्य में भारतीय दर्शन का लेखन विषय पर आयोजित 5 दिवसीय कार्यशाला के अंतिम दिन समापन समारोह के मौके पर राज्यपाल आनंदीबेन पटेल ने कहा कि देश में फैले जातिवाद और क्षेत्रवाद को मात्र शिक्षा के माध्यम से ही दूर किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय और कॉलेज के शिक्षकों और छात्रों को चाहिए कि वो गांवों में जाएं और स्कूली बच्चों को पढ़ाएं, उन्हें शिक्षित करें। सभी स्कूलों के 8वीं से लेकर 10वीं तक के बच्चों को भी विश्वविद्यालयों और कारखानों का भ्रमण कराना चाहिए ताकि वे इससे प्रभावित हों और यहां तक पहुंचने को अपना लक्ष्य बना सकें। छोटे बच्चों में नींव डालने के माध्यम से ही नई पीढ़ियों को सिखाया जा सकता है।

हरिभूमि
विदिशा-रायसेन भूमि
भोपाल, रविवार 30 सितंबर 2018

सांची विवि में आधुनिक परिप्रेक्ष्य में भारतीय दर्शन कार्यशाला का समापन

शिक्षा से मिटेगा जातिवादः राज्यपाल

सांची विश्वविद्यालय पर चल रही आधुनिक परिप्रेक्ष्य में भारतीय दर्शन का लेखन कार्यशाला का समापन शनिवार राज्यपाल आनंदीबेन पटेल के मुख्य आतिथ्य में हुआ। कार्यशाला को संबोधित करते हुए उन्होंने कहाकि जातिवाद को मिटाने के लिए शिक्षा महत्वपूर्ण जरिया बन सकती है।

हरिभूमि न्यूज ▸▸ रायसेन

सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विवि में आधुनिक परिप्रेक्ष्य में भारतीय दर्शन का लेखन विषय पर 5 दिवसीय कार्यशाला के अंतिम दिन समापन समारोह के मौके पर राज्यपाल आनंदीबेन पटेल ने कहा कि देश में फैले जातिवाद और क्षेत्रवाद को मात्र शिक्षा के माध्यम से ही दूर किया जा सकता है। उन्होंने कहाकि विवि और कॉलेज के शिक्षकों और छात्रों को चाहिए कि वो गांवों में जाएं और स्कूली बच्चों को पढ़ाएं, उन्हें शिक्षित करें। राज्यपाल का कहना था कि प्रदेश के स्कूलों के 8वीं से लेकर 10वीं तक के बच्चों को भी विश्वविद्यालयों और कारखानों का भ्रमण कराना चाहिए ताकि वे इससे प्रभावित हों और यहां तक पहुंचने को अपना लक्ष्य बना सकें। छोटे बच्चों में नींव डालने के माध्यम से ही नई पीढ़ियों को सिखाया जा सकता है।

समापन समारोह के अंत में विवि के कुलसचिव अदिति कुमार त्रिपाठी ने अतिथियों और उपस्थित जनों सहित मीडियाकर्मियों को धन्यवाद ज्ञापित किया। समापन समारोह के मौके पर जिला पंचायत सीईओ अमनवीर सिंह बैस, एसपी जेएस राजपूत उपस्थित थे। समापन समारोह के पहले प्रातः 10 बजे आयोजित किए गए सत्रों में डॉ. उमराव सिंह बिष्ट ने स्वधर्म की अवधारणा को प्रस्तुत किया। डॉ बिष्ट का कहना था कि स्वधर्म से ही व्यक्ति स्वयं अनुशासित हो सकता है। भारतीय दर्शन में मौजूद विभिन्न उदाहरणों से उन्होंने अपने तर्कों को प्रस्तुत किया। दूसरे सत्र में डॉ सुशिम दुबे ने पुरुषार्थ के अंतर्गत धर्मशास्त्र और अर्थशास्त्र की अवधारणा को प्रस्तुत किया।

खास बातें

- आधुनिक परिप्रेक्ष्य में भारतीय दर्शन का लेखन विषय पर आयोजित थी कार्यशाला
- राज्यपाल ने कार्यशाला में ग्राम बिलारा के बच्चों को बांटे फल
- सांची विश्वविद्यालय ने गोद लिया है ग्राम बिलारा
- मध्यप्रदेश शासन ने उपलब्ध कराए हैं 10 करोड़ रुपए

राज्यपाल आनंदीबेन पटेल ने दीप प्रज्वलित कर कार्यशाला का शुभारंभ किया।

प्रोजेक्ट को लिया चुनौती के रूप में

सांची विश्वविद्यालय के कुलपति आचार्य डॉ. यज्ञेश्वर एस. शास्त्री ने इस कार्यशाला के उद्देश्य के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि आधुनिक परिप्रेक्ष्य में भारतीय दर्शन के लेखन को सांची विश्वविद्यालय ने एक चुनौती के रूप में लिया है और यह 10 साल लंबा प्रोजेक्ट है। मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री ने इस कार्य के लिए सांची विश्वविद्यालय को 10 करोड़ रुपए की राशि प्रदान की है। इस प्रोजेक्ट को छोटे-छोटे मॉड्यूल (परियोजनाओं) के माध्यम से पूर्ण किया जाएगा। उन्होंने कहाकि इस कार्यशाला के दौरान प्रस्तुत सभी शोधों को संकलित कर प्रकाशित किया जाएगा और इसके लिए एक संपादकीय मंडल का गठन भी किया जाएगा।

अभिमन्यू की युद्ध कला का दिया उदाहरण

समापन समारोह में शनिवार को सांची विश्वविद्यालय द्वारा गोद लिए गए ग्राम बिलारा के बच्चों ने भी शिरकत की। राज्यपाल ने इन बच्चों को फल भेंट किए। राज्यपाल ने अपने उद्बोधन के दौरान महाभारत के अभिमन्यू के कथन का भी जिक्र किया। उन्होंने कहाकि जिस प्रकार अभिमन्यु ने मां के पेट में ही युद्ध की कला सीखी थी, उस पर बाद के दौर में कई विदेशी वैज्ञानिकों ने शोध किए। इस को आधार मानते हुए हमारे देश में क्यों शोध नहीं की जाती। महाभारत के ही पात्र अर्जुन का वर्णन करते हुए राज्यपाल ने कहाकि जिस तरह दोनों हाथों से धनुष चलाने की कला जानने वाले अर्जुन को सव्यसाची कहा जाता है उसी प्रकार के सव्यसाची की आज जरूरत है।